बिड़ला सेंट्रल लायब्रेरी

॥ महाभारत—
गदा ~~शल्य~~-पर्व से
सुर्गा रोहण-पर्व ॥

इस से प्रथम भाग भारथ रजिस्टर नंम्बर में है।

लिपि मूल्य पृ० १५० x ३० पंक्तियाँ x ८ शब्द / २५० x ३/१६ रु०

= २३.रु० १० आ०

ता० २४-५-४८.   लिपिकर्ता पृथ्वीसिंह

बिड़ला सेंट्रल लायब्रेरी

॥ महाभारत —

गदा ~~शल्य~~ - पर्व से

सुर्गा रोहण - पर्व ॥

इस से प्रथम भाग भारथ रजिस्टर नम्बर में है।

लिपि मूल्य पृ० १५० x ३० पंक्तियाँ x ८ शब्द / २५० x ३/१६ ५०

= २३.५० १० आ०

ता० २४-६-४७. लिपिकर्ता पृथ्वीसिंह

— विषय सूची —

१. गदा पर्व (१०) — सांदू खेतसिंह — पृ. सं १ से ५

२. सूतक पर्व (११) — " " " पृ. सं ६ से १५

३. स्त्री पर्व (१२) — " " " पृ. सं १५ से २४

४. शांतिक पर्व (१३) — " " " पृ. सं २४ से ८७

५. अश्वमेध पर्व (१४) — " " " पृ. सं ८७ से १३०

६. आसासण पर्व (१५) — " " " पृ. सं १३० से १३८

७. मूसल पर्व (१६) — " " " पृ. सं १४० से १४५

८. प्रस्थान पर्व (१७) — " " " पृ. सं १४५ से १४६

९. सुर्ग रोहण पर्व (१८) — " " " पृ. सं १४७ से १५३

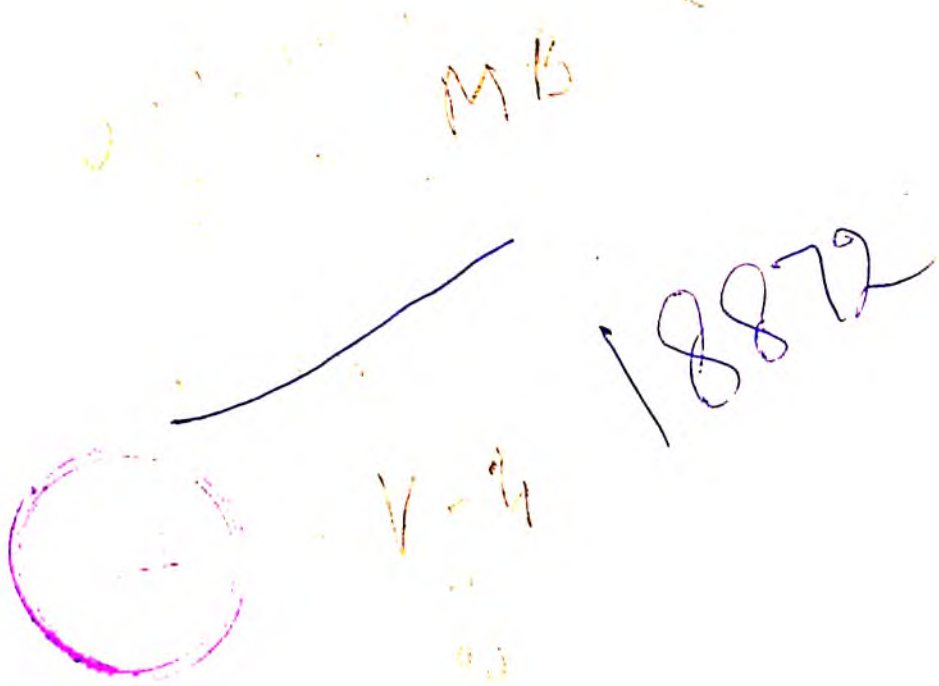

MB
18872
V-4

१.

~:॥ ~~[illegible]~~ गदा – पर्व ॥:~

दुहो:—

सुणि नारद मुखि कथ अमृत ॥ आया तहां अचिंत ॥
भारत भिड़ि पड़ि तो लिखे ॥ दरजो धन निज मित ॥१॥
दरजो धन बोलि विरद तद ॥ गुर गद खेल सुसांम ॥
मन करुणां रस धारियो ॥ अति ही अद्भुत ठाम ॥ २॥

कवित्त:—

दरजो धन सम कलह असंन्न पुछयो हित कारण ॥
इह कुर खेत अखेत ॥ कहो किहि भांति सकारण ॥
संकर रवण दुख हरण ॥ राम मुख जांम उचारे ॥
सध फरस धारि अजर ॥ खत्री पित वधर संधारे ॥
भरि सोणि सु भ्रह पंचग प्रसिध ॥ कीध तरपण खत
धरम ॥ इह धांम धरे ध्यानं अवर ॥ सो नर मह
पावत जनम ॥१॥ बोले अवतार विचारि ॥ वचन
बोले मुखां विसारद ॥ कलह गदा करणे ॥ वहे अथो
पंच मरद ॥ काप राजन जिम कठण ॥ बलि छिक
उदर बकोर ॥ पूरब पछम अगम ॥ जांणि जल
निध गहराई ॥ दुहुं तरफ जोध सा जोध हिल ॥
जदं पांण रिण ठांण धारि ॥ इल वेध अभा
अक सोया ॥ वयण सवेधा मुखि उचारि ॥२॥ प्रिथम
बांणी जुध प्रसिध करे नरनाथ निबाहर ॥ गदा
धाय अप्रमाण ॥ बिने आवाहत अजर ॥ पड़े धाव

ने हाव सीस तर भर जोधारां॥ वज्रो घर का वजर ॥ जांणि गिर तिणत अपारां॥ त्रिक उदरि समरि बन दुख बिखम ॥ दुरजो धन उरि अति अजर॥ बांहत मज गद सांहत सिर॥ मनु घड़ीया लक गजर॥३॥ जांणि इंद पहिलाद॥ समरि वागा सुर आसुर॥ मनु कुंभ कपि राव॥ भिड़े भारथ दुक्र कर॥ भैंना सुर बास वा॥ खसे अण बोह अरबाड़े॥ जांणि हणु उक्र से रांण सुत हूंत दिहाड़॥ सो मंत्र सरस वासव बिजत॥ कलि कारण सांमल थपो॥ इहि भांति भीम सजोध भिड़॥ साजो धन भीमह गयो॥४॥

:— छंद झंप तालो:— भीम साजो धनां हूंत जोहर मिले॥ जले तो दहि वागो मनां आकुले॥ चीत बोवि खिरा मोद प्रांणो धरा॥ संभरे डंक आंसक नागे सरा॥१॥ महर लाखा ग्रह आग जोगे मना॥ जुवरो फेर चिता रिसा जो धंन॥ अपसमे द्रौपदी पयादी अपड़े॥ निमंचां बंध ल्यायो सभा बिनड़े॥ चीर दुसासणा ताणीयो चीत वे॥ बोलि सा बैण साजो धनां विग्रव॥ सामचो फेर संभारि पै साहलो॥ पोल रव खोल जादू पती उजलो॥ आप साजो धनां जांणि ऊंचा सिरे॥ उफण भीम गोपाल चै आसरै॥ सावलां छलो पै दूहै ऊचा सिरा॥ कढीया वन नू धन ले ठाकुरा॥४॥ घोरव जाना वले चीत धारै॥ चणां॥ कोपीयो जांणि कालो दवे का सणा॥ वास वैराट रो फेर धोंला रवे॥ चीत री नोत ते वार जोहर धवे॥५॥ ठाकुरां आकरां बीच त्रिंदा रवे॥ सोस साजो धनां भीम ऊंचा सवे॥ खेत मां घातीया घाव ले अरव मे॥५॥ गदा वाजे खले बिने ही केहरो॥ आव धां आग जोगे मनां ऊपरि॥ भीम रै घाव साजोध रेणा मिले॥ रगा साजो धन भीम ही आकुले॥६॥ बिने सारी सदे हाद वाडु वले॥ कांम रा बीरिया

वाजीपा का बले॥ मैगलां म दो मंत जेम आलै मल॥
वीर सा धीर वागा विनै वापला॥८॥ क्रोध मे जोध
जूट खलै झंपति॥ माद वी उनती महा मैसा मती॥
जादवै राव जै नार मीलै जरू॥ गूढ रो धातियो दावम
दागरू॥९॥ मुनि मात्रेह धी आप चिते मठा॥ आदलै
द्रोपदी वैण पै अकठा॥ समरै वेज मारुत रै सिंघलै॥
अोधिड़े भीर वाहो गदा आकुले॥१०॥ राघ वी बांध सा
जोध जे ही रड़ां॥ गुड़े सा जोध सा क्रोध माम्ं गड़ां॥

:— कवित्त:— भीम भयंकर अजर सांभ आझा लाहि पूरण॥ घात
घाव दजोण थयो परतंगह ऊरण॥ वीर सूर सवी पाज॥
वाल अोरस अच्च गत॥ चित्रासर सब मिले॥ महा
विद जोध महा बल॥ गज पुरह छात आघात रिण॥
भांजि ऊरु दुहुं अजेरा॥ करि खेल कठण मारुत
क्रीयो जेठी छात आवि नरो॥१॥

:— छंद चोपई:— संकर खण रिण गिरत सजोधन॥ ऊठे निज आवध
शहि अस हंत्र॥ भीम चित्रगह भजि क्रोध अधाया॥
दारुण गति जदु पति दर साया॥१॥ असरण भगत
लखि आतुर॥ विध भाखत जेठी सम विसतर॥ मांचे
ही से आप दुस्ट मति॥ धरि गिरीयो भागी उर धूरित॥२॥

:— दुहो:— वाले दरजोधन लखि विकलं॥ कल मल चित निबाह॥
प्रश मती पधारिया॥ जल मोचत नर नाह॥१॥
सुण हर मुरव वाइक असह॥ दरजोधन दो सार॥
कसण विरवंमत सरख कलि॥ ऊठे भुजन सहार॥२॥

:— छंद बेअखरी :— दरजोधन चितव दो सारी॥ मुरव निज अव-
गुण कहत मुरारी॥ पूरण पुरख प्रथम मम परि
हर॥ हेतू तुम पंडव गिणिया हरि॥ मन सब वेधव
धारि महा मति॥ धुरता खसण लगाई धूरित॥ तै
लारना गाह जतन विथारै॥ मै रोलै अन्नु घर पर
जीरे॥२॥ तैं द्रोपद गाहि हल धर पाले॥ अरि
जन हाथां सफर उथाले॥ तै खंडी वन अगन

-वराड़े ॥ पाथ अचाग्यो विरुद पंवाड़े ॥३॥ तैं पंचाली
लाज रखी तन ॥ आप दिराया मो कुं असहन ॥ तैं फेर-
जन स्वारथ कीरे हित जुत ॥ धनी अरजोहण बांणे
धूरित ॥४॥ कुंन ते दग बाजी दुचतो कीरे ॥ संतन छैते
न जूता सग हर ॥ तैं जप धरत दाव दे तत छन ॥ ग्राहि
वहिणो वचायो चीर जण ॥५॥ अब मुहिदा वादि वाड़ि
अरखाड़ै ॥ पूरत मोच्यो भीम प्रवाड़े ॥ सागर पवन
गहन नन सोखे ॥ मिलो कछ्या कुल अगिनन मोखे ॥६॥
गो वो गण तुम मन हन गंजै ॥ भिड़ि तिम अजन करन
नन भंजै ॥ निज इह चिरत तुहारा सबनथ ॥ भिड़ि
पंडव जीता इह भारथ ॥७॥ भीसंम द्रोण करन जिसा
भिड़ भड़ ॥ ग्राहि वजरै क्रमणयां आयुड़ ॥ कथन
सजोधन सुणि अहिंकारो ॥ विध फिर भारवत समुख
विहारी ॥८॥ तुम साजो धन निज हित दुसतर ॥
बूडो भारथ सुप्रह निवाहर ॥ पापण क्रम चित
ना पीव चोरो ॥ दीजै दोस बोयां दो सारो ॥ मेरे
सजण दुजण न मांनो ॥ करि मिटियो जोगो रख
कहांनो ॥ सकति तणै निज आप सजोधन ॥
भागा इरू गदा ग्राहि भीमन ॥१०॥

दुहो : हर दरजोधन हित अहित ॥ भाखे वचन समेव ॥
कीधो सिवर पधारिवा ॥ गमण सदेवां देव ॥१॥
साजोधन गुडर समर ॥ पावै सांम अहेत ॥
खल भी रिध पायो अखिल ॥ जुजथिर रिकह बजेत ॥२॥
हरि पारथ कर कर ग्रहे ॥ रथ तजियो जदुराव ॥
चक्र धार भसमो भयो ॥ विणही अगिन प्रभाव ॥३॥
वानर धुज हरि पुर गयो ॥ हरि इछ्या सप्रमांण ॥
भारत पारथ जेत कीवि ॥ खल बीसे जो रांण ॥४॥
हरि कारक स्वारथ रिकिसंन ॥ गा हथणापुर चाहि ॥
अंच अबधो अंच मरू ॥ देवा ग्यांन निचाह ॥५॥
हरि कारज अकरण करण ॥ पंडव हेत प्रमांण ॥

न्यापा सेरव सांडवा ॥ फिर जो था जो रांज ॥ ५॥

कवित्त :- फिर संजै सम कह्यो ॥ रम्म दजोण दुरातम ॥ भीम
न्याय नृप करे ॥ मोह जीतो अगमा गम ॥ अब खोणी
गातमी ॥ हर दसम सुत उचारे ॥ बहे वेग पंचाल ॥
काज कीजै निरधारे ॥ इह किसन करण अकरण ॥
अगा ॥ अरण रिण नन उगहे ॥ हालिड़ क्रम सोसंम
रीखह ॥ हम मुसाफर गति रहे ॥१॥ गातव गण
नृप नयण ॥ स्रवण ग्राहि अति ऊस सोचित ॥ मिले ॥
लाइ महरधन ॥ करण विरतंत सबह पीत ॥ सुणे
जोध कथ अपरह ॥ सांम निज कांम विचारे ॥ अप्पा
फिर थाह सगह ॥ वपर खोणह संभारे ॥ अस्तु थांम
तांम साजो थना ॥ अप कहे नन खोजिये ॥ पर हंस
उग्र हण अपरा मो अप्प खेख केरो जो पै ॥२॥ जोस
नृपह काहि क्रचंन ॥ राव सुच नीर मंगाड़े ॥ कोपा
हत्थ अप्प खेख ॥ तेख भरो पे आरवाड़े ॥ दल खूटे
बल अतुल ॥ ग्राहे अस्तु थामों दुरा धार ॥ पंचालां
रह चवा ॥ चाल बंधो अवेरो वर ॥ निस चिंत
अंत चित हंत कां ॥ मातुल सम सारा खेरा ॥ उग्र-
हण खोण खोणी अपल ॥ दाव निहारत आपरे ॥३॥
अप्रत अठ इकठ कोपां नामो मंछर ॥ नर बंधत चित
अनम ॥ गास सुध अरध नारा खर ॥ परनह चंद
सेरा पंद ॥ सरद वरतत रित उत्तम ॥ सोमवार
निर धार ॥ देव पूजन तिथ एकं ॥ सेना सराज रजे
सरा कवि करते उद्दिम रहो ॥ भारथा स्रकरण भारथ
सुभल ॥ गदह परब पूरण थयो ॥४॥

-: इति गदा पर्व सम्पूर्णः :-

श्री

२.

~: सूतक-पर्व :~

दुहा :— अब सूतक पब कहण रो // कवि बल चरत निबाह //
जोमें निस बल दखियो // असुथामा नर नाह //१//

वारता :— दरजोधन सेना पातै को अपमेविस सकारै तोरव दीन्यौ // असुथामा भाग्या मांगी खलां का डेरा कैर वार लीन्यौ // पुर ही महार थी राजा कुं रिण समंद मां छोड़ि कै दिखणाद कै पंथ चाल्या // छोयौ कुंतो राजा को दसा देख पंव' पिता का मरण हार थी दुगणो तिगणो होक साल्या //

गाथा :— निंयांचा मंच नरे सो पल चरन हर चोरियो पिंड मुई // एका दस छोविने सो खोहण छात अपत ह अहंकारी //१//

कवित :— नस समीपै इह दसा महा महीरथी स सोचत //
दरजोधन दुख दसा // चीत चेतह जल मोचत //
क्रिपा चार कित अहंम // दुखम सुख सेन विचारै //
द्रोणी उर पर जरत // बनह हेरत निर चारै //
पर छांह अपव मुनि पर-पगर // तहां इक चिर
तरन पेखियो // वा इसा बहर धरतो विवध // एक
अपुक अवरेखियो //२// असुथांम निरख अगंम // एह
विरतंत विचारै // मातुल सम अपनौ यौ // खलन
संजन निरधारै // दुसर दाव वे दाव // घाव
घते हां तीजै // रैण सैण मझली // पंडनिह

तेरव करीजे ॥ चनू च्यार रथ पारथ दिसा
वेग संजोड़ लिड़ी पै ॥ आरण वजेत पर अक ह असाह ॥
निस निंद्रा वसि छोड़ियै ॥३॥ क्रिपा चार सुण कथंन ॥
राम स्याम मगन उचारे ॥ सैं नरे रत करो पै ॥ लेख
परखे क्रिण जोरे ॥ वरध ॥ अवाहण अस्त ॥ मदह
पांनी ॥ निंदानी ॥ इतां चाव चतो पै ॥ धारत वांनी
अपांणी ॥ असुथांम हांम संग्राम धी ॥ पूरण वात
प्रमाणीजै ॥ अस मत्थ जिहि समरथ होरय ॥ रैण
न दिल मत कारी ॥ च्योण ससत्र अनथ पै चिरट
वहीयौ दुर धारी ॥ मुरे सुर रथ सुभर ॥ हुवै
सातुक सिर छेदे ॥ खंड धारि अगतो ॥ पथ
गंगेव विभेदे ॥ पै प्रिथम अथम इह रच प्रगट ॥
कवर जुध जाहर कीयौ ॥ अत जोग करम पंडव
अकरस ॥ अपन सीस नर लीयौ ॥ ४॥

दुहो :- असुथामां मातुल सरस ॥ काहि निज वचन सकांम ॥
सेना दिग आयो निसा ॥ रचवा कुंज संग्रांम ॥१॥
तहां इक पुरख संपेखियो ॥ गलि धरीयां रुंड माल ॥
जिहं दो कर भूले विकच ॥ बाजू विरव धराल ॥२॥
तोकै वेदो हर नमै ॥ अदभुत आगम अथाह ॥
तामैं वेतर बीर वह ॥ निकसत दुसह दुबाह ॥ ३॥
सुनि वर जांम उचार माते ॥ सिवजुत सकति विचारि ॥
मुख असतोत्र उचारियो ॥ कारण करण निहार ॥ ४॥

छंद भुजंगी :- निमो देव देवाध चिग्यान द्रोही ॥ निमो
भूत भावंन धाता निमोही ॥ निमो जोग जुगादि
अनादि अपाद ॥ निमो वीर वैताल नाद विवाद ॥१॥
निमो नाथ नाथन जोगी गुरांणो ॥ निमो भूत धारा
मसांणो ॥ निमो तेरव तांमो गणो भैरव रूप ॥
निमो मोहि प्रामेघ कालं करूपं ॥२॥ निमो दुख
दुरत्या द्रिणो जोग जेता ॥ नमो पंच हेतक अंत
करेता ॥ निमो सूल धारक नीनेत तेखो ॥ निमो

गुरु गोपाल सांमी संतोखि ॥२॥ निमो हर वासिगचा
गंग धारा ॥ महा गंग पावन अरा मझारा ॥ निमो
अजरा जार संसार सोखि ॥ निमो वार हे हार सांमी
विरवोरखो ॥ निमो सिध साधक साधंन संतं ॥ निमो
नाथ अनाथ अनाद रित ॥४॥ नमो भीम खूरिज
धारक सांमी ॥ निमो ग्रंम बैराट रुपी विश्रामी ॥ निमो
अजरा जार उधार काया निमो काल रुपी निमो
जाल माया ॥५॥ निमो देव दांणव अोपति कारी ॥ निमो
संच सो खग पो खगा धारी ॥ निमो मेर उध पध
धाम सांणी ॥ निमो आदि अनादि जोगी रांणी ॥६॥
निमो धाम धोरव निमो धाम धारु ॥ निमो काज
काया निमो काज सारु ॥ निमो वेद वादी नमे वेद
काया ॥ निमो भव सोखो निमो भव दाया ॥७॥इति
श्री सिव अस्तुत सपूंर्ण ॥:~

:~दुहो:~ सुते सुर अस्तुत कीर ॥ कियो प्रसन सिव राज ॥
वीर संधारण धीर धर ॥ पिता उगाहण काज ॥१॥
गोम महेसुर अजर जर ॥ मुनि कीय तन ह प्रवेस ॥
ले अण सकजो अौर सादे अण पंचाला देस ॥२॥

छंद पधरी:—अतु धांम सिवह अग्या अतोस ॥ पै कीध सेन
मेनह प्रवेस चिन्हाय धुरं धुरि वेध धाव ॥
वाहि गयो जोध जोधान वजाव ॥२॥ मरुद्राज वेर अन
भाव भूप ॥ दिख राव वाहि सिर सिराह रूप ॥
गहि केस दुसह आहिते समाजि ॥ धर के कन
सत्र किरर जक राज ॥३॥ जिग अजह जोग
अतु धांम जोर ॥ मोरे अपित कहते अमरोर ॥ उत मेख
फेरि धाड़ धाव धार ॥ डारे कवि रख सुलतह
उकार ॥४॥ जोधा इमांन जोधार जीप ॥ पै
लयो धोण उगाहि प्रदीप ॥ भुज डंड खंड खंडह
भुजाल ॥ सपीया जलोधा संतन संभालि ॥२॥पित
विंद ॥ पल रवत करम पूर ॥ -अस गयो दुगम

मुनि प्रणाम चूर ॥ धम सुवन सुमन मन शोध धीर ॥ चाहै र धात रपस मर पंधारि ॥५॥ सुत सोम फेरि पारथ सुजाव ॥ धार मंग कीध मुनि प्रगट धाव ॥ सुत आवा सुतन सह देव सूर ॥ पदि कीध खेत खल खेत चूर ॥६॥ सतनीक निकुल पुत्र ह प्रसाधि। वाहि कीध पुरह खगि प्रकट वीध ॥ खत धरम दुजन दु प्रज नम खेत ॥ वेराट कीध रिन धन वचेत ॥७॥ इन भेद प्रगन गति जरट जोग ॥ धुरि धोरव जोग मुनि वर वियाग ॥

छंद चोपई:– तिव प्रागधो प्रस धामां सारी ॥ पाट वजारी सेन प्रतारी ॥ सोमक मह पंचाल प्रता पुध ॥ जुड़ि जोधा जोता जुधा प्रावध ॥ द्रोणो द्रोण उग्राहे दुर धार ॥ पिंडि मुड़ सेन सेन कीय पाधर ॥ उरि जरते वरते प्रम मांनी ॥ प्रासो राजन पास उदांनी ॥ खांन खेकल रूपह तन सेवत ॥ शोध विधा रत परव छत्रह जत ॥ कुरवा दिक कंवर करणह मकाहि ॥ पंग रा गन खेहाद प्रतो कह ॥ :

दुहो:– छत्र ग्यारह खोहणी ॥ सोम सयण इमि पाय ॥ प्रसु धामा मातुल सरस ॥ प्राधा तहां प्रधाय ॥१॥ हुधार लिपत तन मनु दुचित ॥ द्रोणी वमत सधाल ॥ प्रसु धामां वतला वीयो ॥ तिहि वेला भूपाल ॥२॥

कवित:– प्रसु धामां कथ प्रसह ॥ सवण मम कहीं सजोधन ॥ नव दृणा खोहणी ॥ चाहै धारां समरि गन ॥ कोई पंज तिहि विधाई ॥ वंधे जोधा इहजांणहु ॥ पंच पंड हरि छवे ॥ सपत मातुक प्रमाणहु ॥ इह तरफ सुर सुर अंत मन ॥ द्रोणी गोतम हरद कही ॥ मम कही नीरता मुनि मांगते ॥ सेन सखण प्रघर सह ॥१॥ सुण दरजोधन श्रवन ॥ वचन दुज मुखा विसारद ॥ कहत कठन श्रम कीयो ॥ तुम निसयों विहद हद ॥ पंच पंडव प्रसद ॥ खेन प्रन पुत्र

अंजुल ॥ जल अंजुल अधिका रहे नन पृठ सहारे ॥ इह हरख सोग अप रोग चढ । उर गाहीयां औरस किती ॥ सरग लोक गयो मत लोक रं ॥ साधोयन राम महो पती ॥ :—

वारता:— दरजोधन अठारे हजार खोहणी को कदन कराइ कै भग ही वार लीधो ॥ अस्थामां की एक भांति तो आछो होज कीधो ॥ बाप को वैर सांभ को भांग सुधार कै कै राजा की दिग खेत मां पाछा आया ॥ सेख सेना रही थी तिरस मान सेख कीधा सामरम मित कै सेमे राजा कुं सवणां सुणाया ॥ :—

दुहो:— निरख सजोधन मित चरवन ॥ मुरछी रथी अमांण ॥ पारथ मव पर मुरख चले ॥ नरखे चरव जी तांण ॥ चिरतर दमण हथ प्राण थथा ॥ ओणी हथ निवाह ॥ स्वारथ चाहु आवीओ ॥ दिग अरिजन चत्र बाह ॥ समाणि अजातक सत्र सुणे ॥ मुनि कीय सेन संघार ॥ थयो अचेतन अतिहि अति जे सुरव चित निवारि ॥ ३ ॥ सानुक जद त्रिप कर रहे जल सुध नयण परवारि ॥ प्रसन सुणायो दुरव दहन ॥ निगमो नीत बधारि ॥ ४ ॥ लोहि चित चेत बजेत मि रिण जुज थिर अतिनहि उदास ॥ दुरव दारवत मुरव द्रोपदी ॥ सुत मत मरम प्रकासि ॥ ५ ॥ :— छंद बे अखरी :—

:——: जुज थिर चवत सरस जदु राइन ॥ रघ-प्यादन इत कित चाइन ॥ अति आलस विचा तन त्यागत ॥ संपति सु ग्रहन आलस जागत ॥ १ ॥ त्रिप सेवा आल सिव निनावत आलस ॥ निज चन पर मुरव चावत ॥ आलस जुजुत रपति उथावे आलस सुकृत क बहु न पावे ॥ २ ॥ हरि समस्त आलसन न होइ ॥ आलस दिन लिहरत ओर ॥

हम सेना =पालस बस =पनहित ॥ घाव सारे
दुजनम गो चूरत ॥३॥ दचंथ्या पर जोध =पडरा
डर ॥ बहतो छडु कायर डाबर ॥ :—

दूहो:— जुज ष्टिर सोत चिंतंत कहे ॥ निकुल हवेग विचार ॥
द्रोपद पुत्री लयण कज ॥ भेजे निकुल विचार ॥१॥
हरि पारथ सम जुज ष्टिरह ॥ सुणि =पति दुज
नम दुठ ॥ =पाया भीम मुकांम चौ ॥ चंचण खल
जण पूठ ॥२॥ तिसनों सुत प्रित संभरा ॥ राजन
देपत पहार ॥ कहत भजुह =पव राज सुख
समची सबह विडार ॥३॥ वन दाधौ बरखा-
टलो ॥ मोरम गारह जेम ॥ =पव निपता पद
विन सोचै ॥ कुर कुल निरख =परवेम ॥४॥ नर
सुकै कर दस कहल ॥ मछन केल सकार ॥
गातनि रुचै नीर गति ॥ राज समाज सदाह ॥५॥
भीम श्रवण रह वचन सुण ॥ तजेव सोरवण
सूत स्वारथ गिणि रीनह कियनि कुलह =पहसूत ॥६॥
मारुत मारुत गति गहन रथह के बल बानि ॥
दुजनंम घानव रिण दुजह । समध उगाहन पांणि ॥

कवित:— हरि भगतन दुख हरन तांम बोले लोरव करन ॥
भीम जात निर घात ॥ दुजन निज रथ पहारिण ॥
ब्रहन =पसन जग विदत ॥ ब्रहम =पपोति उतिम ॥
जेण =पदी पत पपै ॥ चलत नह सतन पराक्रम ॥
निर चार विचारो उर =पजर ॥ जुज ष्टिर बंध
निवारियै ॥ माराड विकोदर निकुल सम ॥ जोतो
राड न हारो पै ॥१॥ सुणि जुज ष्टिर हरि
कथन ॥ =पाप निजरथन =परोहे ॥ लोच पथ
गिर चार ॥ सम सम रथ विमाहे ॥ त्रिक उद
रह तिम सोमै ॥ कल्यो =पापड़ =पजता सत्र ॥
म्रह दुजन =पन सहन ॥ ता हित जोयै रिण
गा मित ॥ =पकुलाई घोर जेडी वचन ॥ गद निज

कर दुर धर गही ॥ विवहार वचन नह मानिवो ॥
निर चनु बादास्त जिही ॥२॥ सुर सरिता तट प्रगट ॥
व्यास पांमे दुज दारन ॥ तहां जाय सुत तंत्र ॥
रह्यो थाटो अन बारन ॥ पेखि पृठ पारथ ॥ भीम
आवत अजरा जर ॥ दाम प्रसन्न जद दुसह ॥ कीयो
मंत्र ह जुध्ध आतुर ॥ प्रभु थांम तांम प्रण पंडवी
अवनी करण उधारीयो ॥ ब्रहमाद प्रसन्न चालिव
विखम ॥ ब्रहमो तेज विहारीयो ॥३॥ ब्रहम प्रसन्न
जागो बदत ॥ तेज अन मंच उचारे ॥ ताहि पेखे
पारथ ॥ चीत सुज मंत्र सहारे ॥ उभै तेज आमोच ॥
देखि जारत दिसा दिस ॥ वेद व्यास नारद ॥ तेच
आया विच उरस ॥ मिलि कह्यो पत्थ सम
रत्थ होइ ॥ रही चेत न चारीयै ॥ दुज चेख
चईना होइ अडर श्रेम तिलोकी जारीयै ॥ :—
छंद वे अरवेरा :— कवि सूज व्याब्रह सरल सकारण ॥
काहीयो प्रसन्न महा नित धारण ॥ मै दुजनम
सुत नहन सहारे ॥ सोखण तेज ह तेज उचारे ॥
वेद वियास वचन फिर चारन ॥ इह विच
भारवत अचाम उचारन ॥ एक तुम दुहु वे वीर
विख्याता ॥ सोखो सस्त्र जगत होइ ताता ॥२॥
व्यास वचण सुण अजण खगो वट ॥ पै
सोखे प्रसन्नह अण परगट ॥ कोच चडने रथ
दुका कत ॥ प्रसन्न सहारो महन अनो कत ॥ कट
सच्छोणी तद सम कैतव ॥ अवनी कीरत
अपंडव पाइव ॥ उत्रा गरभ जोरे उचता पीत ॥
विच विचा कर सजोधन वंछत ॥४॥ हरि
जद कहत सरस प्रभु थांमह ॥ नचरहु बोल
इथण निज नामह ॥ उत्रा गरभ जरैत मह
उरीम गिण तै मो उभै अगामा गाम ॥५॥ महा
परी खत पावन माहि पीत भ्रम चारी होही जोग

धरित ॥ साठि बरस भुजि नरव नरि सुर॥ कीरति हरि पुर वास करत कोर ॥ ६॥ हर रवग सूजि कबहु न हीनियै॥ भव भव सुजि निरभै करि भनीयै॥ भारथ समै विहंग सुत भारी॥ उव सीया किल कर ऋवि चारी॥ ७॥ :—

दुहो :— ऋतु थामां हरि वच – वचन सुण उकमीयो ऋवि चार॥
जिपान कीजै आज ती॥ त्यार रवग करतार ॥१॥

छंद बे ऋरवरी :— वेद व्यास जद सभा विमासै ईम काहियो निज सुच पर कासै॥ ऋस थामां इह मिण ऋवि कास॥ मन सुच कीजै निजर मुरारी॥१॥ मित भव जेण रहै माहि मंडल॥ ऋवनी करीयै राज ऋरवंडल॥ + चुमी सरसतई मुन दुर चर॥ इह विध कहियो सुमत –पम ऋातुर॥२॥ इण मण मह र तिलोक ऋलोकत॥ विध विध करण पुरव चित वंछत॥ ऋछतो तहां नह छतह उचारै॥ रोग तहां नह भोग निवारै॥३॥ दुर भरव तै थी ऋजा दुरासा॥ नह पोड़ै ऋवै गम ऋासा॥ इन इन विचन ऋकालन ऋावै॥ मिणि है जे थी कुशल निहावै॥

दुहो :— सुण ऋरस थामां मुरव ऋरतह॥ व्यासर वंच न विख्यात॥
तांम बतायो विवर कै॥ गंडी चार घन पात॥१॥
मिणी ऋदी थांमह महण॥ पोरव पथ वचार॥
मन चाहत करि मुंकहि॥ तो कुं माण उतारि॥२॥
दो पाइण उपदेस दित॥ मनमा चारि मुनेस॥
मित भव तरण कारणै॥ मिण कीची ले पेस॥३॥
काल स थोही गिर चरण॥ चौणी चेत विचारि॥
निज मुरव हुं जद ऋपीया॥ इह विध ऋाप विचारि॥
तीन सहस वरखह विहत॥ भमि दुज वनह विख्यात॥
कमि सब बीसरि ऋपचम कित॥ तो चै ऋसुचो गात॥
इम कहि ऋरदु थामां सरस॥ मिणि ली ऋज व मुरार॥
ऋायां भीम मुकाम चो॥ करि ऋति काज उदार॥५॥

पारथ निज रथ पर हरे॥ मिलि ले हथ समांण॥
कहै असुथामां किया निवर॥ दाखो नामां आंण॥८॥
देखी मानिह द्रोपदो॥ मेटे उर की दाह॥
कहियो थे सब सिध कीयो॥ मम कारिज यह वाह॥
कौरे असतूत निधूत दिल॥ हारीति राज कुवारि॥
गिण अपी भ्रम सुवण कूं॥ हरख विखाद निवारि॥९॥
ले अजता सब मन मुदित॥ मिणि चंदाणण पास॥
पेखे गुर सुत चो प्रगट॥ दीधो हुकुर निवास॥१०॥

वारता:— अरिजन भगवान कूं कहण लागा॥ असुथामा अकेलै सेना का समूह किह भांति सूं भाग्या॥ धिस्टद्युमन सिखंडी भीखम द्रोण का जितनो कारण थो यासा निस कै ~~सम~~ सैमे धिस्टद्युमन पसू की भांति असुथामां कै हाथ अकेला ही मारया॥

दूहो:— हरि पारथ चो कथ सुण॥ कहियो नाथ मुरारि॥
सेना थई निरेख नित॥ सिव ईच्छ्या निरधार॥११॥

छंद बेअखरी:— धाता राख सौपे सुधि धारी॥ सिरजण सिरखट अपति ही मन धारी॥ उनमत निाहि कज सिवह उकाया॥ पै विध करि विघ दै धाया॥१॥ सुते सुर पति वयण उपायो॥ करि तप करण वनन कूं धायो॥ वारज सुत जद विसन विधर रण॥ कीध सुत पैदा जुत कारण॥२॥ त्रिजग सिस्ट रचो अपति अपुलत॥ विध जुतक रण पितर सह वंछत॥ अन नूम्यो संकर अहंकारी॥ रहो दिख वह नाथ पुरारी॥ भूत पिसाच उपाई तई सब॥ अगतम गत धायो सत अरणव॥ कीधा कार वीर कुकारर॥ पाया सोस प्रजा पति अपुर॥४॥ दिख मस्तक छेदै त्या दारद॥ विध विध स्वोयो विधन विसारद॥ रीत जसह वह अपति रोखां रण॥ अपति परत खिडणीया जिग अकारण॥५॥ मुरख चाड ताण तोडि पण पुरग॥ अन चरख कीयो भृगु मुन अपन धग॥

धाढी दुसह दइत गुर द्रारिव ॥ धूंसि विधूंसि हांज
सोधो गज साव ॥५॥ हंता हवर हितै प्रहतार हित ॥
धर अंर सत्र खिंदे सब धूरित कृत उंछव मेरेसिव
हषत कुल ॥ आधंतर जोगो अरि उकील ॥८॥ सुर
गण वहंम सहत अंद सारा ॥ गासिव सरणह करत
पुकारा ॥ सूतें सर अंद अतम साव भजे ॥ हमें
समापो देवां उछजि ॥ ते सिव असुथामा तन संचीरे ॥
को मित, सेना निस जुध कर ॥ :—

दुहो:— ठर ठर धी पूरण रहस ॥ काढि पारथ हित कार ॥
विध विध कह्यो विसासता ॥ फिर कारज धर धारि ॥

—:॥ इति श्री सुतक पर्व ॥:—

॥ सम्पूर्ण ॥

3.

—:स्त्री—पर्व:—

दुहो: —
आसु सुदि वेधो दसो ॥ सोने वारह चित लाय ॥
एकादसमी परब रव ॥ कहिये फेर बनाय ॥१॥
श्री पत जोमें सोच श्री ॥ टारे आपे गिनान ॥
भारथ विखे पहारिने ॥ मद अंधी राजान ॥ २॥
जनमें जै निज व्यास सूं ॥ पूछ्यो-प्रसन विचारि ॥
दरजो धान दहिया पछह ॥ पंवे को चित धारि ॥ ३॥
वैस पायण जद विवर ॥ जोगो कहण विर्तंत ॥
संजै पर विश्वास को ॥ सब ले आदर अंत ॥ ४॥
छंद वो अखरी :—
संजै सम राजन साथ चाने ॥ करदारवत लिज

प्रीत दुखकारी ॥ मोसो कुरुपो बल्ले को माहराज ॥
दीठो ते संजै तिथो पैदल ॥१॥ निस रह्यो चंदह
गति पावो ॥ मेरो दसा थई अपन भावो ॥ नर
जल पारेवे जिसो अपेसाभी ॥ हुं पायो अतिस गति
लोभी ॥२॥ तिर विपत संजरतो दुर गांमी ॥ नीज
हु भासत अविन निकांमी ॥ निरव हह पद पतन सोहै ॥
सोतिम पुत्रा विजम विमोहै ॥ दीप कविण जिम
तिरन ग्रह दीपै ॥ पुत्रां बिण तिम सोहि प्रदीपै ॥
दुन चार घात लागो सो कारण ॥ क्रित निज कंरहु
थयो अकारण ॥३॥ मिण चार मिण पारेवे जिम
देरवह गालक हुं पायो विण परगहु ॥ सूत कह्यो
जद ~~विच~~ सार सह त्रिप सठ ॥ एव क्रिम सोच
करत तूं अपत कुठ ॥४॥ भीसम विदर कह्यो जुई
जुई पति ॥ विच विचम कोर सजोधन वंघत ॥
गांधारी वह विच सत ग्राही ॥ चित तुत तो
जिम अकथत वाही ॥५॥ ते लारवा ग्रह कुधि
कोरि अपतोरि ॥ पंडव हित विचार कै अपन
पोरि ॥ ते जुवट कपट हम न जाणत ॥ हित पुत्रह
रचोपा पो च हारि अपना हित ॥५॥ ते एव जोग
अनत उर चारे ॥ क नांहिन फिर करता उरधारे ॥
वन वालह जैसा लरवावे ॥ रित अपै तैसा
कल पावै ॥६॥ विदुर कहत सुणत राजन कुधकरा
उपव मति सोच कै चिंता आतुर ॥ को तोरी
मित कुम उपाजक ॥ ते सब भगन हो वन इम
परतक ॥ चाक चरत कोड चढ़त अवोहत कोड
अगिन अवोहत चरत तत ॥ कोपा तत वरतत
जुध कारण ॥ तिहचै कै पामत निर धारण ॥७॥
कै तिम टपत सकल रह पाणी ॥ उपजत
सपत अनादि कहांणि ॥ ईउ दे वासि वरतो होइ
नर ईह ॥ भीसा वत प्रित भव चित वंदह ॥१०॥

इक इतिहास कहूं सुनि प्रापण ।। नर पति सुणहु चिरह
मति धापण ।। तप करि वाइस हुजम प्रलोकत ।। वन
मन धारहि गयो तजि गृह अंत ।। ११।। तहां एक नारी परम
गति पेखी ।। वन आथान गृही यं प्रवेखी ।। निरखत
रुह वृतान्त धाण निज ।। तत छिन कूंप पहू गिरी प्रविन
तजि ।। १२।। बेल तंत तहां प्ररूफ प्रचारी ।। बंधत खर
रहि गो प्रविचारी ।। १३।। कूप पास उरद इक पन्नग ।।
मातर रहत निसह दिन विभ्रम ।। १३।। ताके खर कर
आरवट पदताव ।। उनपति नित दरसत हत प्रोछव ।।
जल तल हुई गज बोरत जोहर ।। मध कारी दारण
गति निरभर ।। सित स्याम दोइ मूंसा तम हर ।। काटत
लता और क्रम दुक्रम ।। मद धारि इक सुवत कूप
कूप माहि ।। चाहत चिपत चिचारि सोवे मितह ।।१४।।
इह चिच रस वंछत प्रविचारी ।। सवर न वंछत
दुरवह मझारी ।। विदुर नृपत सम इहै विच खण ।।
कहियो काल प्रवंछक कारण ।।१५।। इह विध सुणी
धीतारस प्रलेखो ।। कहियो सुणहु विदुर दुख दोखी ।।
हम इह प्रसंन मन मनह पायो ।। मन मां एह सनेह
रहायो ।।१६।। सम प्रंबो तद विदरस कोमल ।।
भारवत प्रसन मरम चित भामल ।। कूंप रूप एह
विरख सकारण ।। लता प्राव गिणि प्राण पचारण ।।१७
मुखवा स्याम स्वेत निस वासुर ।। काटत से उमर
प्राती भम करि ।। दुरदछ मंछर जांणहु दुर चित ।। सूम
खटहु मानूं खट रित सत ।।१८।। नग बारह बारह
मासा निज ।। प्रन जोरत वरनत चित उछिज ।। व्याल
सरूपी काल वसेख्यो ।। मृदु धारा इन्द्री सुख लेखो ।।
तिह पर तिह होई प्रतिहि प्रतखो ।। देखत नाहिन
आतम देखो ।। एह प्रसंग नृपत सति जांणहु ।। सोइ
निवारि महा दुख जांणहु ।।२१।। खल खग चार
साइत तन लागै ।। ताको जनम प्ररथ सति लागै ।।

दुहो:— सिच सिच विदुरह प्रसन चीव॥ पर चावत भूपाल॥
तत छिन तहुं पधारिया॥ व्यास विचारे काल॥१॥
सोक समाजह चोरियो देखे पंथ प्रजोण॥
संत तिहित जद कहत है॥ श्रव कथा प्रमाण॥२॥

छंद चौपई:- भारां कंत महा भू भारी॥ कमल सुमन सम कीच
पुकारी॥ हुं प्रथमी पलांकित प्रान हित॥ सत भारह
पाडत भारज सुत॥१॥ प्रज जद प्रसंन होइ काहियो इम॥
वसधा प्रव हम तोहे किचिते विभ्रंम॥ सुत प्रंबे
चित्रासर नरे सुर॥ दरजोधन ताको सुत दुस तर॥२॥
सो कुल जुग प्रवतार सतालो॥ मांण गुवांण महा
प्रभमलो॥ कलि कुल लोय महा दुका कत। सो ता
भार उतार दिसद प्रति॥३॥ इह कारण तुम ग्रह कलि
प्रवतारि॥ भुव पति मेले सब निर भर॥ सरब पाइ
प्रधान प्रव सोचक॥४॥ हरि इच्छा कारज इत
प्रविहत॥ सिच सिच थयो प्रविन मन वंछत॥ताको
सोचत जे प्रंबे तुम॥ करो क्रिया कुल धरम करम
क्रमि॥५॥:—

दुहो:— यह पर चाय सुणाय कथ॥ जो निज धांम विकास॥
चित्रासर जब प्राप कृत॥ सिम रत चीत विप्रास॥१॥

छंद मोती दांम:- महा विदुरा दिक है कथ मूल॥ भजे हरि भावत
जे दुख मूल॥ सबै दिण वास लीयां बुध सार॥२॥
चले कुर खेत प्रहेत उदार॥१॥ चंदनन कोरत
नीर सचख॥ फुल दिस भारप भोम प्रतख॥
विहै बल प्रबल चीत विहाल॥ चलो पति
सोक तजे कुल चाल॥२॥ प्रनूपम भूखण भार
उतारि॥ कमै कर मोडत राज कुवार॥ महा राज
गांमीणे दांमणि देह॥ चलो पति चाहि तजे मन
नेह॥३॥ चरा पुड़ सिचत सधु प्रधार॥ सभु
कि सम ग्रह हार सिंगार॥ तोय तन सूरन पेखत
ताहि॥ नीहारत प्रीतम चीच प्रनाह॥४॥ महा सिक

वयणिय सोच अमोघ॥ जला रत जात दई वीय जोग॥
गंधा रीय लोचां साथ कुरवांन॥ इह रिण वास चले
जो रांण॥ ५॥ :—

कवित:— क्रिपा चार क्रित ब्रहंम॥ सहत श्रोणी अनुरवासन॥
मिले मग रिण वास॥ महा दुख दाह निवारन॥ पुत्र
सोक पर जलत अध मेटे॥ चित आकुल॥ राम सबन
अखियो॥ रावत री चौतक संवल॥ पुन पुत्र वीर
वोराण होय॥ गा सुग वार तिमंग मिल॥ सब घातक
सेखत कार समर॥ वात रहत वेसी ईल धाम डोरत
कजि सुधान गये वन सोच करीजे॥ भाजन वर तत
भुवन॥ भग्न थयो नहन गिणीजे॥ तप करतां आतमां
खोण गिण चीत न दाहै॥ जोवन घरणी सरस॥ गयो
नाहिं न अवगाहै॥ खत्र वार खत्री है धार हिण॥
करत मुं कामह मोम रिण॥ दुख मोच विचारो नर
पत ताको॥ सोचन उचित रण॥ २॥

दूहो:— गोतम श्रोणी हरद हित॥ दे अंबे उपदेस॥ जूजू
डंडे चलीया अग्या पाय नरेस॥ १॥ गो गोतम
सुत गज पुरह क्रित ब्रहमा निजि दांण॥ अस्थांमा
मुंह तो आगम व्यासत पोथज जोणि॥ २॥

कवित:— चिंतासर आगम॥ सुणे सुज थिर साति वाइन॥
तद जदु पति सम कहत॥ सुणहु जग दास जगत
जन॥ राज वेध अरस वेध हमह कुर वंस वरे॥
अंबे असहन मिलन केम वधा ही निर धारे॥
इक अपत राजन तन पांण तिहि॥ सो नह पुत्रन
दुख जरै मारुत सिरत मिल नह समै॥ निह्चै
करि कर उधरै॥ १॥ हरि संतन दुख हरन॥ राम
फिर वचन उचारे॥ दरजोधन गद दहन॥ लोह
मे भीम बणा रे॥ सो प्रीतम तिह समै॥ प्रिथम
अंबे डर लावो॥ रीस जोरस राम जलण॥ तांहि
तन दुसह दहवो॥ निज तनह प्रथम उर लावीये॥

सुणी जुज थिर मम कथ सरु ॥ साहि भीम कराहि मिल
नह समै ॥ भीमह डीलक गति जरु ॥२॥:—

छंद चौपाई:— जुज थिर आया संति जांणे चलिया मिलन विचन
मन ठाणे ॥ माहत हेत लोह मै माहत धारि आगौ हलुआ
लिग चूरित ॥१॥ पह उरे प्रिथम धरम सुत परसे ॥
ध्यों क्रं भीमन अत परवसे ॥ अनुज लोह मै फेर मिलायौ ॥
नामा क्रित भुज पीत तन लायौ ॥२॥ सो सतह तणह
हार संभारे ॥ अंबे क्रोध मा आगाध उआरे ॥ भुज
संग्रह आये माहत भ्रम ॥ काचह क्रीघ लोह गति आक्रम ॥
अय चूरन करि रोरन उतारे ॥ पाछै मोह समोहन
मोरे ॥ थाथ जमू सम मिले परस पर ॥ अहणे
सो नाजियो नृप आतुर ॥४॥ सरस गंधारी जुज थिर
सोधी ॥ मिलवा चलण नयन जल मोचन ॥ जद
पति जई सरब विध जांणे ॥ उर भीतर दह सोच
प्रमाणे ॥५॥ हम पंडव निज संत विचारे ॥ भारथ
करि स्वारथ उबारे ॥ अंब गंधारी साप आगा दह ॥
क्रिमह वंचाउ सुविध समुख क्रहि ॥६॥ निज मातं
कारन गोर चारन ॥ पति भरता पर भाव सधूरन ॥
मन क्रस मे रागिड़ महा माति ॥ पै सुर सरित करी
उचिता पति ॥७॥ भ्रम सुत ता पाछै धीरज धरि ॥
आप मिले विध मातह आतुर ॥ गंधारी निज दुरव
अब गाहै ॥ राजन सबर दिसि क्रोधह चाहै ॥८॥
स्यामा नरव जुर भयो नरे सुर ॥ उ[illegible]वरि असह
सा पता अनडर ॥ जुज थिर मम बंधव विध
जांणे ॥ मिलियो सब थी करणा आणे ॥ ९॥

दुहो:— गंधारी त्यास द्रौपदी ॥ निरखे कडुत निवाह ॥
लगी अठी पुत्रन तणो ॥ हम तुम सर भर दाह ॥१॥

छंद मोती दांम:— महा रन वास तई तजी मान ॥ चले मिल
भारथ भीम भदान ॥ गुड़े गज बंध पड़े गज राज ॥
चड़े घड़ बेहड़ सुर सामाज ॥ क्रं कड़ डंकड़ जोगि

करूर ॥ चंचालीय मस भेवे रिण चूर ॥ बर जं जोध महा रिण चोर ॥ तई रिण भीम बने बांनैत ॥३॥ महा छत्र धारक सोरत प्रमांन ॥ जा छिन रा तत्त तोड़त तांन ॥ कथूरिय चंदण होर प्रकास ॥ मुजैर जे संजुत प्रंग गुवाल ॥ बंदीजण मागध होइ बंसरव ॥ वणै सोह स्वान मसा पर बेरव ॥ मसा रंग राग न होइ पदूर ॥ पल चर भाखत नां हत नूर ॥ चारा वण सीस प्रसीस चड़ाल ॥ चटे दिस रा<u>द</u> विचे घाम चाल ॥ उझारण डाकण साकण दूठ ॥ भरे पत्र रतन जंग प्रगूठ ॥ वयंवर मूतर पेतर बीर ॥ उनासत भासत चीत प्रधीर ॥४॥ चंदाणन रतन क्रीच निचाह ॥ फिरे चिहुं फेर नरखत नाह ॥ चखू चड़ आंणि दिये सिर जोड़ ॥ सुर छत होइ उभे कर मोड़ ॥६॥ गहर सुरख चेत न गेहण गीत ॥ प्रकासत खेत विछूटत चीत ॥ सखो सत सीत न केस सचाल ॥ चढा पे चीत करां विच चाल ॥८॥ विमोहत देख वरो सुभ वेस ॥ रिधू मन मानत प्रापण रेस ॥ गंधारीय पेखत पुत्र प्रमान ॥ भिड़े पड़ भारथ भीम भयांन ॥९॥ गया गम चालत खेत गहीर ॥ प्रफ मत छुतन तंत प्रधीर ॥ दुजो वण बंध समेत दुबाह ॥ पड़े चड़ खेत प्रड़े नर नाह ॥१०॥ जहां सब राजन लोक जरूर ॥ प्रवधारे प्रापरव लोक प्रचूर ॥ न बोहा पेरवे गदा हत नाह ॥ बीता प्रति घात गतो प्रति वाह ॥११॥ पवनीय रंग जेठो हित पूर ॥ पैं पत पेरिव सनारि निहूर ॥ :—

संदूहो :— गंधारी सम हरि विघर बोर वतावत होइ ॥
चोआसर सम क्रित ॥ उर चाख हुंता जोड़ ॥१॥

छंद बेअखरी :- गंधारी सुख दुरव सत गाहो ॥ हरि सम विरवर कहत उर दाहो ॥ देखे राउर दुर चार दुजो वण ॥ ग्रसत सिवाल सिंघा रेण अंगण ॥१॥ दुर मुरव वी वरणां दो सारी ॥ रा गिरिया दे रंगो प्राति क्रारी ॥ भीरवम वंस मांण रचे भारथ ॥ सत

सम्झया पोहे रिण समरथ ॥२॥ दुजण जोध जीण
इह जदु पति ॥ चिल्ह दमण पूजे खग चूरित ॥ कन
कवरी स करन रिण अण रुल ॥ कहियो कवि भुज
सकज भुजा बल ॥३॥ सिल नर नाथ नाथ नव
सहसौ ॥ सहदेव निकुल मातुल सा ॥ सोदर जोधन
हेत समर सक ॥ चिड़ पड़ियो जुज थिर कर पाइक ॥
संबल निज मंत्री मातुल सति ॥ सहदेव नव
हीयो भुज सद घात ॥ संज राज जय धरत
नरे सुर ॥ दुसला करत जोध रिण अण उर ॥४॥
चक्र बोह जिण जोध सचाला ॥ चिहुं वे भड़
लच्या कंलि चाला ॥ पारथ जई प्रतंग्या पाले ॥
जुध जाहर वाणां पर जाले ॥५॥ जल संधी
मातुल दुर धारी ॥ आड़ै वहरियो बार उतारी ॥
यह भगदंत जोध उतलो बल ॥ वाणे छिणियो
पाथ महाबल ॥६॥ विंद अविंद जोध अवरी वर ॥
चाढ धारां गिरिया रिण चाचर ॥ भिम चूत ग्रव
केत खंडी खल ॥ गज बंधी गिरिया दल आगल ॥
जय सेनह कालंग जोध जुड़ ॥ पड़िया सुछल
सुजोधन अण पल ॥ इण बल अरट अभुर
अपकारर ॥ कलिहण पड़िया जूझ करारर ॥९॥ सक
वह लोक सोम भूरे सुर ॥ छत दाखिव गिरिया
गुर छव धर ॥ उल को सुकनो सहत अखाड़े ॥
यह पड़ियो कीर वाड़ि पवाड़े ॥१०॥ रतां आदिह
सिनौ अपलो कत ॥ रिण अंगणि गिरिया खल धर
मरत ॥ गिर धर वो इध्या दुर गांमो ॥ नर वीरणां
थई निकांमो ॥११॥ ववरण चिहु माहे नर वारू ॥
अब सब सुर गुरव हूंत प्रजारे ॥ त्रिहुं भुवणां
करतां निस तारे ॥१२॥ सुणि गंधारी वचन
क्रिसन साति ॥ कहियो अब जुज थिर करि कुल
क्रित ॥ जद पीत गुकंम धरंम सुत प्यारा ॥

आहिव चिंता रव अन पार॥ नाथ कुशल बोलि राजन
बहि॥ पर जोते आहिव पर सम गह॥ गज गामिणी
सम डग डोर गुण॥ साहा गमण कियो निज धाम
सुख सुणि॥२४॥ दिन जो राव चिरवता रवत रह॥ पै
गूंच लियो गयण प्रचंडह॥ तपि निहू लोक तेज तिह
त्यार॥ उत्तन थया जल्ल महण अपारं॥ करि किल-
किरात तिघाति सम्रु कै केसन॥ आया नीर जल
रह रहित पोछन॥ सुमत कह अह मंजन कर कुर
सत॥ आपी जल अंजल उचता पति॥१५॥ सम
पति भरतां पंथ नरे सुर॥ आये सिव सुत
बारत पाति उर॥ गंधारी तिहि बार तेरत गुण॥
आप समाचयो किसन सधूरण॥१६॥ समंह मगति
जदु पति तुम कुल सह॥ अवर लोचारां करि
पोछह॥ खर तीसां बरखां आरवोड़े॥ प्रभु करि
सत बोड़े पवाड़े॥१७॥ छपन कोड़ ही सबै छलाल॥
चढ सो खग धारां कलि चाला॥ गोतह दन हम
जिम नभ गांमी॥ सही संपेख सनिज घरव
स्यामी॥ १८॥ —

दुहो:— गंधारी हरि आपदे॥ अरिजन सुणत अकाल॥
लोचां अंच अकुच॥ पहगो गृहर तत काल॥१॥

छंद मोतीदांम:— दजोधण बंध समेत दुकाल॥ चले सग बार
निरख कुचाल॥ मती पत होय लोयां सब सेन॥
मिले मग राजन राज महेन॥ अठारह खोहिन आवन
अद्ध॥ थयो अमरा पुर सोच अनद्ध॥ अठो आहिकारी
अभूप अनेक॥ नरतही रुकठ केण ववेक॥१॥
सभीड़ो परिव लई सुर स्याम॥ दियो पुर बाहिर
बास दुगाम॥ —

दुहो:— दर जोधन सातियां सहत॥ सहत अठारह खोण॥
बासिये सुर पुर बिल निमल॥ लोच भीखंम द्रोण॥

कवित:— सोक डंक चिंतास कथन गालव हित करी॥ व्यास

बोध सम विचारि ॥ महा वरणे संसारि॥ चौरासट
आगम ॥ मोलण छोगी गोतमह॥ पंड राज आखेस॥
लाह मग चूरण भीमह ॥ गंधार राव पुत्री प्रगट॥
आप समापण मह महण॥ एह पोत थया कुरु
खेत अत॥ प्रसन्नौ आवण आरियण ॥१॥ महा कथ
भारथ स्रवण विण कीयां नर सुर॥ खनो सार को
पार॥ जिकूं जांणै रीण दुसतर॥ राजनीत राजेस॥
दान दातर समंग्राह॥ उक्ति पात निरखात॥
वेद वेदां जांण गह॥ जुध बंध जांण उधाण
चित॥ नांहिन से जांणण सरू॥ एतला रहि
सकवि उचरै॥ न्याव वचनां पर वारू॥२॥:—

दुहो:— कातिं नव वद मीति यह॥ वारस बुध प्रमांण॥
प्रसन्नो पव पूरण कियो॥ कवि यण हरिहित जांण॥१॥

—:॥इति श्री प्रसन्नो परव सम्पूर्ण॥:—

४.

—: सांतिक — पर्व :—

कवित:—

मास मृग सिर चारि॥ बीजर धट निकारह॥
वार जीव संध्या दईव॥ भरण खिरव रास कलाकर॥
त्रिधग मांण रह बांण वास॥ दिरणकार प्रदीपत॥
भोम गरु इकठा॥ थया पोवे क्रिन्या तत॥ हेमंत
पर बर रित थयां॥ रेणू मन उदिम थयो॥ कुरु
कहण सुणण हित जुत करे॥ सायंत परब
निमंच्यो यो॥:—

दुहो:— हरि लंबो दर हर प्रिया॥ सम संकर अज मांण॥
सांरवर सुर पारा थीयां॥ जाठ सयाण प्रमाण॥१॥

जुज ठिर दे कुल जालत ॥ आया सुरात सुतीर ॥
वरीया इक मांसह लगह ॥ वांहर पेत अपार ॥२॥
देव रिखी तहां आय तद ॥ कहिया इम नीर चार ॥
राजन तो दी चो अविन ॥ अकरण करणा विचार ॥३॥
सुणि जुज ठिर फिर अरिवसो ॥ इम इह राजन चाह ॥
प्रात समै जुर कुल मजा ॥ धारि धारि दीजाल चाह ॥४॥
रगक अपनोरवो दुख वलो ॥ सुणि मुनि राव सुतंत ॥
कुंती मो सम नह कह्यो ॥ कनचोप हल वृतंत ॥५॥
मेजेकी लुप वंच कर ॥ रह चायो दिन रंग ॥
सो करता करि सात गिणि ॥ मो मन वात अंजाम ॥६॥

कवित:- सोप वर चंद्र सेज ॥ निपह रचीयो राजह पुर
तेथ ॥ दजोण दुसाच ॥ हरि नृप सुता परा धर ॥
जुर संघी मद अंच ॥ जोध वाहां वल दरवे ॥
करन ताम रवत घरम ॥ सरस साजो धन रेरवे ॥ मांण
रै वंस कुल मांण मल ॥ महा विरदां मोरीयो ॥
रवत दाइ जि केते कन दिण विरवम ॥ धाइ अजांण
पहरीयो ॥ १ ॥ इस समै निस आगम ॥ करन दुज
चीन पहरे ॥ तेथ आय अधीयो ॥ विप्र निज सुख
उचारे ॥ तेण दोरव जुध समै रहे रथ चक्र धरा-
रह ॥ धारथां तिहिं सैमे ॥ हये दांनी सायक कह ॥
हरि अविन इन्द्र कुंती अजन ॥ यां पंचा मिल कन
हयो ॥ दिण इथ अवाड़ो सूर रो ॥ रो कणा कणी
न अणीयो ॥ :—

चोपई:- वछ निपत रगक समै विचारी ॥ मणुची चोया
हरी पुर चारी ॥ आप मुने सर तांमस रोही ॥
मन दुरवत दीचो निर मोही ॥ १ ॥ कंन अरजण
जोयण प्रीत अस कर ॥ पायो पारस फरस चर
अपातर ॥ प्रहम छोड तर वीर खिनादी ॥ धातिव
काज लौंहया वनादी ॥ २ ॥ एक दिन सैन कियो
फरसी धार ॥ कन उछंगह वेख अकर कर ॥

भृगु सापका त्रिपतई त्रिचन भुज ॥ आंव चयो अठ
पद निज आरज ॥३॥ दांनो उरू विहेर सिंह दारुण
रुधिर प्रवाह ॥ कीयो रोरवा रण ॥ कन खनोया गुण
चीत कठन करि ॥ चारहु न हट नैयो गुरहित धारि ॥
राम कठण जद लरवे वीर रूरव ॥ कह्यो करन तू
दुज नह पर तरव ॥ सूर सुजा व लांभ सत चित-
ठवि ॥ साते कारण काढ्यो रहित साचव ॥४॥ रांम
तई आतम हित सत रह ॥ विद्या अकल करि
अन वचन ॥ :—

दुहो:— जुज धीर कह्यो सुबुध सम ॥ कन ते अजन वहार ॥
हूं लिह आंदै सोक जुत ॥ रहत परम बुधि लार ॥१॥
अरि जन राजन सोक जुत ॥ रहत पर बुधि लार ॥
लरव बोले बुधि धार ॥
अब फिर सोक समाजमा ॥ क्रिम बूडत निर धार ॥२॥
खनो खनो वट समर रिवत ॥ त्यागत देह दुरारव ॥
रित जसा कुल गाति करे ॥ होमत मंत्र प्रकाश ॥३॥
धान सेती धान ऊपजे ॥ गजहुं गजन बंधाय ॥
मिगहु मिग पंचत लहै ॥ राजन राज अधाय ॥४॥
जुज धिर तद फिर अरवीयो ॥ सुण पारथ निज बंध ॥
हुंव सिंहुं वनो वारस चिच ॥ तज हुं राज सनंध ॥५॥

छंद बे अरवरी :— राजा बोलई :—

सुण कपि जुज मम कच सुविचारी ॥ मो भासत है
राजत दुखारी ॥ गोत कदन करि ध्रिधंम अलोकत ॥
विध विध भोग पंडुनर पेहत ॥१॥ तातैव निर
हणो अति तात ॥ वचन करम मुनि गणत बिख्या-
ता ॥ द्विग अंवर जे धी दस ही दिस ॥ कंद मूल
भोजन समर सकस ॥२॥ पियो प्रजक पात्र कर पूरण ॥
आतम जुत म्रिग तुचा अधूरण ॥ है सर भागर
वार गज सोहे ॥ मघ कर दूत विधूत विमोहे ॥
पै करगा इक चीरठ वापारी ॥ नहडी जंत्र धरन धर

भारी ॥ कुंता चार तर औथ बंधव कहै ॥ खग
प्रेत गर सहत सिखंडह ॥ भीखनदा मरदंग सबद
निज ॥ तरीयन पात ताल गिण उताजि ॥ खिल खिंचाबण
आम आम छतर सिर ॥ खंजन नयन बार हारखवा
सार ॥ ४॥ जुजठिर जेथ कहैं दुख भारि हुं ॥ पाता सुत
राज भोग परि हरि हुं ॥

अथ भीम बाईक ॥ चौपई :— तन आधार कहत अन उतिम ॥
राजह तिम उदिम हित संजम ॥ बन आधार बनह
पति वारन ॥ जलै चर जल तिम आति हित कारन ॥१॥
भीम कहत राजन सुण निरभर ॥ रउ अजोगी
वात म आतुर ॥ कंथ विणत नर कर दम आवै ॥
मुरख छाड़त जलह अपावै ॥२॥ सुरबह भोजन
मिलिसें भारी ॥ भुगत तनह देही दुख कारी ॥ के
असनी जोवन कै पावे ॥ रंजन जांगत-पति दुरावै ॥३॥
चान कारन पर मुड़ चित चोरै ॥ बिच पारवे
सुजि परी विडरे ॥ तर मोड़े तोड़े आति ताई ॥
इखै फल नह भखत अघाई ॥४॥ जरा आइ
सन्यास गहीजै ॥ गृह धर्म देव पितर मानीजै ॥
पसु बांदिक नित बनह परा इन ॥ सिधलहत नह
कछु ह सकारन ॥ थावर वृत परबत इक ठावर ॥
नह दत पावे अघत निबाहर ॥ देवसा सुर भख
मुख दीजै ॥ मारग साति पर बरत गिणीजै ॥ ५॥
तजे गहर अम सो नह त्यागी ॥ धन समीपै खरचै
सुजि भागी ॥ अज इक समैं तुला चित धारी ॥ ब्रहम
चिरज बन वारन विचारी ॥ ६॥ सम सेन्या समु
रह नव मोपे ॥ रजकण गृह धर्म जो उन थापे ॥
ब्रहमा आगम अलम विधोरे ॥ धुरि तोमें मानव
चित चोरै ॥ ७॥ जिग जाप करता जग जाहर ॥
बाधण दुर बुध मुरछित निबाहर ॥ तुं ही तिम
राजन जिग अतुलन ॥ बिच गुन थापि छांडै

क्रिपणी बृत ॥८॥ न्रिप उद्दिम हत हुवा कहत नर
दुख सांमत अनिठी भ्रम दुसतर कहत कलौ वताहि॥
सब लोख रहत ॥ विरखा विठा जैसै घण बूरत॥१०॥
सहदेव वाइक दुहो:— बे अवर मां मौच गिणि॥ तो अवर मां
धंम॥ मम निर्मलह पर खिलौ राम कहत पर धंम॥१॥
ताजन वन वस राजवी॥ राज सधोरे चित॥ सेन कचे
करि काल वसि॥ येह लोगणी मो रहत॥२॥ द्रौपदी
वाइक:— दुहो:— तैं भ्रमराव अदीत वन॥ कहियो बंधव तोड़॥
सो अब समौ विचारिने॥ कीजैं काज न होइ॥१॥
हरख सेसै सुणि भ्रम सुवन॥ सो का मगनन होइ॥
खित्रीयां भ्रम खत लोहिडै॥ अब माति मनह विमोह॥२॥
छंद वेअखरी:— अरिजन वाइक:— राजा इंद धरम चित
राखे॥ ता कुं जगत दुरस नन दाखै॥ नर
पाती धार छीरन्या निमचै॥ सो नह अमित करम
हित बंचै॥१॥ बांणि डंड दुजन सति पावै॥ खत्री
सरा सर मुजे कहावै॥ वैसन धन हारक डंड वारु॥
सुद्रन डंड अ देस निकारु॥२॥ खत्री यन जुध संपति
अपति खासी॥ नाह जाइन होइ उदासी॥ भांण तपत
भवि डंड भवि डंड अपारी॥ पूजत भव डंडह सिर
धारी॥३॥ ता कुं को वैरी जांणो॥ पामे नपत सनेह
न आंणो॥४॥ वन जावै सो वन फल सेवै॥ तो मै
जंत्र अनंतह वेवै॥ आर नव सिसुटी पन चित
आमै॥ येह मोह सो कांइन ठांमै॥५॥ आप
सुत हिणौ नाहि सुत हिणांपै॥ क्रोधा क्रोधह कम
गाति मिणायै॥ !—
भीम वाइक:— दुहो:— राजन तो मन मोहयो॥ प्रलै थयो
खत वंस॥ नह छाड़त तिर धारि हरि॥ अजहु
सोक प्रसंस॥१॥ रोग उभै सब आतमा॥
अंतर हरि निर लोव॥२॥ दुख वरतत सुख
वीसरै॥ सुख वरतत दुख होह॥ प्रगट पंकालो

1978

दिन दसं॥ राजन चीर मनाह॥३॥ अस्त तोरणी परमाद
ही॥ कोची मदी अमांन॥ उदवेगी पीय पेट भरंत॥
बहनर लोड वहार ही॥ सो करयां सातत॥४॥ लख
वरखां कीलिया॥ रुध्या पुरित होइ॥ ईधिण जेते
जालीये॥ मंगल तेतो होय॥५॥ रोको जीव अनीत
वा॥ जंत्र जेहत वह सोय॥ विना भरोसे भ्रम कै॥ कम
बंधै निरत दीह॥६॥ डंडि विरत पिछांणीये॥ त्रिप
बूझत क्रम लार॥ रच पितर मग पर वेरै॥ रजक
ब्रहम निर धार॥७॥

अरिजनो वाच:— छंद:— चौपई॥:—

डंड धरम राजन सुरत दाई॥ साचो डंड उपाय
सदाई॥ त्रिप निह पाव डंड हू गिणीये॥ धम
निह पाव डंड हू भणीये॥१॥ त्रिव निडचै हित
डंड हु चिणीये॥ राजन धरम ररव्या कर ही सो
नर कह मारग अनुसर ही॥२॥ बांधो डंड ब्रहमंड
गिणीये॥ रवो मन भुज डंडह मुख भणीये॥ वह
सन चित डंडह अति वारी॥ सुहृद डंड न देत
निकारी॥३॥ राजा जन रवरो इधकार॥ अरिजन कहै है॥

छंद बेअखरी:— जन कब देह त्यागी गृह दुर जर॥ जो
सम वामां बनह भयंकर॥ भीरवग करम करत तहां
मन भ्रम॥ देव पितर परी हुर प्रति हित दम॥१॥
संधी तहां कहै सम राजन॥ मैं अब तजो सुगति
गति वासि वन॥ जा विग बन आसा जमि दुर
जर॥ अपाय भयो जोमि क्रम आचारि॥२॥ अब
अब मागत जग तीजे उन मादी॥ अति चित दाहि
ही सुजस अनादी॥ बंध भया दोइ भूप महा
बल॥ चित भूत उपंचारी अति चंचल॥३॥ रक
भयो दांनी अति उतिम॥ भयो दुजो भी खड़ अघोस
धमं॥ धान अपावन वह प्राण सधारै॥ वचै
दुजै पर धरम वधारै॥४॥ दाता अपाव करम

अगर होगहि॥ वन जो भी रवग जनमा वि मोहे॥ वन
ज्या नृप नौकर हण न मारे॥ मन वैराग जनम हित
कारन॥४॥ कांम क्रोध तज तन दुरव कारी॥ त्रिप.पज
पालना करे निहारी॥:—

–दुहो:– रांणी वाइक सुणि जनक॥ तज वनवास विसारे॥
राजन धर्म उरैग गिरे॥ पायो गेह भुवाल॥१॥

भुज हल वाइक:— वेद वतावत जगत कुं॥ दोनुं राह
विचारि॥ पारथ जांणत वीर.धंम॥तप.कंम नह
निर धार॥१॥ निर बुधि वान विचारिहै॥ नीराग
मोह समाज॥ रिख नह चलत संघेरिया॥
जम पुर दुरत तर पाज॥२॥ पारथ धारा वचन
इणते॥ लागत मौते दुरास॥ जिम कांद का पेड़ मां॥
नां रहिन मारह वास॥३॥ त्रिसनां तजियां सुरव
मिले॥ लोभ वसत सुरव दूर॥ मन इंद्रन का
मारग हुवे॥ जीतत विरला सूर॥४॥ ज्ञान प्रदीपत
हु वत नह॥ जो लग भुवन धार॥ संत थयां
ताहि जोणिये॥ रहत न कस मल लार॥५॥:–

ईवत रिख वाच:—दुहो:—
राजा जो पै रिण विरक्म॥ध्रिया कोट पचास॥
इण क्रिम हेरत वन विरकम॥ आसा करण निरास॥

–चौपई:— चार पाव की मीठि इण चल॥ ब्रहम चिर
अग्राहि कारज तोन वल॥ फिर सन्यास जगत
बिच इन फिर॥ आतम दिपत परम पुर आतुर॥
वन पुत वे मन चान हन धरीयै॥ जिग कारिज
तह चान उवचारिये॥ राज रिखी जिग थी कर
सद रह॥ पुंह चत सरग इमग तजि निज यह॥
सरब मेघ सरव कीयै सदा सिव॥ मव को
देव करण जग इन भव॥ भरत जिगन.कीत
करि निमै मण॥ पुहुतौ सरग लहै गति पूरण॥
हरि चंदह जिग करि मघवन हद॥ पूरण

जोव इनो सद खद।। इम जिग कारे राजन कुल उधर।। अग पुं हता राजन क्रित संवति ।।१।। सुर गुर जु इक सभे ।। इन्द काढियो चित अमल ।। सरग जात सत पुरख ।। कहो किह किरत सुकोमल।। जो पजई आवीसो ।।सुणहु निज वचन नरे सुर ।। करम गाति मनु कोये ।। सरग धामंत नर उसतर।। तजि राग घेरव अपति वांछ जुत ।। प्रांण स छोडी मांनिये ।। सत वचन कहण रिखमीया गढण ।। सरग सनेहि जांणीये।। राज नीत राजन दुरस पालण सुरव पाई ।। पज अपालंब न र दीयण ।। महा प्राणी हित चाही ।। गउ ब्रहम गत गहण ।। देह त्रिगणी कुत उजल ।। परम धांम पूजंन ।।२०६ सत आंणि महा बल ।। सुणि कहयो अजन तद तद तिहि सेमे ।। खत्री क्रेनकह कुत करे ।। तन चार विहारां टालीये ।। नांहिन हरि पुर संचरे ।।२।।

छंद चोपई:— अरिजन जेठी सरस कहत अपाते ।। आयो बिथा र बीर चित वंछत ।। पुज चागा जे हो हित चाई ।। खत्रीयां खर वट सरस सवाई ।।१।। न्रिप चित सो कस सो मत नांही ।। अतुलत तेज स उतिम चाही ।। वज्र समान रिदो सुज वाहन ।। क्षत्री क्रिपण नाहिन हित कारन ।।२।। :—

व्यास वाइद :— छंद बे अखरी:— न्रिप नित ग्रह धाम सुकत निवासी अनाहित वन चित धरत उदासो ।। ब्रिह्मचारी तप मोगया क्रम भारी ।। इन्द्री दमण ध्यांन इच्छ धारी ।।१।। पुस्तक पाठ संतोख दया पण ।। विच विच रह क्रित ब्रहामण ।। जिग जिग थापग विधि जांणा गह ।। धन अपस तोख उंड छुरि लह ।।२।। उग्र भाग निज प्रज अपालंबह ।। सुर सु दाना वचन सात कह धन उपराज गुणां अपागह छुरि ।। पात्र दांन खत्री क्रम उधर ।।३।।

सुधि मण नर वे भुवण त्रिपत साक डंड हुयसो
प्रमानह दाइक ॥ :—

दुहो :— भुज मिर पारथ साम जई ॥ लागो कहण सनात ॥
संख लिखत दोइ बंधवा ॥ दुजनम कुलह प्रकास ॥१॥
एक दिहाड़ै संख रै ॥ आयो लिखत सु गेह ॥
तहां न पायो बंधवा जद मन पनटै नेह ॥२॥
त्रिख तद अनार छक लैहै ॥ फल छिन्नै दिन लार ॥
आयो खतै संख फिर ॥ लाखन अपरस निहार ॥३॥
जद संखन फिर अखीयो ॥ किम लखन फल छीन ॥
राजन मे वेगहि जही ॥ पुछन दोख प्रवीन ॥४॥
राजन तद कर डंड दुज ॥ दीधी नीत सचीन ॥
लेखन जद कर हत होरु ॥ आयो संख कनीथ ॥
संख कह्यो अब लिखत कूं ॥ पीप जलावत रह पूर ॥५॥ तांम हवा फिर नीपना ॥ आख अनो पम नूर ॥ सब जुग डंड प्रधान है ॥ दाखत दोख अपांण ॥ जथा परा चह अप नृप ॥ दुहचत यह निरवाण ॥६॥ व्यास कहत फिर नृपत सम तै वन कासज लीन ॥ ताको अब फल भोग लै ॥ आदु ~~नीत~~ नीत सचीन ॥७॥ जामज जीत अपार मति ॥ आचर नीत उदार ॥ दुख कै अंतर सुख सहन ॥ सु भुगतीजै निरधार ॥९॥ देस काल जोइ चालीयै राजन नीत विचार ॥ आनह चर मन चोरीयै ॥ मारग निगम निहार ॥१०॥ पदनी गर धन पाग सुभ राजन किण ही काल ॥ प्रजाधन निर मै पालो यै सुर असेवै भूपाल ॥११॥ दरधानी मजाति अरखीयै ॥ नीत तिपोगी सोइ ॥ तस कर धन जीवै हरै ॥ ~~का~~ ताको दाव न पोइ ॥१२॥

छंद जैअखरी :— है जीवा नृप जग हित कारी ॥ क्षण गिण आरि जीतन अधिकारी ॥ बुध जिग जै रचीया जग जाहर ॥ विस ~~सा~~ सन की धंम निवाहर ॥ १॥

खग सरस्वा मुहडै खल खंडारे ।। मुख पति रत छित
साचे नीर भर ।। छाहिव छागिन पासिव होता छत ।।
सत्र साकुल सेना समपोसत ।।२।। तिज तन
होमि राव इम निरहइ ।। गो खग वार लोयां सब
पर जाइ राजा काइक कों दाता करता नम सुख
किन।। विध विध काल कलत हित बंधन ।।३।।
पोखद काल रोग उपावे ।। तर वर निज फल
कालह पावै ।। सुलता जात कालह जल भावै ।।
कालह सूरज चंद वहावै ।।४।। काल उपाजत धारत
कलेवर ।। पोलत कालह काल निवाहर ।। कालह
उगात वीज पविन छित ।। तावर कालह पाठत
वधांत सत ।।५।। मानुख उपजत खपत काल
माते ।। धान वीधा धरत काल गति धुरित ।।
दूहो:- चीरत चीरज चित चोरे ।। नह पामत पाति लोभ ।।
दुनी विचारे देखि ये ।। मह पवगाय लोभ ।।१।।
उतर मारग पाती अवित ।। दिखवण नरक निवाह ।।
तपसी छिरव पाते सदा ।। लहे नर विसुत चाल ।।२।।
पामें कमो ज जोत नृप ।। करम छित सुखदाइ ।।
इद्री ने गहमा निपट ।। लोभ अनेक उपाइ ।।३।।
धान कुल संकर उर दुसह ।। जो जिग पागिन प्राहि ।।
पित राजन देवन प्रसिध ।। फिर राजन मन दाह ।।४।।
निर धान निर ये संचरे ।। गिर दुतर वन वेड ।।
चारि ओर विकोर भख ।। भवतह भास्रत भेड ।।५।।
धान पुन मुदितह पायो ।। निरमल पात्र निहार ।।
उत्तर भोजन वो जीवे ।। निगम कहत उम चार ।।६।।
तो कवि जोग संजोग सुख ।। जीवण मरण निवाह ।।
स जुग अनादि अनादि ले ।। वरतन दुहु वे राह ।।७।।
चोपई:- धरतमा दिख इक सोमें कपाला ।। जन ब्रह
ससंत कहे हित दाता ।। धान पार सुरधा विजोग
विचारे ।। नर करणी सांहि आंत निहारे ।।१।। वाइवा

सिख जद सरास वेदेही ॥ सुणिलै सद कथ परम सनेही ॥
चित थिरता कीरि न दुरव धौरे ॥ झिल्लो गति निस दिवस न
धुरै ॥ २॥ सुरव दुरव काल वसह नर सेवै ॥ बीर विचखण
खबर न वेवै ॥ व्यापह सरप सीह आती वारु ॥ आतम
भूत भव भुवण उचारु ॥ ३॥ अस्वो अपरा जुवो उपाचो ॥
मदरा मृगया आतम वाचो ॥ ए धन्न सेवत पुरव अपानी ॥
निद कव से वेगे उनदानी ॥ ४॥ विररवात वसोत जगवारु ॥
कालह वीति चिरतत हित कारु ॥ :—

दूहो :— पाथ कह्यो जग नाथ कूं ॥ कीरे राजन उपदेस ॥
तो पारवे अस रण सरण ॥ जुज थिर तजत नरेस ॥ १॥

वारता :— भगवांन नद खोड़ सराजां का चिरतंत कविवा लागा ॥
जूज थीर का मन का सनेह तो मीरवंम का वच ॥ नाहं
भेजा इको कर वीचार धाग्या ॥ :— छंद वेअखरो :—

:—: कहत किसन सम जुज थिर कारण ॥ निप खोड़ सिचो
सोक निवारण ॥ संजै सम नारद रिख सद पोत ॥
आगे कहियो सरंन अतो कति ॥ १॥ मारुत नृपत
धो आगी मही पत ॥ जिण नि मं चो वासव बीजामत
सब तत रिख तिह ज्याग लिखाया ॥ जीव जौसा मुनितर
हित आया ॥ २॥ वसुह अरवेड़ा जे नृप वरता ॥ कुलीत
जिपे रुकिपै कत चरता ॥ पे सं नर जिह छमा विचारे ॥
नित नैरक करता निरधारे ॥ ३॥ सोई नृपत नित जिमही
सामी ॥ गो गठ मर छाड़े नम गामी राज सहोत्र
अजे धार भारत ॥ धू चारणत पीयो रिवत चूरित ॥ ४॥
उण छल पति तप छै छत्र आवरि ॥ सो वन कुको विहत
सुरे सुर ॥ वव चांने वसु मती विख्याता ॥ कहत सके
नर सुर हित दाता ॥ ५॥ दान छमे सलता मव श्रह
सो वन मे मह छ कह सूती ॥ भरे दशरथ आगे
स्यवारन ॥ रेक अनेकां पर्खा उचारन ॥ ६॥ सहस
दुजन जिण सहस अरव सक ॥ पे रकत आवे नित
पर तक ॥ तन क वचन जिम पथी अताई ॥ दिढ जतना

गावैी हित दाई॥ ५॥ वन जंत्र न जे तोगो वारु॥ आपी दुजनम परवां उच्चारू॥ :—

दुहौ:— दथा राजा कुहु कंतरै॥ पुत्र सकुंतन नाम जिणि॥
भरत भंद उच्चारीया॥ सुर सत अवर निकाम॥१॥
भागीरथ दलीप रे वसुधा भयो विख्यात॥ जिण
सुर सरिता आनत मा पांणी जग हित दात॥३॥
जा क्रत जिग मा सुर पतन॥ आयो सुरन समेत॥
जेण हजारां क्रिन क्रा॥ दी कन्या हित रेत॥३॥
रथ रु वली काला रसत॥ तिन्धुर दीन्हा सुजाण॥
सिंधर सिंधर लार पस॥ सह सन संख्या ताणि॥४॥
एपसि एपसि लारा सहस वछ॥ वछ वछ पजा हजार॥
दीधी जेण वचार हित॥ क्रिया जिण निर धार॥२॥
दयो दलीप-प्रपौप्र यह॥ जिण हित दुजन विचारि॥
रसत सिंधुर गांति इर तिमे॥ दीप मन मोद वधारि॥६॥
जिस तपतां सिर छत्र धरि॥ प्रथमी विरचे प्रसंस॥
सूती स्यामा सुरव समाहि॥ पवन न पैसे दंस॥८॥
तीन स वद जिप गाड विरवे॥ उहरित रहै अपछेह॥
सोड नृप मृत वासि भयो॥ सद बुधि वेहा लेह॥८॥
मांन धाता दाता भयो॥ ताको धाता ईद॥
प्रथमी जण जीतो अपमर॥ रुकण दीह निरंद॥९॥
थयो न धोय निरंद रै॥ गावज जाती जोग॥
जिण अस भेध निमंचीयो॥ संख्या सहस-प्रयोग॥१०॥
नमा रुपत चै गृह भयो अति रंक रिख उदार॥
जिण रखो क्रा दुजन कुं॥ दीय लख लख छुत्रधार॥११॥

छंद चौपई:— चिव रथ राजन चै वित धातत॥ रंभो सिरस निंदह पुत्र मह्रा भोह॥ जे रै लाख पूंते वर जाहर॥ निज पाया नर लोक निवाहर॥१॥ मेरु मेरु चउदर महा मातु॥ सहंस सहस धमा पुत्र सदेवत॥ ज्या भरत मेध जिगन कोध हित जग॥ मन वंछत लिवरे देवां मग॥२॥ अपमरीख नृप चै गृह उद्यम॥ धांम

चार गथ्यो पुत्र पग थंभ ॥ जिति सत वरख होम
कीय जाहर ॥ निज सुर मुख कीरति पत निजाहर ॥३॥ गंगा
मार जहुण जे त्यागी ॥ जेण दुजण मां दीया अथागी ॥ दिन
मांन फिरि तोरवी दिनाई ॥ अदलत जांचि किया अणाई ॥४॥
रु देव राजा अण रेठण ॥ जिण तोरवे अति धन जोध
गजण ॥ सगर नेरत अवर तिर भरव सत ॥ कीधा
विवध विचारणा सुभ कित ॥४॥ जाकै सठ सहस्र न
सुत जाहर ॥ वसुधा थावे दध अवरी वर ॥ तोइ
सगर काल वसि कुल सम ॥ गढ पति ज्यो निहचै
अगामा गम ॥ ६॥

दूहो:-

पिथु भयो नृप वेण कै ॥ बंस अनत अवतार ॥
तिथी कहाणी ना पेखे ॥ वसुधा छांड़ि विकार ॥१॥
जारथ केत तिल कमां ॥ अरम नहीं अनाद ॥
दोही दुसह विसंधारा ॥ मद बुधि बांध प्रसाद ॥२॥
राजा बूझ्यो तूं कुण पापी कुण संत ॥ कुण
बूझै कुण निसतरै कहीये मोह वृतंत ॥३॥
दांन अपावन हथ कै ॥ मृगया विसन वधारि ॥
वन दाहक पर धन हरक जिण पापी निरधार ॥४॥
मद सेवै पल आचरै ॥ पर निंदा मुख वास ॥
सिवग सेव अजांण कृत ॥ निहचै नरक निवास ॥५॥
गुर आग्या गुर तल पचौ ॥ दोख न लागत मूल ॥
गुर हित पर धन हरण को नांहि न कित अतकूल ॥६॥
प्राण कसट अति उपनै ॥ कै रचीये अवगाह ॥
पाहि दुह दोर न दंड को ॥ दोखन लागै चाह ॥७॥
मिथ्या हिणि पै प्राण जन ॥ विरचतो सेवन तुछ ॥
कापर अनुचर राखीयै ॥ सोभ न तिण कुछ ॥८॥
अकम असुचन सेवीयै ॥ लोजै सुभ कम चाह ॥
संग इसताची मूं कियै ॥ चलीयै साधू राह ॥९॥
दुज हंतक भिरव्या ग्रहै ॥ तजै ईरखा चित ॥
एक वखत भोजन करै ॥ सो फिर तिर तन चित ॥१०॥

ब्रहम पहारन ब्रहम कीजि ॥ जे भजे निज देह ॥
सो मारग निज धांम रै ॥ जावत विगर सनेह ॥११॥
धरम धरम नह दरवीयै ॥ अकरम गोपन खेद ॥
अपन कहयार कहणा तणो ॥ सत गुहर जांनत भेद ॥१२॥
दुज मद पांनो पाप चो ॥ और उपावन कोइ ॥
तीर संगा भी उगिरै ॥ गाल गला विच जोइ ॥१३॥
अातम दोरव अजानता ॥ लोभो मेटण चाहि ॥
पवन मथानो ऊतरै ॥ कीधो नीरा लाह ॥ १४॥
दांन दीयो लै आप दै ॥ तोल संतोरव धारि ॥
सो दुज नम उतिम गिणो ॥ भाखत निगंम विचार ॥१५॥
सुद दुजनम विरवानो भवै ॥ सूतगा खीर न खाय ॥
वपद (वेद) रजक (धोबी) धन हरै ॥ सो निज मारग जाय ॥
सुरहह वयदह धांम निज ॥ कबहुन दीजे चाहि ॥
दीनो मिठो कुंभ जिम ॥ होत निकांम निबाह ॥१६॥
कहराह साते भांति जिणोहु ॥ धरमो मिरध विचारि ॥
पदीया पारवै दुरज दुरहह ॥ जाणियै करि निरधार ॥१८॥
अपास वच सुणि नृप-पवित ॥ ताजि मन सोक समाज ॥
रथ आरोहे हलिलया ॥ हतणा पुर हित काज ॥ १९॥
छंद मोती दांम :— महा मन मेरे असोक सगुल ॥ चले
चाढि राजन राजन कूल ॥ लीयां नंद लाल सहेतु
अरस थ ॥ महा मगह ले अपसूर समथ ॥ १॥ जुज थिर
सोक जरे जग जोत ॥ परम धरम करम -प्रवीत ॥
तजे जीरांण सभीम सतेरव ॥ खरा खर भूप भजे
अमषेरव ॥ २॥ महा जुध जीधो सत्रां मिलि मांण ॥
धुरे धर भूप चले रिण ढांण ॥ सत्रां धरि
धारति भमे चाढि सोग ॥ अरीजण भीम लीयां
अारोग ॥ ३॥ पंचालीय और सवालो सधूर ॥ कुरां
पति धोत अप्रीत करूर ॥ विकोदर पाली पतंगा
वीर ॥ कैमें निज बंधव हेत कठोर ॥ ४॥ महा
समक भारथ सुर समथ ॥ चले चाढि पथ हिते

-कन हथ ॥ जमुं जम रांण सुक्र नीस जोति ॥ अह-
विद चारि चले अपण पार ॥ वहे मरे सुर सातुक-
वीर ॥ धुरं पर जोय पयो रिण धीर ॥ गजा सुर-
अगवत छात सगाह ॥ तुणे निज हार सिंगरत
लाह ॥५॥ रहे गज गांसण मंडल गांहै ॥ उरै वत-
धूप अनूप अमांन ॥ उछावत माल गुडी गह आघ ॥
निमंचत नारि विना कुलनाच ॥६॥ उडत अबीरह
अंबर औरि ॥ थया जल दांन सुरंग सथोर ॥ घर
बनिता धरि मंगल घोष ॥ तुरे सुर पावत पोखि संतोष ॥
महा निज नेरय धारत सांम ॥ धजा उंड रोमत
धामह धांम ॥ जुज थिर राव महा नग जोय ॥
न मा सौ थां नक्ष आवि प्रथीय ॥७॥

दुहो :- जर चारति सम अगवीस ॥ इ-चना धुर धुर राज ॥
वहे मदंधी छत्र धरां ॥ बांचे विरदां पाज ॥१॥
पुर जन मन अपण दिया ॥ सुणि जुज थिर छत्र धार ॥
जांणि क माधव आगमाहै ॥ बन पूतें निर धार ॥२॥

छंद वे अखरी :- जुज थिर जोरे आरथ दुर जारी ॥ आपे
गज घर स हत निवारी ॥ पुर जन बांटत भेंट
प्रकारे ॥ निच निचर नृप सुख-प्रीत विकासे ॥१॥
राज अबीर गुलाल उडावे ॥ चावत माल महा दुख
चाढे ॥ बंदी जण बहु प्रीत विचारे ॥ मागध उत पाठ
सहित उचारे ॥२॥ सुत पुरांणिक पाठ सराहै ॥ गुण
निज उत गुणी गण अव गाहै ॥ सहचर सकल चपल
सुणावे ॥ गोरवे राज मतो लो गावे ॥३॥ माधव
सम नृप ६ छवा संभारी ॥ धम सुत वणि रैहा
धाम धारी ॥ हरे उदे जद सब दुख हरता ॥
कीधो नृप अप्रमरेख अधरता ॥४॥ परम कृपा
जुज थिर पर पूरण ॥ थिर गज पुर पायो खल
चूरण ॥ सिंधासर निज धाम तहै सुर ॥ सहते
संचारी प्राटण की सुर ॥ साजो धन धाम रहित सनेही

लहै विकोदर वैता लेही ॥ दुसासण वालो सुखदाई ॥
काधे भुज वीसे सहत अदु राई ॥ ध॥ दुर मुख लगा
मातील सुख दाता ॥ वंछक पाया जसं विख्याता ॥
गौतम गाई कृपा चार तुण्यानो ॥ वसीयो कलह
उचारे वानो ॥ ६॥ जथा जोग सब राज थांम जुत ॥
वारि थपा बोलण दिन वंछत ॥ धर्म सुत थांम
राज खिनोया धर्म ॥ प्रीत उचारत सुणत परा क्रम ॥

दुहो:- जुज ष्टिर राज प्रबंध लाहि भारथ जोधे निबाह ॥
जस ख्यात करंम ॥ रिपु थरीयां थन्न वाह ॥१॥

कवित:- एक दिवस मुख समै ॥ ध्यान वसि पेरव मुरारी ॥
जुजष्टिर जद बूझियो ॥ कहो कारण चक्र धारी ॥
तो जोवत जोगिंद ॥ महा मुन इंद निहारी ॥ विस्न
महेस ध्यांवेस ॥ ध्यारव परवरदे न धारत ॥ करता
करमण काज कहो ॥ तुम मन ध्यानह धारियो ॥
मम कुंधिन पावन मह महण ॥ जोकु तुम संभारियो ॥
हरि तद पर दुखह रण राम सम टेपह उचारे ॥
दुं भीखम चित धरत जेण खत वंस उधारे ॥
सपत चीक सम करस ॥ वहिस रटै सम रंगण ॥
उर धरेत ध्यानमां ॥ जको रहियो लगि तजि कांमणि ॥
दिखणाण भाण चित टीरव जिणि ॥ काल कवल
हुम धीयो ॥ पोढि या वांण सज्या अमर ॥ तन बिरत
खन जानत वसी ॥ २॥

दुहो:- हरि भीखंम गुण उचरे ॥ कहियो संम जुर राज ॥
चालो पितरमह पासि रघु ॥ सुणिवा नीत समाज ॥१॥
जुजीषर सुणि कथ नीत जुत ॥ हरि मुख हेत लिहाई ॥
रथ धारे हे उतलियो ॥ दिस भीसंम निरधारे ॥२॥
ध्याया भीम भाया मणी ॥ जुज ष्टिर सह जदुराइ ॥
पेखन भीखण वसु मतो ॥ सिर सर सज्या आइ ॥३॥
बुरा बुरा कुं भोगवे ॥ भलो भला का नीत ॥

छंद बेअक्खरी:- जुज ष्टिर भारथ भीम दुराजर ध्यायो दिग–

भीम खाड़ि आतुर ॥ खोहण अठारह जेथ खपाणी ॥
देखा सीणी अतिहि रंगाणी ॥१॥ गज ढलीया पड़िया
गज बंधी ॥ नर ह नर थ्या रुधिर निमंधी ॥ सिर
हाला पड़ीया धर सोभत ॥ लोह तीख धाव
निरख सलोभत ॥२॥ छत्र चामर पड़ीया धर
छाजत ॥ जलद वितान सपेतह लाजत ॥ ग्रीधरा
बैठी धड़ा गला रै ॥ ऊंचै सुर त्रिप कीत
उचारै ॥ ३॥ कै कागण कुल कीत केड़ा कै ॥ चोकर
आन उर जंबक चावै ॥ तिवा सकोहक बचन
सुणावत ॥ पेखे भख पुरण सुख पावत ॥४॥ वल
चरनह सकल चो पावै ॥ अति हित कीरत
करत उलावै ॥ भूत पिसाच वीर वैताल भख ॥ पैदल
चोहत वोल खत पर नख ॥५॥ असि तन भुज गंज
अमंखह पिड़ि सुर पड़िया निरखत निज प्रह ॥
समरं गिण पेखत चख भंम सुत ॥ आया पारथ
गंगेव अलोकत ॥६॥

दुहो:- जुध मुंह निहरत जदु पती ॥ आया पारथ गंगेव ॥
विच विच भ्रम सुत साम विवर ॥ महा सुणावत भेव ॥

कवित:- बांण सेज भीसंम वीर जे थी समरंगण ॥ सहत राव
जदु राव ॥ तेथ आया आणंद घण ॥ निरख चरव
भीसंम ॥ इम सम क्रिसन उचारै ॥ अहो नाथ अनाथ
मोह निज संत विचारै ॥ मुनि इंद निरंतर ध्यांन
करि ॥ तोखो जत असरन सरण ॥ मित तेमै प्रतख
दरसण अमल ॥ मो सुजि दीधो मह महण ॥१॥

दुहो:- कहो अनाथां नाथ जदु ॥ सुणि भीसम निरधार ॥
मम आग्या लीहि खत धरंम ॥ जुज चिर भ्रंम निवार ॥
देव वरत जदु हरी सरस ॥ इम कहीयो हित मांनि ॥
मोण्य पत परणह विधा ॥ तुम सब वान सजान ॥२॥
गिर वर धर जद फिर कहीयो ॥ सुणि भीसंम निरवांण ॥
निरत कर सीतल गिण नहै ॥ त्रिहुं लोकन बुधि वांण ॥

हूतो मै करि भारव हुं॥ चत्र वरणां जाति सार॥ वरण
विया सब सोरव हुं॥ अब तब सोच विचार॥५॥ हर
इच्छा संतन सुतन॥ छंडे वरण विरांम॥ कहिवा
सब ही राज निहत॥ कीचो कंठ सकांम॥४॥
छंद वे अरबी:— जुज थिर नम भोसंन दुर जारी॥ अति हित
राजन नीत उचारी॥ गज अंकुस हुय मुरव लगांवह॥
राज नीत जिम जगतह जांणह॥१॥ ब्रहमह देवह पुजन
वारु॥ कहीयै नृपत अति हितहि कारु॥ करमउ-
दाची वात सकारण॥ चारन चित राजन चू चारण॥
कोमल कठण विरल हित कारी॥ विच विच राजन
नीत विचारी॥ आगौ मनू कहेयो सुजि अति हित॥
सो सुणीयै मन करमां संजुत॥३॥ जलह अगिन
पुजन उरवल अजण॥ वरखि लोह उव लधि पुरण॥
जलोणि जल हला पातल तपह जुत॥ अपचो हटत
वरवांणो॥ अकत॥४॥ मित्री ब्रहम हुते खम रा खर॥
आपव कर मलहि नखै आतुर॥ तिह कारण राजन
विप्र पुजत॥ अन हित करम हुंता अमुकत॥५॥ पुज
पोउण सुच मत्री पेरवै॥ आद चरम करम अव
रेवै॥ खट राग सारि चा अलह खरा खर॥ जल
अगा नाह स सत्री अति दुर जर॥६॥ बना पसावो
लेनो वारु॥ आतम रच्या सुजस उचारु॥ त्रिय
कोमलता अति हिन कांमी॥ गज मद विण जेही
दुर गांमी॥७॥ मावत अनुचर जिण सिर मालै॥
खट नह सोच तिको चह चालै॥ माचन रव
जेही भुज मंडल॥ तत नृपत पण रहणा गाति सीतल॥
विसन नीपति अति कुहु न वारु॥ क्रम क्रम
चेतन ता हित कारु॥ जरम वंती अप्सत्री गाति-
माति गिणि प्रजचा जतन नृपह हित करण॥ छमा
नृपाति मुरव हारत न छाजै॥ अप्र साम मोन महा
तम भाजै॥ उदै मत भांणी ~~देसहन~~ नृपहन उतम॥

पुरत रहयो जुगह पग क्रम ॥ ९॥ पाई अंदर गाते
त्रिपह सदाई ॥ आचरणो पर धारहे प्रभाई ॥ दुज
पर पेसी धरम दुरावे ॥ पर से देखी सोम न पावे ॥ १०॥
सुत दुर चारी नयह न सेवे ॥ वि च विचनीत धरम
सुजि वे वे ॥ नगरह जिम दूपन मंजनन सहीयो ॥
गढ पाले चित परजा हित गहियो ॥ ११॥ सुनी उदालह
नत नीत सू के ॥ चित सुच प्रज पो हित हन पूरे ॥
दान नृपति निज हथे देणा ॥ आतु पर हित कारज
ग्राहे लेणां ॥ १२॥ स्वामी नि.दर जेम सदाई ॥ रहणो
यूं पाति सैमह माई ॥ सेवग छत्र धार सर मर
सोहे ॥ छत्र चामर इक चोचे विमोहे ॥ प्रज
रंजण नृप कष्ट न पावे ॥ समर परोजे कहूं न
आवे ॥ माहे पाते न्याव अन्यावह माने ॥ ताको नृप
जगतह नीति जांने ॥ १४॥ दीचो फिर सुव पाति नन
धारवे ॥ रित छे हुवे उदित चित रारवे ॥ चन
उकै प्रज दुरव छत्र धारक ॥ सो सावि राजन हन
हित कारक ॥ कपटी उर्धी सुव अकरमो ॥ धुरि
देखतां कोटे नृप धरमों ॥ गुणह सर करणां अवगाहे ॥
सो नृप चित अपणो दुरव दाहे ॥ १६॥ प्रज
पालग सोव साति सुप पाते ॥ इन आपा पाहिले
पाकृत ॥ सर आरिव चा दुरव सिरा सर ॥ तजण
ग्रहणा दुहवे दुस तर ॥ १७॥ वेद आजाणत ब्रहमन
वारन ॥ छाग परखत तजणो छत्र धारन ॥ गामी जाति
सेन वन ग्राही ॥ क्रम ही क्रमण प्रतिहि अचाही ॥ १८॥
लारवे न्याई चान छोन न लीजे ॥ सत्र चौ नीरस दिन
मै तद कीजे ॥ पास कुलीण पुरख पारत्त दीयो ॥
नांहि न मंत्र भरोसे रहियो ॥ १९॥ वापरी निरधन
नृप वैरवे ताको अधि लंबन अवैरसै ॥ अपात दुखियन
पे चोरज आवे ॥ कै सासु का कष्टह आवे ॥ २०॥
राजन ओगा सूर जान रहणो ॥ आहू तो निज संकन

करखौ ॥ :–

दूहो :– वैसं पाइण सम विवर ॥ जनमे जैं रिख राज ॥
राजसबद सो प्रछिये ॥ कारण कहण सकाज ॥१॥

छंद बेअखरी :– कहत त्रिपत सात अंग सकारण वेद विचारह
जगत विथारण ॥ त्रिभंग अमात सुरख्य मिनह पुणि ॥
देस कोस सगढ सेनह धारण ॥ स खट ही राजन जतनह
आनि वेद बतावत मारग रवत व्रित ॥ नृप उरेम
न दस दिखन निवारै ॥ चू चारण मि वतोनन चोकै ॥
काम क्रोध तन सरव प्रकासै ॥ मेदन पुरख
विगाडि नन आसै ॥ मृगया जुवट अमल्री मद
मत ॥ यां चुप चीतुं वंची कामद अधै पात ॥३॥ आंठी
कठण डंड अातम वच ॥ याग दपरथ दुरवच क्रोधा
क्रिया ॥ वर पोवर चाल चार अवर विरध ॥
वै रवांणी नीति दोसै पर तरव ॥४॥ अोजन सुचेता
भुग तण भारी ॥ अनु चर वध रिट लोरिव
हित कारि ॥ अप्रै अज ईह इह नीत उपाइ ॥
अपत अलोके सध वन गाई ॥५॥ पंच हजारां सिव
फिर भोरवी ॥ देव गरु श्री सह संतोरवी ॥ सुक
सहस रक फेर सराई ॥ राज नीत इने मिल गाई ॥
वीर सपत सासत्र वदि निज बुध ॥ सोमे सुणवच-
छतां हित सुध ॥ :–

दुहो :– सुरां सबे मील अरिवेयो ॥ ब्रहम सरन निरधार ॥
रवीयो इक तेज सई ॥ सत नर धरम उधार ॥१॥
वीर जात जद अज रचै ॥ भ्रम रिवग भ्रम भाव ॥
तोके थयो रवेरत काहि ॥ जैके उंड धराव ॥२॥
तोके अंग प्रथी पथ्यो ॥ नात सुनीत न नाय ॥
पायो रिवन सराप थो ॥ जिहि पंचत कीयाय ॥३॥
जोका उर मथाणायी ॥ थयो निस्वादन रवेद ॥
जो कुं गिर रखिनर दयो ॥ नारनो लोरिव क्रित भेद ॥४॥
दाहिण भुजा अधौलतां ॥ प्रगटे प्रिथू नरेस ॥

हरि अंसा अवतार सारि ॥ सेस महेसां मेस ॥५॥
जिहं प्रज पालो हित जुगत ॥ पद वी राजन पाइ ॥
खतता दुज निरखै छिपा ता तै रखी कराय ॥ ६॥
लिखमी धरम रु अरथ जुत ॥ जोहि वध वसो विचारि
ता तै बस करतो हुवो ॥ जग सारो नीर धार ॥७॥
राज सबद प्रिथु पांमियो ॥ प्रजा हित धरी प्रमांण॥
फेर कहायो छत्र धरे ॥ उण धा रखे विनाण ॥८॥
चातुर वरण रो धरम फिर ॥ नीसम अपरवत चाहि ॥
नव धरमां सब कुं गिणत सारिखा जग मांहि ॥९॥
क्रोध विडरन साति कहया ॥ रवि मा नोयसु प्रीत ॥
सुचि या धो हि कांवेर ॥ कोमल सेवग चीत ॥१०॥
धइन्द्री दमणि दुजन कुं अरि वेदा अभ्यास ॥ लेणो
दैणो दान फिर ॥ जिग दुजु वे घर कास ॥११॥
विनो धरम देणो दान कुं ॥ लेणो नही विचार ॥
जिग कारणो सो कुल धरम ॥ नहिन कराव ब साह ॥१२॥
वस कर वध री त्रिपत कुं ॥ उदिम भलो कहाइ ॥
प्रज पालण माइन धरम ॥ जावत कहत विलाई ॥१३॥
वर सन सुचि रहणो सदा ॥ पसु वन पालणा चाहि ॥
वित अनुसार न वांटणो ॥ नित प्रीति कृषि अवगाहि ॥१४॥
सुन्दर कुंती य वरण को ॥ करणो सेव अप्रीत ॥
तन जोरवा पर धारणो ॥ धन नइ धारणो प्रीति ॥१५॥
च्यारह आश्रम क्रम हैं ॥ कहन जाहि वन मास ॥
लिगमो भारवत हित जुगत ॥ फिर चोथो सिन्यास ॥
दुज कुं धन गह धारणो ॥ खिरवा न हौणो जोग ॥
व्याज विणज जन हु सेवको ॥ जयें न करणो सोग ॥१६॥
विप्र नृप सेवा उचित नह ॥ वण जांणो वय लोर ॥
विरख सेवण गांमरी ॥ सनहे दुहु हित कार ॥१७॥
निरस मर जाय करनर कुं ॥ दांनने दैणो चाहि ॥
नारायण अपोसें रहै ॥ सो दुज कुल मम मांहि ॥१८॥
चोथे आश्रम जोग नहे ॥ विनो पन वंत विख्यात ॥

वै चौलो सुन्दर जदे ॥ जांणो वन रहित वात ॥२०॥
पन्न वरण अै धम चलत ॥ त्रिप सैलो निरधार ॥
नीत विहूणा पर वैर ॥ अनरथ अनंत संसार ॥२१॥
विसन व्यापा चार सेजो ॥ तौमें खत धरम वाधि ॥
तो बिन निर मरजाद हौरा ॥ तस करसन उपाव ॥२२॥

कवित्त :- सांनह धाता रूपत ॥ जिण न रचीयो हितकारी
उत्ते ह अकत करे ॥ तहां आयो गिर धारी ॥
मही पति सम अपरबीयो ॥ संगि वरदान महामारी ॥
तद राजन अरवीयो ॥ सोहु खत धरम कहेतु
सति ॥ सुर पति सरूप हुवो दुख हरण ॥ जोगि
कहो इम उचरे ॥ खत धरम सारस बिच अखिलो
रिवत ॥ इम धम जो उन पर वैरे ॥१॥ हरि खत्रीया
गुण ग्रहे ॥ मेछ हिर नाच पछारे ॥ सिव उहीज
गुण ग्रहे ॥ फेर त्रिपुरा सुर जारे ॥ राम वीय
माहि रांण ॥ रांण गुण जेण संधारे ॥ तेण
तेज पुंठराय ॥ इद वेलासुर मारे ॥ खत ध्रित
ग्रहे करसो धरण ॥ खत्री अंस धायो अविल ॥
तिह मीठ वियो धम सीतलां ॥ अवण अवन
नांही उत ॥२॥

चौपई :- सेछो धरम फेर महि मंडल ॥ मन धाता पूछयो
तजि अखिल कुरत मल ॥ वासव जद भाख्यो सुविचारी ॥
इह धम सुणि रूप अहंकारी ॥१॥

दुहो :- मात पिता हित मेछनै ॥ महि पालण मरजाद ॥
राजन सेवा राखणो ॥ जापो हुं पत उाद ॥१॥
दैस ऋद्यापै देत पति ॥ तन हन धाटत धार ॥
ताको आई पर लौक मां ॥ औरत घटत संसार ॥
पुनि पापन की सुप अनु लगा तदसा अंत आनि ॥
तातें धेत न रहण नित ॥ ताजि आलस अभिमान ॥
ऊरमा है त्यो आठ कही ॥ सत त्यो तितणि लोह ॥
धरमा त्यो कंधन दिठ ॥ संनह वाव विमोह ॥४॥

जिसो ना लहै नृपत कूं ।। करत सबह जतन पार ।।
जुड़त नहीं न धर्म चाह ।। इह हित चित बिचार ।।

छंद बे अखरी :- नृप बिण देस न कूं सुख मानै ।। देस बिना नृप सुख हन जानै ।। राज कुली न प्रिथी राखीजै ।। तुबै अराजक प्रजह नि छीजै ।।१।। मछ गन्ना गल जे थह मंडै ।। सबही आतम धरम बिखंडै ।। सबल निबल बिण नृपहन मारै ।। लेक लेक कै मूल उखारे ।।२।। प्रज दुख समीपै पुकारी ।। करि हा हाक अति सुर भारी ।। प्रजलह मनु मलाई अवनी ।। जा करि पालि छौलि तुरत बनी ।।३।। इसमैं भार प्रजह तिहि दीधौ ।। धरम चौ आगह अति हिस कीधौ ।। सुर गुर कूं इक कथा सुहाई ।। मनु मुनि पुधी जग हित दाई ।।४।। प्रज तिहि बिच बाधै पर पारिन ।। तिहि बिच धरै कहे सुनि कारन ।। प्रज राजन प्रीते बाधै यह ।। धर तह ना नीत धसंतौ राजह ।।५।। गउ बन गवालह अरे गहरै ।। तर अरे पंखी सुख बिहरै ।। राज तेज बिण राह सिर जै ।। दुज पर धेन अरह अगूझै ।।६।। धन बिण नृपहन कोइर धारै ।। नृप बिण नरस भर अक्रम उधारै ।। अगनी अरक कूं मेर बरण अखि ।। प्रिथमी पालि लैणी जारी पर तख ।।७।। अदिपण अजिन ह असह उकाहे ।। भारत कर गाति इन प्रज भाहै ।। वै सम्भ ह जेम छाति धन वांटै ।। कुलत अपर दल जम हस कांटे ।।८।। नृप कीत पण पर धांमन मानै ।। गुर धारी मांत्रीन बिछानै ।। इन्द्री जीति पहला करि आव हित ।। ता पाछै तिथि पालन हित ।। गढ जल जतन मग्र हित गाही ।। चर धातर करणो दल मांही ।। गुण वान हु भी प्रीत सुगरानी ।। नृप राखत ताजे इन अभिमानी ।।१०।। कांम

दांम अपर मोह न आंणे मोरे ॥ पाछै लो रुप उंड
प्रचारै ॥ अन धन त्रिप हेत सेवत उदीम ॥ गिलण
निस दिन अरि हर अन जाम ॥११॥ दृग दोला
बुंदी विरख लहीयै ॥ चैत न चाचौ पावन-
ज हीये ॥ धर जट दुर अलि ही बल घोरवे ॥
लिण संग्रह कर दुंम लुंतोरवे ॥१२॥ वैसं निरै
वैसाख जेठ विच ॥ सब दिन वचन रहावै
त्रिप सच ॥ राज मांग रुप दोरख रारवै ॥ पिछ
चित कोसन चोड़ै धारवै ॥१३॥ कांचो गढ लायम
न करणे ॥ चहुं चारण पर जाहे विध धरणा ॥

दूहो:— भीखमां जुज पिर रुचिर ॥ पुछत राजन नीत ॥
सुणतां सकल मुने सरां ॥ छांड विखादी रीत ॥१॥
जद संतह सुत अरवीयो ॥ सुण धम सुत विचार ॥
डंड सनीति अनुसरै ॥ सब मारग निर धार ॥२॥
करणा सब ही काल कौ ॥ जुणि जुग पिर जिय हेर ॥
राजा जैसो धर वेरै ॥ जुग जैसो अन फेर ॥३॥
कुल जुग माहे लुंड जे ॥ मिरऱ्या धरही चीत ॥
दुजनम सेवा अनु सराहै ॥ तज कुल क्रम ची रीत ॥४॥
मोल बदलीयै रुपत की ॥ रस खुटत संसार ॥
प्रज पावत दुख दाह सब ॥ जल हर खंडत धार ॥
छत्र धारी छत्री सगुण ॥ ग्रहणां अंग अगाह ॥
तोमी दुख लो चरम जिण ॥ अर कोमलता काह ॥६॥
निर मोही काज कारज करे ॥ समर भय कोल लोण ॥
दाता धको आ पावनूं ॥ दांन न है गिणहीन ॥७॥
आपण थी अन भेदता ॥ गोत नह तत संग्रांम ॥
उंड न अपै नात विण ॥ लोभी दियै न दांन ॥८॥
पुजे पाखह मन वचन ॥ देवन सिव उदार ॥
कालह आरसे अनुसरे ॥ गुण गाही दिल धारि ॥९॥
दुंज रवट करमीं देव गिणि ॥ मंची खट गुण सार ॥
ब्राहण चौं [illegible] ता ॥ सुड करम्ह अनुसार ॥१०॥

पत्रो नाहक गाम अच॥ सिव शाही प्रसाद ॥
सो दुज नम चंडार गिणि॥ भागवत वेद विवाद॥११॥
दुज मुखो नस कर करम॥ जे साहे क्रम छाडि॥
तो को दोस नरेस कूं॥ पुरण लहुत बिभाग॥१२॥
दुष्ट रजन वन विरचम विच॥ वेद पढन अहेत॥
ता कूं निसचर राहि चलै॥ मन वच करम समेत॥१३॥
जद नृप काढ़ियो दुस्ट सम॥ मो किम बाधा देत॥
मेरा राज समाज मां॥ नह को पाप समेत॥१४॥
सत कोटी मार जाद मां॥ धरम धारक गुणवान॥
मात पिता वाले नगर॥ अधम राज महान॥१५॥
ताम सुणे नृप वचन सति॥ जो तजि दुस्ट दुसाल॥
सुरव विहरत सुभ करम सम॥ फिर आया ग्रह बाल॥१६॥
इत पक सत को अनु-कमे॥ भरिवस कहत वृतंत॥
चिहु बरणन को अग्र जिम॥ काहियो धो सातंत॥१७॥
हरि मुरव थी ब्रहमा थयो॥ तिणी सत बाहु जाणि॥
उरे थी थयो वईस था॥ पद थी सुद्र प्राण॥१८॥
दुज आगण भूपती॥ खत पै पै अम रवेरव॥
धरमह रखण दुजन सो॥ प्रजेर खत्र नृप नेरव॥१९॥
जेठी पुजनम पहम गिणि॥ खत्री कजेठि जांणि॥
पति छत्री हीण संपेरव मति॥ सिदे बरबट तांणि॥२०॥
खत्री पराक्रम कीर अधिक॥ जो यै जोरि दिखाइ॥
पाछे विप्र कुं अपो पे॥ थावर लहत सुभाइ॥२१॥
ग्रीरवम सहे सुरव सहं॥ आसे जल तर वाय॥
अपीगन आर के अरव बी करो॥ सिउ लेनो विहाइ॥२२॥
यो रहित वेद पुराण मा॥ जोग जोग विचारि॥
करणो नृप कुं नीत जुत॥ धरम धारक निरधार॥२३॥
इत क्रासि मनु पुछी यो॥ खत दुज थई उरेबत॥
दुजा वाचो क्रीस कुण कहे॥ मो कुं सद बुधि सेतु॥
खिरव सरनथी दुज नम्यो॥ सुकृत जले बीन नीत॥
का चोत सिकर अधम कृत॥ दुजनम खवीय पीत॥२४॥

विप्र पावी-ना पोरव थी // व्यापत जगत विराम //
एके ग्राहे प्रजलत हुवां // दग्ध हुवत सब गांम //२५//
प्रज सुरव पावत राज थी // रक्षत-पोहित हेत //
इसतरह वरते है दुजन को // ससवह सनो निचेत //२६//
दुजनो चान तस कर हरै // सो सालव भूपाल //
वेद कहत इणसो लि.यै // लागत दोस निहाल //२७//
विप्र इपोसे पंरवी प्रकरि // सुरव विहरत वन मांहि //
तिम प्रज इपोसै नृपत है // वेद बतावत यांहि //२८//
आपद पड़ीयै दुजन कुं // खत वइसन विरवनार //
तेल लुवण मद इपज सुवन // रजत जणा निरधार //३०//
रुचतो चारमह वल वधात // बरतता धरम विहीण //
वेदा मारग चालत थी // नृप तप परतीन खोज //३१//
रवनी दुजन कुं दुराहै वै खतह खटा वरण सार //
ब्रहम करम तप आगर थी // प्रजलत दुष्ट संसार //३२//
विप्र कुं तीन प्रकार थी // दाह णो सरत ने विचार //
आपद गाढ विग्रह विरवै // वरणत संकर सारि //३३//
प्रज पाले सो नृप गिणो // चोरी चुरह बहाय //
विनै परा-क्रम काहिना // न लहै सोग है सुहाइ //३४//
रजक कृषी सम दर सणि // सत गाही चित लोभा //
मिथ्या त्यागी इपन दमी // काई जैं विप्र प्रवीन //३५//
वेदह मा सरधा रहो // तातें दीजै दान //
इपोहै जे तप जिन इपनुके मै // इपोही जामुगत इपचार //३६//
नासत कबह न दांणो पै इपासत रही पै धार //
नासत मा इपोसत नहीं // इपासत नास निहार //३७//
कुड़े साच न बोलीये // साचे कुड़ेनो इपाग //
साचे साच वहारीयै // कुड़े कुड़ विभाग //३८//
नृप को इपालस-प्रज दहै // विस वारती जिम-नाग //
क्रिरव करता जात उरण है // मन-पती लगइ-पांणि //३९//
सम भागी गिणीये दुरवी // सोनाह रजीयै बांध //
नृप को मन दुरवत धकै // नह सुणीयै उपहास //४०//

कीजै मित्र कुलीनन सूं॥ सील सु बुधी जांणि॥
तातै असुभ न उपजै॥ ते चाहे निरवांण॥४१॥
साच असाच बिचारिये॥ गीतन बंचीये बीर॥
बुरो बुरां सूं भोगवै॥ भलो भला की नीत॥४२॥
होइ भांतन की बिपत॥ जिन जातम साधु सार॥
ताकु अंतर की अछनता॥ उभ चौडै तिर चात॥४३॥
३१ लाख रिख कोसल सोरत॥ कहियो निज सिरतंत॥
रौर भीखम जुजठल सरस॥ भारवन बांणो त्रिमंत॥४४॥
दं के असरी:- काल सारिख एक काग बसायो॥ तिहि
नातो को अन राह पायो॥ खेम दास त्रिप सुबध
सकांमा॥ सो कोसल देसन को स्यांमो॥१॥ रिख
तिह त्रिप कुं ध्यान जुहारे॥ ता को सुभ कारज
चित धारे॥ मही पत कै मंत्री धन हरियो॥
सो बाइस ते अगट सकरीयो॥२॥ तद चावे ही मंत्री
बाइस समरयो अपनो अप्रसन्न राज सुधारयो॥
रिन सम लई कहो काति राजन॥ उत समाह
क कहौ सकाजन॥३॥ सुनि जदं त्रिपत बतायो
दावो॥ अपना हित को जगतह चावो॥ तीतर ता
उदरन गात निर काणो॥ वे तही सो अन हित प्राणा॥
त्रिय तो राज अध्यय अब छायो॥ सत भारवी जागत
पुरख थायो॥ सीत न वा दीजै मना वड वोधे॥
तेरो तिस हित पर कर हित सोवै॥४॥ बेल
बिरख चौ अपारै वाचै॥ उपरि सिरतन
तीनहु दृढ बांचै॥ पुर मंत्री आचरि गाते दरग॥
करत नृपत चो तैस प्रकारण॥५॥ बिरख चार
सठा जेम अध्यम वृत॥ उर कुमारगी मंत्री
दु चरित॥ नृप निज छमा पुरख तिर चाही॥
चाहीजै आतम हित काजी॥६॥ सो पुरख उपरि
अरात बंचै॥ अहर ग्राहि ती चित बांचै॥
कुल पर बीतन सेवक करीयै॥ अकुलह अगामी

चितहन चरीयै ॥९॥ चंचल बुधि मंत्र न चाहीजै॥
वेरी ऊंमी सु चीर हरीजै ॥ बीज खीज थी सुजल
बिडावे ॥ तिम बुर मंत्र प्रजा धन जावे ॥१०॥ जो
बचने प्रालस मन बोरखे ॥ सौह सब चिंता
राज संतोरखे ॥ तिनची निस दिन विपत संभारै ॥
मन सुचं रौ अपनी निरवारै ॥१०॥ सो मंत्री
नित प्रति टप तैसै ॥ खरा खरी नाई प्रहल खेवै ॥
वाम्हा खंठ जठर बुर वादी ॥ अप थाई सब हित
घणी अपसाधी ॥ ११॥ रातां तम मिरलात उवरीयै ॥
तो मन दाह अपूठी भरीयै ॥ उच नीच रु धानरु
अवहेरिवे ॥ मंत्रह इरीयै विवधं बीतरिवे ॥ मंत्रम
चयानै चौड़े सुणीयै ॥ बुर बन विरव मन
कबहु सुणीयै ॥ १२॥

दुहो :— काहयो खेम निरंद कूं ॥ कोलिख रखि उपचोद ॥
करणो सो भीखम कहत ॥ नृप राव कुं निरधार ॥१॥
दान सम्मनह दीजियै सारी सो भ्रत थाघ ॥
मान बिहुणो दान सब ॥ जिम भोजन विण साग ॥
विद्या काठी चार बुत ॥ अवसर सुणां जुत सुत ॥
गुर सुं दुंद सुं कीजीयै ॥ राजन मंत्र अयुत ॥३॥
दुर बुधी मंत्री तरस ॥ प्रज पावत दुख दाह ॥
पंखी जिम सीचांण थी ॥ बारत फिरत अथाह ॥४॥
बादर सारवन वेरीयै ॥ यथा बरीचे डंड ॥
मगा चुकरा बुल बांन कूं ॥ देणो बोध अखंड ॥५॥
बुत इतण सौ नृपत कुं ॥ है धुज हंता दोख ॥
तातैं अपनो बोह बल ॥ दीजै दिखावै मोख ॥६॥
जोगै सत गुण जांणीयै ॥ सो करणो धर चाह ॥
सुकुल सुसील सुभारव धरव ॥ जीम राज था सुराह ॥७॥
धर चातुर चा गुण नृपणा ॥ अचरी प्रागम अथाह ॥
एक मंत्री चा कहत है ॥ भीखम आंगल राह ॥८॥
निराह खंच बेसरबला ॥ आगम लत न नीह ॥

चीर सुदानी मरत्र निमल ॥ रचनो जुह नेह ॥९॥
काहुंसो कारउ वलो ॥ जत्न नप सीत सहान ॥
भीखम भारवत या गुरुा ॥ नृप कीजै परचांन ॥१०॥
घर गह सुर रहावीपै ॥ संचीपै भीरवद छंन ॥
चवच निजह सचारीपै ॥ यह सग नीत समांन ॥११॥
नप कुचर चरवजोवको ॥ निस दिन घर परदेस ॥
ठरि हित लेणो गहल ताजि ॥ तापस खबर लेत ॥१२॥
प्रज कुं दोई भो मानिपै ॥ नस डर ठाकम दुठ ॥
धन उारक दोनु दुस्सह ॥ दोनुं नाकम पुठ ॥१३॥
बैल चरा ई ओवीपै ॥ दुरबी न दीजै ऽपार ॥
नाकरी का चारि मै ॥ धान लेतो निरधार ॥१४॥
प्रज पै नृप चाहत सुधन ॥ धन खुटै निरधार ॥
मचा डर यो हरीले ऽपत है ॥ जिम वारता चिवहार ॥१५॥
बेलाड़ी निजर मेरू ॥ मुख राह पर धार जात ॥
तो से प्रज पैले वचो ॥ राजन वित विख्यात ॥१६॥
उगा चु ताकुं दाहीपै ॥ दोरवा दाह विचारि ॥
मद पानी जुवो सुमह ॥ तेगीपि ऽवगुण
डार ॥१८॥ जो धन वाना देसमरै नृप ऽरां विचारि ॥
डाड़ी ऽपावै उाम ऽपराम ॥ काज सेमै निर धार ॥१९॥
ऽपयणो कीरत ऽपनु ऽमै लुणि का हपत सदाइ ॥
जात धन जतन चालोपै ॥ तव विचा उपजस पाइ ॥१९॥
राजा राजन नित सु ॥ भ्रम वाचत निर धार ॥
नित करे भ्रम चरत है ॥ रवर सबदह विवहार ॥२०॥
उतन रिसी उच्चारियो ॥ मन चाता कुं चाहि ॥
भ्रम राखै थिर राजनुं ॥ राजा भ्रम हुं ताहि ॥२१॥
पापी पह विनो दारीपै ॥ ते विपरीत न होइ ॥
रहीपै ओगण उपजै ॥ जले सेवाल विमोह ॥२२॥
दुजा दुन नित डीजिपै ॥ दुजनन दीजै जोर ॥
दुजा दुह पीछे उम गई ॥ तिधमो वाल कुं छोरि ॥२३॥
सम सीवागर वाल सुं ॥ उन मातै ऽपर बात ॥

दुह पीया अमान सुं रहचौ यन न चांम ॥ २४॥
अव रागी न का कुल वंती ॥ राजन भुगतां नांहि ॥
फेर अमाद न चारगा ॥ भुचाल कुतन मांहि ॥२५॥
राजा करतै नीत जुत ॥ समोपै वरवे ईद ॥
तो सब विधि यां हत दीसन ॥ राजा पावै आनंद ॥२६॥
वस यज्ञ सु वल चीप सौ नृप चातुर हो चीत ॥
जांजौजे संसार मां ॥ सो पहु वदलै नीत ॥२८॥
राजा कुं हरि वल दयो ॥ दुर वल रंधा काज ॥
जो दुर वल हित वल लेजै ॥ तो वल जांण अकाज ॥२९॥
जे परजा की नह सुणी ॥ विगार नृपत पुकार ॥
तो देव का डंड थी ॥ पावै दुख दुर चार ॥ २९॥
प्रज पर जन मन रख जोयै ॥ राजा पालन नांहि ॥
जो की रिज संकट विवै ॥ सुखनहु पकरत कांहु ॥३०॥
नृप काई कुं मतरवे तिरखो ॥ मन करत डंड पकार ॥
तो लेकर फल भोगवे ॥ वेद वकत निरधार ॥३१॥
राजा चोष की नित सुरवन ॥ करै सतु समा चाहि ॥
तो प्रज परम सुख लेहै ॥ आनंद रयी रह ॥३२॥
नर पाते सुत कौ अकम लोरवि ॥ जो नहु अपराध रेरव ॥
तो सर मर फल भोगवे ॥ अाख्या वेद विसेस ॥३३॥
अवंलो निरचय अनाथ को ॥ जेन करै नृप पाल ॥
महा सोमे तिहि राज मा ॥ होय अवन तह काल ॥३४॥
काल बराबर नृपत हो ॥ जो राख करभव होय ॥
तो प्रज आनन्द लय की ॥ जागे सुखमा सोया ॥३५॥
राजा तापस कुभीलो ॥ जे चालै मार नीत ॥
ताकी निज सुरव उवचरे ॥ इंद हुआ विच जीत ॥३६॥
बाम देव रिख राज नुं ॥ अभ्यो वस्तु सुन राव ॥
सो करणा सब निपत कुं ॥ वेद मारग भाव ॥३७॥
गुर कूं निरस दीन सुजको ॥ राजन परम विचारि ॥
खिजट कारवे नाव ही ॥ उवै न सुलतान पार ॥३८॥
छंद पैअरवरी:- बाम देव मुनि कहत विचारी ॥ केद मग

वात न हित करौ॥ सति निह मग द्रुकै खित हित सुच्च॥
राजन पालत मोदु राज निच्च॥१॥ राजा हरख र सोग
न रारवै॥ प्रज हित सो फल अमल हु चारवै॥ मिग-
या मद रा जुटवट दुर मद॥ रा राजन तजणा वाह बद॥२॥
सिचाणा जोम अपारि नरे सुर॥ अलगो नह मिणणो हित
अवारे॥ कोमलता दाता आविता क्रित॥ निहचै सो गिणिये
माहि नर पति॥३॥ राजन सुधी परख करि अवरेखै।
दोनो दुसमण सपण विसेखै॥ प्रज पालै तो माहि
पाति सद पति॥ यां मे नही धराजे रिण खिति॥४॥
प्रजी हेक वार धन घेरखै॥ सुलताना दाखिरख जेम
संतोखै॥ निच विच जुध सुख दिवलह वाटै॥
अधरम जल छिल तिनह उपाटै॥५॥ अह मद विच
आयै विगहता तजिये कहत वेद मग नीता॥६॥
ब्रहम अराध तन धार विहरै॥ सोई अपवणो जनम
सुधारै॥ धारै सोम जेता धड़ छावै॥ रचता साहस
बरस स्रग पावै॥७॥ विरखा काल माहे जन वेछै
इम सेना मन सुरह अंछै॥ तम हर सुज नव धै
सोरवत सक॥ धन करि नह उतिम खग धारि क॥
खनी अधार सल इल तेज समर निवत॥ वसै सरज
सोन हन धीर खित॥ तन उगमरव धल धर त्रिप
तावै॥ विच जुत सो स्रग लोक बसावै॥८॥ खंध
रिख इक समै अधाणक॥ वासव पै आयो हित
वंछक॥ तहां अभ्रात आपणो अतुलत॥ इंद
जैसो देखो सुचि आकुल॥१०॥ मघवन तणो सरस
वई त्रिप मुणीयो॥ विच काढि तुम सर भरि इह
वणीयो॥ वासव जई कहो नृप सुणि विच॥
इह सम हर पाई आतम सिच॥११॥ क्रम क्रम
उह असमेद समर कीय॥ अस्वतन आगर आरे
अखोय॥ तिहि जणि त्रिपत रुह जल तोर॥ वसीयो
सुर पुर कीत अपारे॥१२॥

दुहो:- इन्द कहयो नारयंद सुणि ॥ इह सब देव प्रकार ॥
मम सामीप्य विराज जीयो ॥ सो गुण जिण परतार ॥१॥

छंद बेअक्षरी:- जुग थिर सम भीसम कर जोड़े ॥ निच्छ सत्त
पुच्छत वचन न मोड़े ॥ सत्र गुरजन किहि विचारा
राहीयो ॥ गुण अवगुण तारी किम गहीयो ॥१॥
सुर गुर मघवन सरस कहोय सुजि ॥ फो भीसम
भाखत निज भारिज ॥ निज पती सत सुकल
मन कीजे ॥ दान विदान विचारे दीजे ॥२॥ कैसी
सर कस चीत विचारे ॥ होइ अनु चर राहीयो बल
हारे ॥ सत संगड़ देणो इक साहै ॥ चित सुचवे
दातो तस चाहै ॥३॥ नृप पिंडत पूछे विरलै नित ॥
सो मद सो हीण न होवै सांप्रत ॥ पुरखह
चल हीयो होइ सांप्रत ॥ ज्यान विचारै सोइज
मिलती जाति ॥४॥ अछतह सुपन जाने फो लोहि ॥
तजो ये सो क हरख दुह न तव ॥ बांदे सार
हयो सब बोक ॥ आतम हरख न सो क उधारु ॥५॥
उदिम हत होयो नह उतिम ॥ पुरखां साहस जिते
परा-क्रम ॥ चल पुरखह सब छोरि पधारै ॥
क बुहक पुरख चलह न चारै ॥६॥ चित जो आति
ही चल ह कुं चाहै ॥ सो नाहिन हरि पुर अवगाहै ॥
किम छुत नृप हुत परा पर ॥ इम कहि यो कीलरव
सिख आतुर ॥ ७॥

कवित्त:- सेन भेद पामंत ॥ लोभ सेती अजता सत्र ॥
सरच्या वची वै धकै ॥ पहंत सेना बल
उन मत ॥ मंत्र सार गिण गहन ॥ प्रगट करणो अण
है है तह ॥ मात पिता गुर वचन ॥ तेह हित कारी
थानिक ॥ चित मात सिव आई लोक परि ॥ पामत
पुरख विचारीयै ॥ गुर वचन गृह धम लोक लोहि ॥
धनि धन सुख वहारीयै ॥१॥ दरस मोती सारिसो ॥
राक धाचरिज जांणो ॥ आचारां दरस जिसो ॥ राक

प्रतीत उचारियो ॥ २॥

दुहो :- श्रीराम ढिलन चा रूपरची ॥ भारवी नीत निराट ॥
राजन जोरा वरतणो ॥ लागु वचनी वाट ॥ १॥
करमा आलस छोर कित ॥ फिर भारत संतान ॥
ताकुं सुणि आलस तजत ॥ नर पोत सोइ सुज्यान ॥२॥

छंद वेअगसती :- एक पा करत महा तप आपादि ॥ लित ब्रहमा कीय प्रसन प्रसादर ॥ अज काहियो वर मांगि करह आति ॥ कवि जोतु जिम निज गाहि वंछाते ॥१॥ उहर कह्यो जादि सुणर अज उतमिा मो दीजै एह वर आगमा राम ॥ वैठो चरत सधन जोजन बन ॥ रोसो कोर दिये सुभ आनन ॥२॥ तथा अस्तुति काहि वारज प्यारं ॥ चामर तिर पुर तो निर चारां ॥ सरदो सिजि पालक वैठो सुज ॥ उरवे चंरे महा वन आरिज ॥३॥ एक समे जल पवन प्रयाता ॥ दुरजर पंथो सुगत दुरव दाता ॥ करत तई जउ दन गिर क्रिंदर ॥ जल पवन ह भवि चायो दुरजर ॥४॥ स्कारतई श्री राम पुरव सो पत ॥ आयो तोहि क्रिंदर निज आरित ॥ रवुद्या पीड़त तहां घरा पर ॥ समराई कथा पो श्रीराम सर ॥५॥ कर भाचो कोटर दुक्र क्रित मघन तहां करि मन भावत ॥ उरक वद भूत लाहि आ धमायो ॥ सगर नियत होइ फल दित रमियो ॥ ६॥

दुहो :- आलस आदरि करह जिम ॥ जे भाजे चित चाहि ॥
सो कर भांजे मना सलाहि ॥ आरि पर येटत दाह ॥

कवित :- सकार सुलतार सरस वचन कहिया सुविचारा ॥ कुतुगहरं तरवरां ॥ तुवत नैरा दुरव कारि ॥ जल जंतु तो विचह ॥ तासन लोहत क्रिति कारणा ॥ एह सति निरतंत वहत कीये अनुल कारणा ॥ नद जाम कह्यो नद नाथ ॥ सुणि जल जंतु काल लहत ॥ बिरव देह अतु मना सुल लाहि ॥ राम सरवा अपन पे कहत ॥१॥

दूहो:- भीसम कह्यो विचारया ~~जिम~~ जल जंतु जिम काल॥
दुख जिम गहे कंठरता॥ नह ठहणो स्याल॥१॥
कीत घण कारन तजवे॥ हर उंकुन छोड़े पास॥
बेस्या सीलन सिमले॥ मच्छ हर तजे न बास॥२॥

चोपई:- राजा चनह अभारम गुके॥ जाकी सेना चित ठहचुके॥
उतिम नर यह पै दुख जोरे॥ चंदया कसीयो नाम विचारो॥
एक दिख राजा बनह तप तावै॥ मृग ढिग नांहिन उगम उठावै॥ तहां एक जांगा सिंघ कोई आयो॥ ताकु देख हिंत सुत ~~व~~ वन लायो॥१॥ एक समय ज्यो मृग पति आवन॥ कुछ रच्यो ~~व~~ जय दुचत सधारन॥ तप जनुवां पुछ्यो तिह चासत॥ कह्यो सीघ होइ दुकांक्षित॥
इते भयो सरभर चायो॥ जाजुल तप चो हित जगायो॥
सरभ कारण जंम संचारे॥ आंमव भरिव कुल करम उचारे॥४॥ एक बासर खच्या रत आसम॥
आयो देख भरिवा अनगमागम॥ मुनि वर सरभ पेख जदु दुर मति॥ चुरि [illegible] ति ताहि फेर दीस चुरित॥

दुहो:- नृप कों नीच न मानणो॥ भीसम कहत विचारि॥
मुनि वर कुं कर पारखीयो॥ तद लागै दुर चार॥१॥
खत कुं रंज जगत की॥ करणी चरम विचारि॥
कारिज मह चै बाण हत॥ रहणो नित निरधार॥२॥
राजन रहणो मेर करव॥ ररंवह सुत सब काल॥
मंत्रन बहर प्रकासणो॥ सर दह मोरा टाल॥३॥
मोर रहत मोर आसरे॥ नृप र निज सेन सहार॥
बरहि जिम अर पाचरे॥ तिम आरे हर छत्र धारि॥४॥
माहि पति माहै पै कीपुले॥ जैसे मधु कर बास॥
पावत नत तिहि विधि प्रगट॥ परजा पउप विलास॥५॥

कवित:- फरस राम एक सोमे॥ मुंज रिख हुत उचारे॥
प्रजा प्रसन्न पुछियो॥ सुत विचित निहारे॥ कह्यो
बसु नृप विविच॥ श्रिंग गिर मेर भीयो तप॥
मन चाता तहां आय तासु दीठे उग्र जप॥ तिह डंड

नीत पुछंत दुरस ॥ तदव सुवन मुन एम कह्यो ॥ एज
त्यों इला लिहि अंतरैं ॥ तोमें रुक दुजनम थयो ॥ जोकैं
प्रभु की मसत ॥ जरम अन तिमें उपनो ॥ इतै छा ...कुर
गरम कोहित तिरहि हीने थयो ॥ प्रजा पत तदह ॥ नाम
मावी लोक कारण ॥ ताहि भृउम थाप्पियो ॥ डंड दे बाल
अविन गिणि ॥ जुत नीत प्रीत रखण इला ॥ प्रज
पाल मन मान मानियो ॥ हां हंत सबद मे इण विहत ॥
कारण करण पिछाणियो ॥ २ ॥

चौपई:- सकल सैतातर अविन संपेखे ॥ निच्छ मन एक
एक बसेरखे ॥ गिरहु मेर सुलतहु सागर ॥ सिसतु सुल
अगिनहु जत्त चार ॥ १ ॥ गजहुं सिंघ सेरखहु गुरहुर ॥
नरहु नपत नृपत दुर वर छूर ॥ कलि दुर यह कोउ
कहुं कहनो ॥ चनता धरम चरमता मुजमी ॥ २ ॥

दूहो:- डंड प्रथम दुर वचन कहि ॥ दुजो निगह मान ॥
तीजो बंध बसेरखतां ॥ चोथो धन हर रांन ॥ १ ॥
पंचम न्यात निकास गिणि ॥ खसटम अातम हीण ॥
सपतम गहना हारणो ॥ अष्टम प्रीत हस लीण ॥ २ ॥
चरम अरथ पर काम क्रम ॥ उपजत कोन कुठाव ॥
अरथह मुलक चरमरो ॥ कामह अरथ उपाव ॥ ३ ॥
कामह मुलक बिरवह कहि ॥ चोपाल बिरवह व्हार ॥
सारवह मारग निरवरत ॥ निगमी कहत विचार ॥ ४ ॥
कामा दिक रिव सम सेमें ॥ अग्यारिज भुवाल ॥
बुझियो कारण चरमरो ॥ फिर वापातम चाल ॥ ५ ॥
जैसे निज गुह अाहिब सत ॥ लागत गही ध्यान ॥
तैसे राज अनीत सुं ॥ प्रजता सत अप्रमाण ॥ ६ ॥
जे पापह कुं पर हरै ॥ ते भाले मनतीत ॥
करम बिचारैं चरम जुत ॥ दुजन सेती प्रीत ॥ ७ ॥

छंद बेअक्षरी:- धरजो चन रुक सैमे सीलिवर ॥ रुद्धयो सति
कारण चिचारट ॥ रुदरन सहस्र अहम अति उतिम
जुज फिर ग्राहि जीमत हित संजम ॥ १ ॥ चिचारट

तद कह्यो सुर सार // सजो धन सुणलै हित संभरि //
२०क समै पहलाद अनो हत // वासव सु कीधी
अप्पण वंछत //२// ईंद तई सुर गुर पै आयो // जीव
तई प्रभु सुवन बतायो // सत व्रित जद कहियो हित
संभरि // इच्छ करो व्रम मोधी असुरे सुर //३// अ-
सुर गुर तिह तालो अवहित // वेढो लाद पै भेजे
सद पाति // विप्र रूपी तद होय सवा सव // आयो
राज हरण पै ओछव //४// बिच जुत तद पुछ्यो
अन वारन // कोई पुनि पायो राज सकारन // तद
कहियो पहलाद निमै तन // पुजे मै दुजनम हित
पुरन //५// वर तूं मांगौ हित है विचारै // सो अब
आयु काज सवारे // सुर असुर उ इहो जोइ
साति // मो कुं सील समा पि महा मति //६// कवित
दया ई फेर विचारौ // कै कारज कीधौ अविचारौ //
तद पहलाद तनह थी अनुलत // वैद पुरख थयो
हित पुरत //७// पुछ्यो तहुं पितह पुर पख // है
तु जमय भारथि विच नरक सिरव // सील कह्यो
जद वाणि वयण साति // कर्म यो जद अणौ
होइ सत व्रित //८// साति थिर ताकी पुठी सहोइ //
धरि ज सम चलीयो निर धारे // तो पाछे लिछमी
लिय इन जुत // वासव सुगह वासे जन वंछत //९//
दुहो:— चितासर ह दजो वणा // कहि यो साते अत्यास //
सील सतह धीरज विखै // लिखमी लहत निवास //
जुज थिर मै सत सील नु // सेवत सहज सुभाव //
कन क करोरै १ दस सहस // तिण बेसत मुनि राव //१//
आसा सब थी दुबली // अपसा सम थी वउ //
कहियो सद सजो धनां // चितासर बल हइ //३//
कवित:— प्रितु राजन उक समै // अयो मृगया हित अरण्य //
कुरंग अंग हिण बाणि पुठ // धायो गति धरण //
रिख दिख आश्रम तरां पायो मुनि संजुत //

पाण जोड नर पाते ॥ फेर पूछी आसा गाते ॥
रिख रिखी नांम विरतंत रूक ॥ दीठो कहण
विचारियो ॥ तिहि सुणाण महा मृगिया तजे ॥
राजन गमन निवारियो ॥१॥

छंद बे-अखरी :— रिखभ रिखी सुत राजन संर सरहि ॥ बै
भारवत आसा माते वरगार ॥ रूक सभै हुं
अटन करत अपति ॥ पायो नर नारायण तीरत ॥१॥
आसा घ्राह तहां अजब वसेख ॥ आसा रिस
मुनि वर अवरेख ॥ बेद भणत तहां रिख
भवि माले ॥ मुनी वर चरव दीठा तव काले ॥
तनु नांम महा खीण तंन ॥ अतही प्रबल
कीया निश्च सजन मन ॥ सो तिह करे प्रणाम
महा माति ॥ बैठण चाहै आती रहत रिख
सुत ॥२॥ वीर दमण तहां नृपत विख्यातर ॥
आयो करण रवन रिख दाता ॥ आगे तिहनरिख
रिखन तिनह अपति ॥ वल कल दिया नहीं
मन वंछत ॥३॥ पुन इ खोजत वीर दमण
यह ॥ आसा गति पूछी हत आंपेछह ॥ आसा
सु सबलो निबलो अति ॥ सोमो रिख कहियो
रहिब संजुत ॥४॥ सबलो साति जद कहत मुने
सर ॥ आसा हुत अपलेख अपंपर ॥ तनु कहत
फिर नाम नृपति तस ॥ आया थी निबलो
चान उरस ॥५॥ जाचेग चीरज दुरबल जांयो ॥
तोष अपवग्या अक्रित पिछांणो ॥ राज इह वाइक
रिख राई ॥ पिह चाणे सुरव कीत सुणाई ॥६॥

दुहो :— तनु मुनि आसा पास को ॥ कहियो तिपह वृतंत ॥
सो सुणियां वचत नहीं ॥ आसा पासा संत ॥१॥
भीसम फिर जुज पिर सरस ॥ गौतम जम धी चाहि
करत समागम मिलन कौ ॥ सद विद्या अवि गाहि ॥

कवित :— पार जोत गिर सेखर ॥ वरख सठ सह स

दुराचार ॥ गोतम तप आचरे ॥ रहो जुजवा गज
उधार ॥ तोहि थानक इक समै आ गाम ॥ प्रथम
राज पधारे ॥ मुनि वर जद आतिथ ॥ कियो ग्रहि-
धम विचारे ॥ जम राव जई रिख प्रवित लीयो ॥
प्रीत हित धन उचारियो ॥ छिहि भांति उरण
होवण कहो ॥ मात पिता प्रण धारियो ॥१॥ गौतमां
जद कहयो ॥ सुणो ए धम राव बराबर ॥ विरचा
ये विघ विधान ॥ सेव फिर जंद विचारे ॥
मित समीपे करि क्रिया ॥ ज्या मधे पिंड
सारे ॥ इम हरी साघ इम हरी सकल ॥
वेदा मत करी लीये ॥ मुनि राव वचन चित
मात सुं ॥ तो धम उर धनुह लीये ॥१॥
दुहो:- राजन थानक वीर ह वयो ॥ आये घर दल पुर ॥
कहा करे वो रिख कहत ॥ पुछत धरम सनुर ॥१॥
जद गोतम धम सम कहत ॥ थये मिरह नृप राज ॥
वेदा मग निरधार ॥ नित दिन आचरै नृप जो ॥
सो हुवै भव चाल पार ॥३॥ प्रज कुं दुर भव
पीड़तां ॥ सुध न लीये भुपाल ॥ ताकु छिग सुर
नर कहे कीतन बंधे पाल ॥४॥ राज समूलह
सेन काहे ॥ सेना मुल भंडार ॥ तोको मुलह धरम
काहे ॥ सोचे रचियो करतारि ॥५॥ राज धरम भीसम
ने कहयो ॥ जुज पिर कुं सत भाइ ॥ फोर ताकुं प्रव सोह
कवि ॥ सहत गुणे सब साइ ॥६॥
कवित:— माघ मास रित सिसर ॥ वार सुर गुर प्रति उतम ॥
प्रसत परव पंचमी ॥ भांण उतरांण समागम ॥
छिनो जीव जुगादे ॥ भीम तुल रास प्रदी वाले ॥
नित कर गुर हूं निकट ॥ फेर आयो कालह गत
जुज पिरह सोह मेटण मना ॥ भीसम वाणह किन
तरी ॥ न्रीय नीत जिका आरण करय ॥ कवी प्रण
फेरह उचरी ॥१॥

दुहो:– अब आपद धम आखही ॥ कवि सुणि वचन विमास ॥
तर आगै मो रवट महा ॥ करणो कुध प्रकास ॥१॥
छंद वे अखरी:– धम सुत भीसम सम निरधारी ॥ आपत
धम कुमत अहंकारी ॥ विपत कठण नर कहा
विचारै ॥ आपै पर दल किम तनह धारै ॥ १॥
मुरिव धन दे आपो उबरीजै ॥ कै जाई सत्र
री सेवा करीजै ॥ नृप वत असाधु पीड़ दिनाई ॥
दै साधां अंगौ हित दाई ॥२॥ कुज निंधा
राजन हित दाता ॥ विध जुतन करै अवगर
विख्याता ॥ जिम कुव धाड़ धाड़ल छिन जोवै ॥
राजन तिम धरमह मन होवै ॥३॥ धमस धम
मिलिये धन बांधै ॥ सेना पिण धनडुं हित
बांधै ॥ मरजादा धोरह नृप मीलयो ॥ आग्य
दमी आतम उबरणो ॥४॥ जो कालक बिर-
चाहन संतोवै ॥ सो मरजादी धोर कहावै ॥ सुरै
कर धन सिरवर होवै ॥ आवी हलणो चीत न धोडे ॥
तस कर रक मुजादां मिलनत ॥ कोधो सुध मारग
अंगी कत ॥ छिगिया कीरि आवै मरजादी ॥ वरतै
वेध जु सकल अवादी ॥५॥ ताम निरवादां मिलै
समो तक ॥ ले गिणियो सब बिचे कर लोइक ॥
तद रण कहयो सबै मिलत सकरै ॥ अब मम
कुधो पै हित आवरि ॥६॥ नवसो अससो धरम
ताता ॥ रतां तन होणो दुरव दाता ॥ सबद् सिरात
तारन कुधि साहे ॥ उबरिया तस कर क्रम माहे ॥७॥
दुहो– भीसम भारवत नीत जुत ॥ सम कुज धिर
निरधार ॥ जिण करता कै कर कढे ॥ तोणो
नांहि विचारि ॥१॥ पारिस आसा धी साथ कुं ॥ लै
दैणो धन जोग ॥ रक सता वी कोज सीध ॥
सेक चिरता औरग ॥
कवित:– पुर माछा जल महीं ॥ रहे समति जुत कारण

दीरघ सोता गिणि ॥ एत कालह तीसरो ॥ करि
जल घात पहोरै ॥ दीरघ सो चोर हो ॥ सोच
करतो निरधार ॥ तेहि काज न रन नह सोचासुभ ॥
भीसम भारवत जगत हित ॥ प्रम राव सुणेह
मन मोह तजि ॥ रह एनादी करम क्रित ॥१॥

छंद के प्रखरी :- पर तक कुल बलाव सरोम सनामो ॥ सो
वह उपरि वसत सकामी ॥१॥ ताके एातम
जालह बांधो ॥ तद उंदर तिह तण मगलाघो
वट प्राप्य चढ्यो तबह वह वादी ॥ ईहां ईह
दीठो उतक उन्मादी ॥२॥ ताति फिर नकुल भयो
दुख ताता ॥ सुरते लखीया एातम घाता ॥ विवध
बेला वह मंत्र विचारो ॥ समीपो लख कारिज
चित धारो ॥३॥ निज बुध्य निकुलह तम नाठा ॥
जात जई पैकंबर काठा ॥ मुसा कुंभंजार मचायो ॥
मंजारां मुसह रह कायो ॥४॥

दुहो :- तिमो विचारे सोच सूं करणो संच सुधार ॥
करण एमेलो मेल गन ॥ जिम मुसो मंजार ॥१॥

चौपई :- ब्रहमा दिक एक नृप सुविचारी ॥ ताकै बामा
एतही पियारी ॥ तेहि पुंजनी नांम परवांणी ॥ ले
बहनी धापी मन मांणी ॥ बिनै प्रसुता साथ बखाणी ॥
उप राजन वालक हित कारी ॥ दुह वीसंत
इक दिवस निरखो ॥ पंखो सुत हरणियो देपखो ॥
विहंगी तदि सुत वयर विचारे ॥ नृप सुत चो
चख तेज निवारे ॥३॥ पुंजनी पुत्र चो वयर
संपूरण ॥ एम क्रित थई वालि हित उरण ॥
नृप वामा सेती निरधारी ॥ सीरव पढे मंगी
सुविचारी ॥४॥ माई पाछ चीमाहि रवो जद सुणीयो ॥
ते एहो किम वयण सुनु बीयो ॥ वयर लिवथ ते
नीतह वाले ॥ मखो उरधी आगीन पाले ॥५॥ वन
दिस खग एोलंज मति बीचरै ॥ कारज कर कर

ताइन न करै ॥ अब सुख दुख मेला अब
माहो ॥ चित मा मोह समोह न चाहो ॥ ५॥
पुज नी तद मित वाम सरस दुचे ॥ अंतर चिहो
रखै काठ उरण ॥ भागे मने मुगत की भारी ॥
निज मेलप अब जुग निरधारी ॥ ६॥

दुहो:— प्रगट बतायो पंरवणी ॥ भाग्य मन चो भाव ॥
वैरी वैरन बीसरे ॥ जेते विसहर चाव ॥ १॥
राव सवी रह पुछीयो ॥ भरद्वाजह पर संग ॥
दुर चार पड़ीयां आपदा ॥ केण रहे वो ढंग ॥ २॥
सत्र ची सेव विचारीयै ॥ अपनी पीह विचार ॥
सिंगीया जुवो मद चोया ॥ रे समता विवहार ॥
दुर चारी दुर विसन थी ॥ कीजे वात विसाल ॥
पोड़त सरस विचारीयै ॥ चरचा चेतव काल ॥ ४॥
अहि कारी ने आलसु ॥ चान हलहंत दुर चार ॥ अति हि
वैवे की अदमी ॥ विलसत विभव विचार ॥ ५॥ सत्र चै
आपै सोवको ॥ नद पादप जिते जोण ॥ अतम
जोरको उपजे भावी भाव प्रमाण ॥ ५॥ दावे चाव
सघतीयै ॥ सघ्या चोर दिलाद ॥ दुवचन कबहुन
काढणो ॥ सम सुविगर विवाद ॥ ६॥ रिण वैरी अगनी
अगम ॥ रखे नेवे अन आस रोरव रहायां संपजै ॥
अन मै मै प्रकास ॥ ८॥ स्वान अनै सी चारणी ॥
चेतन रखणी चीत ॥ गाफील पणै न काढ़ीयै ॥
दीहा जेहा मीत ॥ ९॥ प्रजा चो सुख न्रिप करण ॥ जुग
जिण न्रप अनुसार ॥ १०॥

कवित:— एक समै जन विरह ॥ थई मुर अवण नकारी ॥
हा हा कार संसार ॥ दुवा भव भूत दुखारी ॥
विस्वामित्र प्रवीत ॥ नाम मुन समो विचारे ॥ तदै
ग्रेह चंडाल ॥ अमख भखणो चीत चारे ॥ आमख अधम
तन स्वान चो तप चनुवे निज कर लयो ॥ गहे वान
अस्तुत तद मुनि सरस ॥ कहियो रुम तम चंतीयो ॥

जगत काज रिख राज ॥ स्वान समंरव विचारे ॥
इह भाग पायीयो ॥ जगन जोग की निर धारे ॥
पर जन तद होय प्रसन ॥ प्रजा सघौ निरधारी ॥
जल छोले छोलीयो ॥ जगत जग तात निहारी ॥
रह भांति विचारे स्यपदा ॥ मुनि धारी तिम दरीयो ॥
प्राण तजे निज स्वार्थ हुजा । स्वारथ नांहि विचारीयै ॥
छंद चोपई पाप स्पंक सची भीसम नर वाले ॥ पालण प्रजा
बतावो हित जुत ॥ जनमै जे राजन स्याति दुरजा ॥
की ब्रहमह हत्या दुःख कर ॥१॥ इन्द्र रिखिवै तद
निज स्वारत ॥ आयो लहण उधार स्पलोहत ॥ रिख
तद स्याति पुरव हुआ सोख हरख ॥ पण जुत (नरपति) नरक
बतायो परतख ॥२॥ वचन सुणे तद स्यातिनर
कहीयो हु परतख मुने ग्रम ॥ स्पव मुहि रहो उधार
स्पापात ॥ तुमहि ज दुरव मेटण सुरव दाता ॥३॥ इंद
रिखी जद दया करे स्याति विच जुत करम बताया ॥
संघत ॥ तजि स्पभिमान उभं स्प दुसतर ॥ वेदां मा-
पुजन करि दुज बर ॥४॥ दान दया तप सत भांति
धारण ॥ पंडु स गिणो स्पकरम पहारण ॥ मुनि चो
गहि उपदेस महामन ॥ पाहंचीयो न्प पाप उतारन ॥५॥
दुहो:- पाप करो सिर स्पापणे ॥ तातो चोथो भाग स्पातम थी
स्पलगो रहे ॥ निरधार निगमी माग ॥१॥ स्पक्रम उधारे
पुनि करे ॥ नर जा मा गह खंत ॥ गहीया केरे उग है ॥
रवि राहु ची भांति ॥२॥ उदिम थी स्पावतहुवै दुरलभ
वस्त तसु राइ ॥ जेते पायो झेलतां ॥ काल क-पाल
गमाइ ॥३॥
छंद चोपई:- दुज चौ काल महा सुरव दाई ॥ थ्रो कलह
कास पुरण स्पाई ॥ ताकर जेती मिले रीह तालो ॥
ले मादा गद होइ विचाली ॥१॥ ग्रीष्म सगर तहां
रइ हेक गम ॥ पाया निज करिज हित उतिम ॥
सीचांणी सव देव सुहायो ॥ ते नर लिस किन

ग्रीष्म कहत सब छांडि चल्यो ग्रह ॥ अब मन
मंच बीतेगो ओछह ॥ पांच गये पिंड मांही थावै ॥
पल पल पूरण या में आवै ॥३॥ सगर कहत कुछ
हैत सहारो ॥ मनकी अब मोह सतारो ॥ दिवस
छतै दुरलभ तज देही ॥ जारु नांहि कछु सनेही ॥
फिर तद भीष्म कह्यो चित फेर ॥ गीदड़ पाखड़
मांहि हित गेर ॥ जीत यो चन आपांहि रहिस थावै ॥
काल करयो सो फेर न आवै ॥४॥ तेता जुग जे वह
जद लाधयो ॥ रघु बांधव कालकुं आबधियो ॥
सुद संधारत हीसुर स्वांमी ॥ जीवत वाते कियो जग
जांमी ॥५॥ पात पात मसा पहन पुणंता ॥
आतम हित करिज उब आरता ॥ तैं निवासहत
सिव आया ॥ जम पुर जाता काल जिवाया ॥
दुहो:— भीखम भाखत उदिमे ॥ आपद टरद अपार ॥
उदिम करतां सिव कृपा ॥ कालकु बंध्यो विस्तार ॥
कवित:— बंसे श्वेत सालकी ॥ कह्यो नारद फिरयो करि ॥
तुम गह कर आत धयो पवन आग लेहे मंजर ॥
साल वो फीर कह्यो ॥ मोहि मारुत न भंजे ॥ अल
हीनां बन बिच्या आप अदभुजां भंजै ॥ सुण
वचन श्रवण पवनह प्रसद ॥ बिण साख तोतर
कीयो ॥ भीखम कहत भ्रमनाव सम ॥ गर वहे
कवण न गंजियो ॥१॥
दुहो- ग्रही भावे ग्रहीयां चरंम ॥ करणो जेम कुपेत ॥
जे रात पुंह तो जम दहे ॥ बंधो करमह जोत ॥१॥
पापह काज प्रदीपका ॥ जोभा कोध प्रलोज ॥
श्याम त्यास अन्याई तो ॥ उनी मुकलत सामक ॥२॥
उभी मछरी निरदई ॥ पै सुनि परतक पंक ॥
रता पराग लोभथा ॥ निगमी कहत निरंक ॥३॥
उतम अतरी बात गिण ॥ विरत अपोसाच अपेख ॥
अनंद भी सुच आतमी ॥ पर नी प्रघान अपेख ॥४॥

अणिनानो रता गिणे ॥ बाप न जांणै भेद ॥
रोग चै रन बीसरै ॥ चोलै विरचत वेद ॥ ५॥
कारण सब ही धरम रो ॥ इन्द्री दमण विधांन ॥
पां पांचाई करन क्रियां ॥ पुह वीजै निरवांण ॥ ६॥
तपह प्रजा पातै सिंघ लहेर ॥ राचियां विसव विख्यात ॥
पद पानी तप हु हुवा ॥ अन ही अतिम जात ॥ ७॥
सनेह लछण स्री दसह ॥ समता दम तप दान ॥
रुपा रुपा लजा अन विरद ॥ जहको सहणी जांण ॥ ८॥
तेरह दोरव दजो वर्णं ॥ धातिहे भयो चिंतात ॥
तै अजतर सत्र तै रहै ॥ पाया परम निवात ॥ ९

कवित्त:- भीरम सम क्रमियो ॥ तिहुल रक समो विचारै ॥
कहयो रवग उत पाति ॥ प्रगट मन मोह निवारै ॥
धवै तांम माहि पिता ॥ जसु सुण वीर विचख्ख ॥
तेण वेण उत पाति ॥ सुक सुरव हुतं नरे हख ॥
राक सीमै पहव मेरै पलो ॥ करजा पाते सिस-
टह करी ॥ तिहां विच दइतां पुर चारां ॥ पलह
अनीतह आचरी ॥ १॥ पद माता रण प्रगट ॥ मिग
सुमेर निहोरै ॥ नहम नेप तप कीयो ॥ दइठ
दयतां निर चोरे ॥ जिगन अणिन मकलो ॥ पुरस
रुक थयो वेरयातर ॥ अकुज तिह अरवीयो ॥ जोह
देवन होइ ताता ॥ अज सुरवा वचन ॥ सुण सुरव
सुजि ॥ थयो रवडण खंडण रवलां ॥ तीव हथ
चढि सुज रिण अमह ॥ लहण विरदां उजलां ॥ २॥
संकर अपरै संग्रहे ॥ रवड्ग दिनो करता कर
करता पोरख करै ॥ दोध मारी चह आतुर ॥ मारि
चै इंद सुं ॥ विजै कारन निज थापै ॥ कोसव कीरत
करण ॥ लोक पालां समापै ॥ दिग पाल मनु कर
सो पुसह ॥ खल खंडण काज अपियो ॥ मनु सीरा-
पती खल त्रिप तनु दल दुजण मंजण दयो ॥ ३॥
तिहि परख इल तेण ॥ इल हुवा पोरख नरे सुर ॥

जेण दीपत अपात ॥ जपा रगर वड अवर मुच
कंदां माफत ॥ फेर रईव लह चारे ॥ ढरी तारस मुन
कराव उसीन सहाते ॥ इम हथां पहां उवर चढत ॥
भार दवाजह चाढियो ॥ जुजि योध लहे भारत समथ ॥
घणां वीरदां आढियो ॥ ४ ॥

दुहो :- भीखम नकुलह नाम कही ॥ खग अपाती निरवांण ॥
सो सुणि नर है मन चढै ॥ तो गंजे अरियांण ॥ १ ॥
इति श्री खड्ग अभ्यास संपूरण ॥

दुहो :- विदरह कुमयो विवर कै ॥ जुजथिर धारणवाह ॥
धरम अरथ अर काम सा ॥ करो वरेव निवाह ॥ १ ॥
विदर कहत जेठो धरम ॥ अरथ सम चौथ मानि ॥
तासक नौ हीय काम गिणि ॥ निहचे करि राजान ॥ २ ॥
पारथ जद फिर अखीयो ॥ अरथ सरत सब काज
अरथ विहुणो नर दुखर ॥ गिणत निकाम निकाज ॥ ३ ॥
तामत वत सहदेव सति ॥ धरम अरथ जुत जोग ॥
अरथ विना न चलत धरम ॥ भ्रम विणि अर्थ अजोग ॥ ४ ॥
धरम अरथ री रक्षता ॥ मित दाख समान ॥
अरथ अपहो निज मांनीयै ॥ भ्रम पौ सात परधान ॥ ५ ॥
भीम भयंकर जद कह्यौ ॥ भ्रम अब कारण काम ॥
तांम चेतावत कांम कजै ॥ विख ही कामां तांम ॥ ६ ॥
नव नीतह गति कांम गिन ॥ फल रूपी विणि काम ॥
अस्तो सेवन आन गिणि ॥ परम अरथ मा काम ॥ ७ ॥
जुजथिर बंधव वचन सुणि ॥ इम बोले धर
नाथ ॥ काम अरथ तो रहत नर ॥ पामत सरगी आथ ॥ ८ ॥
भीखम थी पर प्रसन होय ॥ जुजथिर रावन चीत ॥
तिण रेती दिल चौढियै ॥ किण थी करणी नीत ॥ ९ ॥
सह लोभी पाया लभो ॥ नीत धण न सतीवांन ॥
अवने की उ भी अशुच ॥ रतां मानन दांन ॥ १० ॥
मछ री दुरसती मुरत वी ॥ श्री चौ करारी अंत ॥
मद पांनी इंद्रया कत तजण वेरव तुरंत ॥ ११ ॥

सर वंशी कुल उधरो ॥ अन सो की उदार ॥
प्री दरसो सुख दुख समो ॥ कीजे मित्र निहार ॥१२॥

छंद चोपई :- भीसम सम अरजुन सत भारी ॥ विध पूछी आतम हित कारी ॥ का को मित्र पणो हुवो जिण कारण ॥ विवरे कहीयो प्रीत वधारण ॥ तद भीसम कहियो सुणि नर पाती ॥ विवरे प्रसन विविध इक वंछत ॥ मद मलेछा देस मझामध ॥ इक घण रजकों घणो अकारण ॥२॥ सो आप रहयो वने संगत सखर ॥ असनो सहत दुष्ट क्रम आचर ॥ गोम सगोतम मत नास ना मरह ॥ जोपा हीण क्रम करषत अण कह ॥३॥ सो नीत चतु विद्या अभ्यासे ॥ गृह पकवा कह आमरख ग्रासे ॥ जम सवो अदया जांणगार ॥ दिन दिन वधत करत क्रम दुसतर ॥ आतहं इक अवर दुजन मो आयो ॥ मित्र पणो आगि लो धर लायो ॥ रोते कदि मिरगया सोक दुज आतें ॥ आयो सुगह आपणे इच्छत ॥४॥ दुजे वद कहयो लखे क्रम दुसतर ॥ खल क्रम तू किम करत खरा खर ॥ गोतम होइ बोले निच याही ॥ हुं नर देही करत अचाही ॥५॥ तद उणे दुजन वहम तिरे हेक परम आत परम उधारो ॥ सोवन सोवे चरत वन आसे ॥ आय रहयो वट ओट अकासे ॥ पंखी तहां पारखि दुजि पीड़त ॥ आयो तहां करे वा आतिथ ॥६॥ सद्य भख कारण जल मारे ॥ दीधा दुजनम उदर विचारे ॥ सेन कराई फिर तिन साथर ॥ पंखे दीधो पवन अपंपर ॥७॥ दुज कूं फिर तिर चान चाले दिन ॥ मेलो वीर पास कै चित मिल ॥ राक से राजा मित्र मम रसण ॥ अपणी चान अपति हुवो हित अण ॥ चाहो फेर विप्र वनह पधारे ॥ बक रातु मिलियो हेत सीधारे ॥ पित्र आतिथ करे अन फेरत ॥ दीधो पास तिन

उतीम क्रित ॥१॥ आभरव कज कुज आचम उचारै॥
सग कुही वेह कु सातै मारे॥

दुहो:- क्रित घातक उ दुज आक्रित॥ मीसम कस्यो विचार॥
खवचो जुज विर संगरो॥ सो कारण निरधार ॥१॥
मीरव चारम अपव कहत हैं॥ संतसुतन विचार॥
राजनीत समेत कहै॥ आपद सम निरधार ॥२॥

छंद वे अपवरी:- सेनह जित वो-धतन सकारण॥ गीवन
मारवत अक्रम निवारण॥ कुत पंचतपाये सेनह
सह हित जुत नोदत करत मह इठ ॥१॥ ताहि पचो
कुजन इक ताता॥ विच विच आपण वोच विख्याता॥
उणी कहियो सम राजन हुपविठावै॥ सांनह जांयण
है तिस चै प्रित॥ अहम गिनानो दुखह निजोरे॥
पूरण जठ रुज कलप पुकारे॥ जलमा जिम
कस्टा कुल मिल जुति॥ विचलत केर प्रवाहक
वरती पल ॥३॥ इम सम चीराजन अवरेखो॥
दिठ अभेद वेद मग देखो॥ वेलु पालेजेम तन
वेह वल॥ जल जम, जोर वहत दुरव परजल ॥४॥
तंवा पै पावै ताको सत॥ वितेसै करमह करता
वंचत॥ क्रित कानो दुवची समुरणो कहि॥ दता
अपन सो की दुपनंद मह॥ ४॥ ते उतीम नर निगम
उचारै॥ चू चारण चीत सुक्रित सहारै॥ समल
सम दुरव कहत वचत मत॥ पोइण जल जोहि
हित पुरन ॥६॥ सदह उपज्या उसतह मारवो॥ खिर
हर भांण जांण तिहि सारवो॥ वीसनां तजे तियां
सुरव अप्ता पती॥ वर्तो न रोग जेण घन वंचत॥
सर सोत जिम जिम प्रित साले॥ खट विच
अगार पुरतह पुरत चाले॥ अपण चाहत सत
फल जोहि जीवै॥ वंचत क्रित विण निहुं
विहावै॥ ७॥ सुरवह अमोघ मीरव की काती जारह॥
जिस्मा भई पिंगला दोघर ॥८॥ तेण निरास

ग्राहै ओरि लाला।। दिल सुध धरि मनह सुख
दाता।। सुज चिर ओल वरतची विध जगा।। दुधि
फिर अतिम होत पुरग।।१०।। देववरत जद प्रसन
सुचित दिन।। चिर लोगो ओईवा रहत सुज हल।।
रखत दुज वर लेवो इणपाला।। पुत थयो पदियां
हित दाल।।११।। तिणह पिता कुं चरम ओरम चित
परसा पर पुछ्यो रहित पुरत।। पित वेदा मगतई
चिछायौ।। उव चरियो उतम इपहिनायौ।।१२।। मेचापी
जद ओलो पितह मिले वतित आत दिवस निस
वहै पतै।। मरण न देखत तेठ चोठ मन।।१३।।
सुरत इणवत लाव नीर लन।। हिरण डरी नित्र
हेरत इणवि हित।। चीतो ओम हिरणह चित चाहत।
पुरखह जिम वंछत सुच प्रख।। उछन पुरख
ह आत इपुरख।। ओरिज ओल वतित न मीजै।।
छीजत दितरस न इणवम छीजै।। आलह ओरगो
इपज ही ओरी पै।। सु चारिपा मन मोहन चरीपै।
आदम इपत पाति जाति उठ इणति।। मन छानह
चापत सात उनमत।। आत न आडर सूर विचारत
चण चार निठट ओरत ओरत कुल चाड़ह।।१४।।उद्यो
ओरि इणनंदत हो वै जेनर दुसह नाह गति जोवै
पावै।। सम माति हित पिछाणै।। तातु जेम पुरजम
हन तोणै।।१६।। मनह गिनान समह चरव चित
चात।। ओ समता सम चल हन ओमल।। परसा
पर दम पुत पिता सुणि।। दुज वे वै पुंतला वन
दारण।।१७।। जे पै सुख दुख इणको जाको।। सोइ
अतिम सवन सुणावत।। चल चानवाणी थी
निरचल दिढ चति।। वाचत तुल ता दुणा विसंभर।।१९।।
सुणि जि इणतीन जगह कीहि सब सुध जुदीठै।।नही
कछु दुरव मन इंचा।। महा चानी पो लोभ
क्रोध मन दाकत सहत महा दुख दारन।।२०।।

जात देवताम पवन करि छीजै॥ तैसे चान की
ध्यान गिणीजै॥ लोभ विचारत पुरख निर मर॥
इक दिन चालत सबद तजि इयातुर॥३॥ विगर छिनो
नय नहि दुख वीत॥ तिणम कह लहै न नहि न निवाह॥

दुहो:- जो अदेम की करम फल॥ नहि पावत गुणिवान॥
तो मन ध्यान तै धंधयो॥ तज कै सोक समान॥
संकट छिमहत पाणियो॥ अदेम करतै चीत॥
तद फेरव छाया तिया॥ भावी जोग सप्रीत॥२॥
एक दिन वड्डा परम गति॥ उरझै करड़ा केह॥
गाढू तिहया अतरै॥ पकरी वन घन फेट॥३॥
४। लोभ विचारे परम गति॥ ~~उरझ्यो~~ उरझ्यो करड़ा केट॥
लोभ विचारे परम गति॥ तद संकट गुणि वान॥
चीत संतो खह इधणीयो॥ पकड़े इगलम ध्यान॥४॥
लोभा ठाणी विचारणी॥ नरनराइण इधप॥
ते सुख सोवै जागही॥ मन क्रम निहचै काय॥५॥
मन कूं इवणासी करत॥ जे सुख चाहै चीत॥
तो तुं त्रिसना छाड़ दे॥ जिम कहै की रीत॥६॥
इवेन राये उपजात काम की॥ जिम पत की तिण वेल॥
मन तन छांडत काम कुं॥ इवर कत वध वेल॥७॥
काम है उपजत फल घना॥ रोग मूल है खास॥
चान सुख दुख के मूल है॥ लोभा मूल अपान॥८॥
काम नीम पयाल की॥ उठी इपल ही जाणि॥
धरणी नामत जन म लग॥ पाचे जात इध्याण॥९॥
निर वरती निर वेदनो॥ त्रिपती साइत वान॥
ऐसो पुरख विचारि ने॥ गहयो गति निदान॥१०॥
हरमाई सीलो भयो॥ तज यो संग कुभाइ॥
ऐता भेलप उपजत॥ इनर ध इमनत कुभाइ॥११॥
उरनह ठोले गति जिम॥ वहत पयाल प्रमाण॥
तिम त्रिसना की दुख सकल॥ जावत तजि तनताणु
मक्षण दिख रह कथन कीये त्रिसना तजी मकरणु

लोभा हद बाहिर बसै॥ सद लाधो आराम॥१३॥
इज गिर सिख पैह लाद हूं॥ जो काढ़ियो विरतंत॥
सो फिर औसान कहत है॥ जुज थिर हेत निचंत॥१४॥
छंद के पधरी:- रूप रूप नृप विप्र सम उचरीयो॥ तै
बोलक मत किम ओचरीयो॥ विप्रजद कह्यो
सरस सिख वाक॥ मै बुधि गही परम सुख
पाक॥१॥ अंबर फल जेती सुचि पवित्र॥
चढत पुरख कर पानि पवित्र॥ जल निरधार
गजे ही जानो॥ उपजत खत संसार पयाणो॥२॥
इज गिर विरत पवन जग आवै॥ जथा लाभ समता
फल पावै॥ बंध पैहलो सवहुत बसियै॥ छंद
बल काहि लोदह देखै॥३॥ मेघा पीतोड़ बाजरा मांही॥
गज तारग सुजि पो गुण गाही॥
दूहो:- रूखै बाहर प्रजोग करि॥ रख हुता निरधार॥
कारत परीख हूं उतरीये॥ त्रिख सुलतान पधार॥१॥
जद औसिप मन मोह तजी॥ निरधान पणो निहारि॥
योगन लागो ध्यान उठत न चित विसतार॥२॥
तद बासव होइ सगर सातै॥ निजा मन निरधार॥
पायो औसिप हेत वडे॥ मुणि तन योग विचार॥३॥
कहियो सुणि मारीच सुत॥ सब मान रह उदार॥
हम चाह तहां रह जनम॥ नह पामन हुत नोर॥४॥
पावन बात न कीजिये॥ पर पावन चित चाहि॥
नर पावै पावन नहीं॥ हरि सिवा निरधार॥५॥
कासप सदह कपन सुणि॥ पावन पावन काहि॥
ध्यान विचारि उदार दिल॥ जो निज ध्यान विचारि॥६॥
नीचा नीची होइ कूं॥ नीचै करसै जोर॥
ऊंचै करसै ऊंच पिण॥ कामत पुरख विख्यात॥७॥
जो चित चाहै उरख जुत॥ जे नरहै चित चाहि॥
पावत जोवत मे नहीं॥ सुर थानक पवगाहि॥८॥
बढे राज तिन विचारि के॥ पावत पाइ निरार॥

तिम आवत छित धर्म लोरहि ॥ सुरन सुख कोहिलावार॥
भारद्वाज गुरु हूँ ॥ कहौ यो आतम हैत॥
जगत सुकल जगदीस की ॥ फिर उपाधि में चेत ॥१०॥
माहित की उपाधि कार रचो ॥ ताकी पंच विद्वांधी॥
सीच कौ जाति सब उपजी निस्तर सुर प्राण ॥११॥
कवित:— पृथ्वी चंद आनंद ॥ समंद उपतह नभ सुनतर ॥
नभह उपंत जल बहल जलह उपंत न वैस नर ॥१२॥
ताही उपंत नलकास ॥ आउपंतह लागन सह ॥
ताम उपंत प्रकास ॥ तास ज्यों मह पार है ॥१३॥
पृथ्वी प्रथम नीर मारुत पुष्ट ॥ ततले काहि जानत
जात ॥ भारद्वाज पवन सुत सुनि मारग नेह
मंडल उतरि पारि मरद ॥१॥ जल आप रस
कहसे पृथ्वी आस गिथे गंधह ॥ पवनह आप पास
आप आकास न बदह ॥ तेज आप न वे रूप ॥
पंच तनह रह जो पारि ॥ तेह इत ने पारि ॥
कहत महा मुनि राव महा मनि ॥ फिर जेतह
उत पारि मिलत ॥ इदी नाहह अनुसारै ॥ मुनिराव
कहत मुनि वर नारस ॥ रामजगत इत परवै ॥२॥
दुहौ:— श्रुप गुथे दाड़िम फलत ॥ केथ रेत वनह
विसाल तिम उदिम पेख प्रकासि कम सींच देपत
अकाल ॥१॥ मंस त्वचा मंजा प्रसत ॥ चरवी चेत
विचारि ॥ अं पंचु गुण पर का ॥ निगम बतावत
सार ॥२॥ तेज कोच अ ज्योति चष ॥ जठरा
अगिन उपाह ॥ ए गुण आगिन अलौ कहत ॥ वेद
बतावत चाह ॥ करण सुनह फिर नासिका सुरवर
के इत हेर ॥ ए सब हौ आकाश सचा ॥ ग्यानी कहत
न बेर ॥४॥ प्रीत प्रीद सलै खता ॥ नतु सोचत
निवास ॥ ए गुण जल नीर मल लगा ॥ पीड़त
कहत पिछानी ॥ गुणा उपाक समान कहि ॥ ए
गुण जीवि लै पवन ना ॥ ताहि चित अपार विराम ॥

प्रिथम ब्रहम भूमि मानिलै ॥ फुण करि खरी बड़ैस॥
सुंदर हुवत समाव थी॥ पंत म चलण पचीस ॥७॥
सेत वरण गुण ब्रहम मिणि॥ पहणत खरी उदार॥
सीतह करण बड़ैस सार॥ सुंदर सरम निहारि ॥८॥
खत चाम नहीं करारता॥ जपर करम वईस॥
सेवा गुहीं सुहता ॥ पंतज पचाम पचीस ॥९॥
खट करमां गिणि दुजन के॥ सुर भूम खती महान॥
कहि बीय रह बइस कुं ॥ स कोइ धरम प्रमांन ॥१०॥
तप लोग कौचत चपो॥ मन रहे तिहुमी लोर॥
लोभ नाहस्या थई ॥ गुवर ती गुण निरधोर॥११॥
प्रातिथ गुहीया धरम कै॥ पावै वले उदार॥
सेलै जावै पुनि प्रगट॥ छोड़ै पाप ब्रहार॥१२॥
तरवर जेही गुहि धरम॥ है पालन मरजाद॥
पहर प्रसुन निवासजात॥ फल छाया फलाद॥१३॥
वर प्राचारि नीत जुत॥ पालत वेद मजाद॥
रामत मग सुन चौन डर॥ पुन पद रव जाद॥१४॥
गृह पाते गयत प्रकास किण॥ तिह निवारण जोग॥
पाचां भीनां प्रसुन कित॥ करणा नितह प्रमोय॥१५॥
पुरख दिस मुरख करि सहस॥ करणो भोजन चाहि॥
प्राया प्रकासि नवीदणा॥ तजणो जल कर माहि॥१६॥
लोरे देवत ब्रहम जुरि॥ चौथो पचिर मांनि॥
स दाहिण दिस राखिनै कीजै गमण निदान॥१७॥
प्रातिथ सेवा सुरपी॥ वंदन रवांणन वेद॥
दोइ बारवै भोजन किये॥ वरत बतावत वेद॥१८॥
रित समीपे रिद जान दे॥ तिन रजनी समान॥
जाचिग विमुख न मेलही॥ सोइ रिहित निवान॥१९॥
गृहि पाति इण धन देखणो॥ नारी लगन निवारि॥
गउ ब्राह्मण पूजणो दाहिण कर निरधारि॥२०॥
पुरव दिस मुरख पर ठवे॥ जांणौ बेहरन भोम॥
निजरि पुरखह न देखणो॥ वेद कहत दिन सोम॥२१॥

नर इमारतुङिका रन हू॥ कहतो नमा संजोग॥
मबर प्रकासी कतु॥ दैवी मान ववोग॥२२॥
वेला माहिन विछुड़े॥ चल चारक चन चाहि॥
सो पुर बुधी मालिक मिणी पै मुलस प्रवाह॥२३॥
कुलना जे कवड़पण लहै नाहि न कढतो नाम॥
~~नाम~~ पावसिंधु की गावीपै॥ परगट कुमेत निकंमा॥२४॥
चल लेरवे चरमन चोलीपै॥ कहीयै जाते गंसा॥
रहणो सदा विनोद का॥ छाड़ि निरवद विसंम॥२५॥
दीवगर तुक चीरका निसा॥ ओत प्रकास गुमाह॥
ठाइ कौ जांणा इपजांण वठा॥ नामह रतन वेरवाह॥२६॥
वर बीजरह माठुकि रहो॥ जल नै होत प्रकास॥
जेम कल मंजण ज्ञान की॥ लहीपै जीगर प्रकास॥२७॥
तेल तैलउ कीड़पै॥ प्रावा गंम जी मोह॥
जेता जी इपाजिन ली॥ कालीजै निर मोह॥२८॥
सजो चरव कंरकु लरवे॥ तेम ज्यां नी निरमोह॥
देख मथीयै प्रीत प्रगहो॥ अमाणी संनै सुओइ॥२९॥
सर पत जल जेम कंचुकी॥ तिमज्यांनी निरलोभ॥
इन्हो दमीयां तेजलप॥ मुलिन पांमत रवोभ॥३०॥
कैसो रोगी ज्यान की॥ रा सेवत इक हाम॥
तरन कर लोमी लोलपी॥ रे छदन कह जाम॥३१॥
हारै कौ जारे जरत है॥ हरी कौ दिपै दिराल॥
हर कौ गमयो गमत है॥ हर कर लवही काल॥३२॥
इंद्रि निम बीसम कहयो॥ मोहन संपति पाइ॥
दुरव चोरज चारी तिरत॥ जात पचीर विलाई॥३३॥
प्रापती मा रहयो॥ दुरव विजात॥३४॥ वन वलोवे
नां हैन कलन र॥ रिवां मरज जांजिदां॥ काल
कलन नह दुरव दं॥ जे इपोसे जोविद॥३५॥
रात्रु सौवे जोतिस मुनी संपरति थयो वहनि॥
मन ह नचलीयो सेर गति॥ मन कनका कर चीन॥३६॥
सुरवं दुरव मा समता रहै॥ मोह दुरव तुलया

दुरव सागर मां डुबतौ ॥ हरि नाम निरवान ॥ ३८ ॥
रच्छ सौं कीन तु कह्यो ॥ नारद वचन बिख्यात ॥
तु वरनत जिस राज विधि ॥ सब धीरज धरि तात ॥ ३९ ॥
तद वन कहिकी पुरख जोग ॥ करै सेवा विचार ॥
ताहुं कबहु दुखनहीं ॥ फल अरदाइक उदार ॥ ४० ॥
गायाते कीनां सार रतन ॥ कान करै प्रथ होय ॥
फल कालत करि फलत है ॥ कालत प्रकार जांण ॥ ४१ ॥
प्रगाधाते संसार सब ॥ वारन मनहु विचार ॥
जित चलाई चलत है ॥ जगत [illegible] की वी धार ॥ ४२ ॥
पुत्र पिता कु कथन सा ॥ करही कुल विख्यात ॥
पुज पै सुन्दर पावची ॥ सेव कराही हरि प्रात ॥ ४३ ॥
अपर को पुन संजन नलो ॥ मारस भई धन होरवा ॥
सही न लोजै गात को ॥ होतां सेन अपैरव ॥ ४४ ॥
रोगी विरध संतोखिजै ॥ आये दीजै मांन ॥
भाषी पसुन मुलीजै ॥ विन जल मल समान ॥ ४५ ॥
परयो पर नाद न राखिये ॥ विरचन गाहीये देह ॥
सो कुन करीये होय थी ॥ इंद कहत करत कलेह ॥ ४६ ॥
इति श्री रंद नाद सम्पूर्ण ॥ छंद वेःरवरीः
ः—ः सवहि अपहंसा धरम सराही ॥ आलस पामर कोइन
काही ॥ पै यह [illegible] देवन पुजीजे ॥ हुत दृवह
अभ्यास नन कीजै ॥ १ ॥ फिर भारी गौतम सुत सुध
चित ॥ जह फिर भाल विसाले सुधि कित ॥
तिह फिर भारी नास धयो तस ॥ उतिम गाले चंचल
पुनि वानर ॥ सब सोधे पित मातह हेवण आये ॥
दुवो दियो करण जित [illegible] करत ॥ तद इह सोच
विचारे तत छिन ॥ पर आतुर न धयो छित चुरन ॥
पित होहें नर नार पिछांणे ॥ आयो फिर करण मन
आंणे ॥ कहयो पुन तै मात पिआर्ही ॥ दिन सुध
हैन धयो दुख हानी ॥ २ ॥ फिर भारी तद कह्यो पुरवा
धनमे जननी नाह हव पुनि रव ॥ रिरवजाद प्रसन

होइ चार भारत ॥ कहि ये तं सिरहारी रम दुक्ति॥१४
काल विमान बैठा कहयो करता । ओई दुख सो नक
हौ चुर चुरता ॥ दुर मन भिन प्रिपत हित डारै॥
धारौ उंड इंपयासर भोरै॥६॥ सतजुग माहि
उंडन करहीं रमाहि ॥ बाझों उंड दया गुर वंछत॥
कलि जुग माहि बधाह डंड कहीए । देवह दया
अधम दुक्ति हडोपे ।७॥ चारमह मासवली सुख
खुर सै॥ पर जालम इच्छा सोई वरोवै निरनं सो
दितहह जिम प्रथा नच॥ बिच बिच कहत नहि मिटै
बाचार॥८॥ निरचन चली दुह सुख नौहीं ॥
निरमला रहाहि नरह सुख पाहि॥ लोभ रोगजा
दैहत लागै॥ तन लोइ गैरवह कवहु न पोवै ।९॥
दुक्ति चल मह पाली दुख करइ ॥ जनम नो-
हिन जनम उधारइ ॥

कवित:- बेला गुर पंथ सै ॥ पयो जोजन उबह पत गुर
सतह फिर रतिनह ॥ जात पाइ लो पतझड मन॥
देव राज लीहि दुसह वह जर वह मंत विचारे॥
चाले चाव रूपचाव ॥ निकुंज दियो निर चारे॥ जुर
नाम प्रकासे तन हुजर । रहस रूपालि विह पत पयो॥
सत दुक्ति थई विच मापवे॥ दुहने बेला निपा-
नये॥ १॥ बेला गुर वचा पचे॥ ब्रहम हत्या दुक्ता-
दुक्ति ॥ सत दुक्तिनह चोदीपो ॥ अपव इसहन भला
जाती॥ नाम ब्रहम कही लिपा ॥ ब्रहम हत्या इपवि-
चारी॥ इंद अपदे खल करण ॥ वांइ दयो निरचारी॥
आगमील मीर पाइच कइपहर॥ पां पहु वां इसतहन
सरी॥ सम भाग करे दुक्ति बाला॥ वह सावध मन
तन लावहि॥२॥ रूज उनिम इपरवो.पो॥ इपतीन
सुहित जिगन उपजइ॥ तौ भौ भावण इकरसि॥
रइ गुही दुक्ति चालजा॥ कादव पर वीहउल
लोहित रह दीरव दुराचार॥ जल तुहह मल चुरा॥

ਮਗਰ ਤ੍ਰਾਹਿ ਕੀ ਚਾਸਾ ਜਸ॥ ਦਿਨ ਸਕਲ ਜਸ ਤੁਥਨ
ਸਾਨਤਾ ॥ ਜੋਗਿ ਤੀ ਪਾਪ ਪਹਾਰ ਕ੍ਰਿਤ ॥ ਤਤ ਮਾਂਕਾ
ਸਕਹਿ ਹੋਹਿ ਪੂਰਨ॥ ਮਾਰਕਨ ਦ੍ਰਿੰਕਜ ਹੋਤ ਜੁਗਤ ॥੩॥ ਜੁਗ
ਥਿਰ ਥਿਰ ਕ੍ਰਿਸਕੀ ॥ ਕਰੀ ਮੀਸਮ ਸਾਤਿ ਤਾਰਣਾ ॥ਰਾਹੁ
ਨਾਥ ਤਰੰ ਪਾਰੀ ॥ਸ ਧਰੈ ਕਿਹ ਮਾਂਕਿਹੁ ਨਰਾ ਜਾਣ ॥ ਕਦ
ਸੰਕਟ ਸ੍ਰੁਤ ਕਰੀ ਲਿਖਹੁ ਦਿਰਖ ਜਾਨ ਤਕਾਈ ॥ ਜੇਣ ਦੇਹ
ਤੁਪਨੋ ॥ ਸਹਜ ਕਜਰ ਕਹਾਈ ॥ ਪਰ ਦ੍ਰਿਪਰ ਸਕਹਿ
ਪਾਪਕ ਤੁਸਹਿ ॥ ਕਰਤਾ ਪੁਰਖ ਕਰਤਾ ਤ੍ਰਿਯੋ ॥ ਸਮ ਤਾਕ
ਸਮਾਨਾ ਹ ਪੁਰ ਪਾਯ ॥ ਤਰਿ ਵਿਚ ਨਾਥ ਗ੍ਰਾਹਿਕੀ ॥੪॥
ਸਿਰਚ ਪਾਸ ਦੁਰ ਕਾਸ ॥ ਜੋਗਿ ਕਨ ਕੀਰ ਸਿਹਰੈ ॥ ਛੋੜ
ਤੇਸ ਮ ਕੰਚ ॥ ਸੁਜਾਨਿ ਜੋਗੇਸ਼ ਪਧਾਰੈ ॥ ਧਾਂਨ ਖੋ ਜਿਸ
ਦ੍ਰਿਪਕਰ ॥ ਜੋਗ ਜਰਕਹੁ ਜਾਨਿ ਸੋਦੈ ॥ ਸੰਸ ਜੋਗ ਸਾਧਨਾ
ਕੈਰ ਪੂਰਨ ਪਦ ਸੋਦੈ ॥ ਤੂ ਛਲ ਖਯਾ ਰਖਯਾ ਰਾ ਤਸ
ਹਿਤ ॥ ਨਨ ਕਟਾ ਹੋਤ ਤੁਧਾਰਨ ॥ ਪਰ ਹੋਵੈ ਜੋਗ ਸਿਧਾ
ਜਿਤੇ ॥ ਸੋ ਜਿਗਿਯਾਸੈ ਜੋਗਨਿ ਜਾਨ ॥੫॥

ਦੁਹਰੇ:- ਕਾਮਨਾ ਮਾਰਨਾ ਜਿਮ ਦ੍ਰਿਸਟ ॥ ਜੋਗ ਸਾਰ ਸਿਧਾਂਤ ॥
ਹੋਹਿ ਤਤਕਾਲ ਸੁਭ ਗ੍ਰਹਿ ॥ ਕੁਹ ਪੰਡਿਤ ਨਿਰਧਾਰ ॥੧॥
ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧਹਿ ਸਾਰ ਜਿਗਿ ॥ ਨਿੰਦਾ ਦੇਹ ਤ੍ਯਾਗ ॥
ਸਤ ਸਕਤਰ ਤ੍ਰਿਸ ਜੀਤਿਯੈ ॥ ਸੀਤਮ ਸਰਬ ਸ੍ਰਾਪ ॥੨॥
ਨਿਦ੍ਰਾ ਸਤ ਗੁਣ ਪਾਲਿਯੈ ॥ ਤੁਚਹਿ ਭੋਜਨ ਖਾਨ ॥
ਖਸਪਾ ਗੁਰਕੋ ਕ੍ਰੋਧ ਕੁੰ ॥ ਤਜ ਤ੍ਰਿਸਨਾ ਲੋਭਾਨ ॥੩॥
ਤ੍ਰਿਤ ਦਸ ਕਾਰਿ ਕਾਂਮ ਕੁੰ ॥ ਵਸਿ ਕਰੀਯੈ ਨਿਰਧਾਰ ॥
ਮਨ ਕੁੰ ਜੀਤਿ ਕੇ ਸਿਰ ਧਰਹਿ ॥ ਧਾਰਿ ਤੁਰ ਕਿਰ ਕਰਤਾਰ ॥੪॥
ਰਤਨ ਦੀਪ ਕੀ ਧੀ ਧਨਤ ॥ ਜੁਧਨ ਦੀਪ ਸੁ ਸੋਤ ॥
ਰੇਖਕਾ ਪੂਜਿਯੈ ਗਿਰ ਚਰਣ ॥ ਪਾਪ ਵਿਨੋਤ ਦ੍ਰਿਢੇਤ ॥੫॥
ਸਕਲ ਗੁਣ ਧੀ ਸੁਰ ਜੀਪਜੈ ॥ ਨਰ ਕ੍ਰਿਤ ਰਾਜ ਸਮਾਨਿ ॥
ਰਜ ਤਮ ਮਿਲਿ ਕੈ ਧੌ ਪਦਤ ॥ ਤੁਸ ਨਿਤ ਕਤਕਪੁਰਾਨ ॥
ਗਨ ਸਧਨ ਕੀ ਪ੍ਰਗਾਲਿ ਜਿਸ ॥ ਜੋਗੀ ਪ੍ਰਕਟ ਸਿਧਾਂਤਿ ॥
ਤੈਸੈ ਸਾਯਾ ਪੁਰਖ ਕੁੰ ॥ ਜਿਗਿ ਰਤਕ ਨਿਰਧਾਰ ॥੬॥
ਦੀਪਕ ਜੋਤਿ ਸਿ ਨਿਕਾ ਜਗਿ ॥ ਧਾਰਯੋ ਧਯਾਨਹਿ ਚਿਤ ॥

तेता प्रसिद्ध भूरगलह ॥ रहयो फैल जि जिन ॥ २॥
द कै [illegible] सखी:— जिन आगम भई जानि जै ॥ तीनै साधन पैहली २
कीजै ॥ पुनिम अंगो चंद संपूरन ॥ सो रचो महत
नाम प्रगट ॥ ३॥ तन सोभा सोहै रवीन संग रहे ॥ पीबै
जिन निरतर हवलो ध्याइहे ॥ धु धर धुंजी माम
स्वरहि चुर ॥ आवत दिरान हमेहि हुंनर ॥ ४॥ कोनै
चरव जाल बहत वेरा भव ॥ निरख नई जिनिवै जिन
उनमत ॥ आसन सुनि आवै सिव हिरि जुत ॥ संग
जोग हेत लाहि करयो सदे कत ॥ ३॥ फुलन प्रपंलह
विरख फलीजै ॥ अपनह संग मोख मांगीजै ॥ नार
सिर कायो दिरान ल्यावै ॥ राम हिदै उर भगति जगावै॥
हाता पावर वसत चारि ॥ दीन मुरारि वसत
ब्रह मह सावन ॥ तैसा दिवस धन धर उमर हरव ॥
पै कीन तनां कीता पर तरु ॥ ४॥ कान विनोद मिलन
जाहि कोरी ॥ मिलत संबधी दिय मुरारी ॥ तुलसी
मुनि आवै वारि जन रस ॥ जावै पुछ्यो प्रसन
आप जो कह ॥ ५॥ पहुंचो कीजन पावन प्रभावति पाइ॥
आप कहे नीहिन हीहि अमवार ॥ प्रीनो फिर आयो
आवै राम ॥ प्राणायाम ॥ निवरत प्रोधह ॥ ६॥ इर
उडर रहिर धन निरख हुन ॥ सम आगे सिधि है
हेत [illegible] ॥ संतुल ॥ राजा दुजनम आसनी पै रह ॥ कारज
बिना जांचे धन हेत [illegible] ॥ ७॥ नृपइ मुरलातयमाहु
जोनम आसनी पै रह ॥ कारज बिना जांचे धन हेत ॥
काहि ॥ नृपइ मुरलार तप नादु जनम ॥ आसनो हरव भाव
भाहि उतैम ॥ कारिज बीधा पंत धवि कारी । प्रेरव धौ
उपजत दुर धारी ॥ ८॥ अन कारण सम्पदा लिप नर
इन ॥ सम सर सुंगरत बहत भोगम हुव ॥ धर धर्म
पर [illegible] भी आपदावे ॥ हेर हैत द्वैसो निवहन
लीजै ॥ १०॥ नारद बीध जर प्रभ तुर निरत प्रत्यनहोय ॥
प्रसो रखत तुरत हित ॥ इर रवत पाल जोम जित

दारक ॥ त्रिसना बंधन सब धरत नर परतक ॥११॥
श्रादम बंध नहीं श्रतरहीं ॥ पर कूंचे चालत जम
पुरहु॥ गुर साइक लागा पहली गया धरम अंड
रह भरतो उठंग ॥१२॥ जल मंगल सिर चौर चार
जिरा गालि बोलि हरि सबै जतै गुण कुटल श्रालस
साथ न छोड़ै ॥ जोग सर पुरख जिसी धनजोरे ॥१३॥
काम करते कोचो नर कुकरत ॥ विघ विघ श्रवगाम
लहत कूत ॥ कल चारवे छोड़ि दिह श्रीनि कल
सेवै कामतजै सो उजल ॥१४॥ मासहु नधी कुरंगी
गही मन ॥ दिन कर श्रगिन तपावत धरत ॥जोरै
पुन पाप सोमै कुइ जोरे ॥श्रंबो जेम श्राइ दित
मोरै ॥१५॥

दोहा:— धरम मई धन त्रिपत कुं ॥ सब लिखै सहदेव ॥
पूछ्यो प्रसन विचारि कै ॥ कारण सुगन सभेव ॥१॥
जनम कह्यो रिख राज सुण ॥गुर बिन ग्यान
न होइ ॥ सोखन पावन ग्यान बिन मारवत वेद
जोइ॥ सुरख दे सुणि विघ अनरव है॥ गेा देमा:
धन चारहि ॥ मितवा कारिय देव रिरव ॥तेथी
हित चीत्र बाह ॥३॥ सामह कारण सगत जित॥
बाही गुर च पड नारद सुरख दे मेजियो तेथी
ग्यान विमोह पकाहि ॥४॥ हारिज चारि प्रकार हुं॥
वेदा हुकत विघांणि ॥ धावक सो दी मानियै ॥ अंत
जलण महाण ॥५॥ तिम धरिज नपसील सच.
सिरव कुं सब विघ जोइ। गुर बंधन जोवन
जिहि ॥ जंही ग्यान विमोह ॥६॥ वेद समान
कुच नही ॥ तप नहि सतीह समान ॥ग्या समान
नहि कुरव नहीं ॥ लोग समान सुरवान ॥७॥
घट रहे मारत संपदा ॥ कोच हेत धरेवै कार
उरत ती मानत कीच कुरव ॥ नर तिम तेल परि वार ॥८॥
श्रागिना तिस जमो हतै ॥ पुरख कामत पर लोक ॥

मन दुख ध्यान हत ना मिटै ।। तन हेत नवंद अतीखा ।।५।।

कवित:- विरच रूप जुत विघन ।। कीर अवतरे निसारद
मातुल परव जिहु समल ।। उरन हरि नारद रिसय
उद ।। पि. और ... नवीन ।। अमरत पुर मंडन ।।
दुवध वंस गुण सदन ।। अरच पालक अधं खंडन ।।
जिण भाग सुरन अन भाग तन ।। आसुर कुल दल
धपी तद गई सकल ... तीयां ।। सुर देवन धार
की थीयो ।।।।। अस अमरन जिजि अरज ।। राम कहीयो.
चतुरानन ।। तुम दधीच रिख अतान ।। जाइ
जाचो सुनंदन ।। जद अमर अवनी ।। वचन
अनमोल विनय आतुर रिख जाचिवा ।। गया
आयत चित चाहे ।। प्रभु भुवन जई भावी समत ।।
दन इहरह अपारी शवे ।। वज्र थयो जिण अनघ
विवध ।। जीणि वेला सुर अपवे ।।२।।

दुहो:- कीर की रूप विरारीयै ।। लगो पोरव सुरेस ।।
तै दुख कमलन वन सही ।। जसे पो मनरव विदेस ।।
भग अर्ध + थयो अपतोभता ।। विरणि सुर राज निजसथ
जुज भुवन जद दुजन मां ।। थये सुर पाली भार ।।२।।
पंच हजारह वरख त्रिपु ।। लग इंद्र निजधाम ।।
आप हुता सर पद थपे ।। पड़ियो नृपत निडाम ।।३।।
हरक भ्रम विभाग हारी ।। देजाल नर ची ओम ।।
इन्द्राणी सम इन्द्र पिहर ।। जायो मरग मनोज ।।४।।

छंद वेअक्षरी:- सुत प्रताप कहत संचारी ।। दुध मीनक
अगो करवारी ।। सुक अद्दीनी दगो अतेवत ।। जाची
भाख हेके हैन जुत ।।१।। ता कईयो जद आपअमोही ।।
तो तद दी चो नै डोलै ही ।। साठ सहुनी नाम
सीत कारन ।। दिख इह पई रन्ध जग धारण ।।
साच देवता पुत्र थपा सकल महिव आच ।। भार
सुर लोकह ।। पुत्री तैरह करीप अवीनी ।। देख पुजा
काली हेत जुत दुनी ।।३।। सित अर कीस हेर जाह

समापी॥ दरस चारमह परसनी थापी॥ वे पंजा
सिरवह सुज थापी॥ नर दाहा र वेद सराही॥४॥

दुहो:- दीरन पुनी सारद सदिस॥ वी सुरं वह दाइ॥
नाते धज पूरण थई॥ संताति वधन सुभाइ॥४॥

छंद वे अखरी:- सुज सर पुनी महा मन संग्रह॥ कीधो
वन सोभा अखहा कह॥ साप वनन फिर रिवह
समारयो॥ दित पाई विन हन संजर आयो॥१॥
वसुधां मुनि निज उदय विजोयो॥ जाल रवारो सुजि
जगतह जोयो॥ दिग्र हेमा चाल धाय विमाई॥
धन तव कीधो वन उवाई॥२॥ पाथ सरस जह
जदु पाई पुआयोवर दाता सोहि जग्रह वणीयो॥
चाम प्रवीन कठ सीदि दिल भ्रम॥ सोतुं कह्यो
लहयो मति मारग॥ सो आखी तुला पुष माता॥
सर रतन पैदा थई सुख्याता॥४॥ माति ध्यानी
मुहि सदा संभोरे॥ नर सातक भारवत निर धारे॥
परम चारमहु कवहन पडीयो॥ नोम उभीता पता
निवडीयो॥५॥ पुरव अगत न पेखै विद्यार्थी॥ रयो
रवज भारवत थाहि नंक जाणे॥ वेदां जोग गरई वेद
वड कह्यो धाता चीनो जग लाइक॥६॥ चारी
प्रथी राह रद तु पुरित॥ राह धांग तोहि कहत
धातोकत॥ वेदन विखै रहो तु थाहि वण॥ वेद
जरम तिहि कहत विन रवण॥७॥ [illegible] रुपाई कवी
सह कला रटत रत नाम उजास॥ तिती सद पत॥
धर नहु उला जुजर थपोहदी॥ पंचां कलप अखर
वखोही॥८॥

दुहो:- गाल व मुनि अंदेर नृप॥ अजेयो मोहि निरास॥
मैं थोरी निज भगत जिणि॥ पुरी सव विध्र पास॥१॥
जिग धया वा राह भी॥ वेद ब्रहम हु जांणि॥
पंकज भी थी धज उपनो॥ पंक जह रह विहांण॥
है गीता अवतार की॥ धवहि कथा वेगाह॥

जिहि मधु कंटक मारियै॥ वाति वेद सुभाइ॥३॥
लीन भई धार जल विषै॥ तन त्यागो तहू मांहि॥
कमल भयो तिहि जल मधी॥ ता विच ब्रहम सिधाहि॥४
प्रभु रथ रूपी ठाई तहू॥ रे रहै सेख सिर सोइ॥
मधु कंटक जहि उपनो॥ वेदां हरता होइ॥५॥
निगमर सालति थापि जाहि॥ कीय धानुक कोपहीन॥
त्रिक गमाई जगत की॥ करि जलह होइ लीन॥६॥
छंद वेलप्रसरी:- वेद हर मनह विचारे॥ चतुरानन करता चित धारे॥ हरि दुख करण नई रवानता॥ यौं है ग्रीवा रूप सुथंता॥१॥ सुर चंद जिह नेत्र ससोभत॥ सोभा चित रह दंत विमोहत॥ ब्रहम लोक गोलोक कवि परकाश॥ थथा प्रहर कर खल खंडण॥२॥ तिरवमी वाच मेच जाहि छट लोचि॥ पेजा की सिर वो मह पर तरव॥ जापर सिव साल ललिहि सुर हित जुत॥ वेद उधारे विरव सुवंधत॥३॥ महा धरम सारो चन मुनिहि॥ प्रास विये हित सुगत ध्यलोकहि॥ संवा पद सिह पुत जांण स्व॥ विवह मलायो धरम करम तक॥४॥ सुधर मता पुनह मत वादी निरख मलायो पीत न जनादी॥ नेतामा प्रभुनी कुंवरे तन॥ वलम धरा गिने जग वंधन॥ केल उलंघ न हुवो जांणि फल॥ पंकज ता मह धारीयो सामल॥ सुनत पुकार लाहि पुठि रक्ष॥ ब्रहम रवि चीरे ग्रहीयो वंछक॥५॥ वीरां ली तिह लोर विचारै लच उत उगाह महा चित धारे॥ दिरव तिह लोर धारि॥ दुवोही इखनी धायी प्रजा जनादी॥६॥ वले विवस कारख कार काहि॥ ग्रीह विच धरम थापियो हित ग्रहे॥

दुहा:- धरम धारग रता धरम॥ धारि जनम सुधार॥
पाछा जग पालण हुवा॥ करमादिक अनुसार॥१॥
धरम धारग का नाम उतर उतरी॥ मंत्र परवत

भीखम सिर ॥ इक दीन ब्रह्म विख्यात ॥ सिधा-
दिक रिख सुं मिलै ॥ पुछत प्रसन विचार ॥२॥
संकर ओ भी सकौति जुत ॥ प्रज मेटन प्रवितंस ॥
प्राया तहां प्राचितीया ॥ पुरण देव प्रसंस ॥ ३॥
हरि वैरागी रूप हरि ॥ पुछ्यो प्रज प्रवितंस ॥
सो मोह जुज थिर थपत सुं ॥ भीखम कहत प्रसंस ॥४॥
नारद कहियो इंद जु ॥ मेरवी चरम प्रमोच ॥
मोह मिटा महान फिर ॥ भीखम कहि नी जोग ॥

छंद बेअरवी:- देव रिखी चालिहे मोहि तहै ॥ प्राका-
सुर पति लयो अरवोई ॥ चरचा तहां हुई चित
चाहत ॥ कहन परम पर हित जुत कारन ॥१॥ रिखव
गुर सुरसरी त देख दीन ॥ सुमत कहिरव लय कहत
मीठा तन ॥ तहा प्रति थ इक उतीम गत ॥ प्रायो
वन किहरथ निजि प्रतीत ॥२॥ परम चरम तहां रखो
विछायो ॥ पुछ्यो सुमितंक प्रति थ जांयो ॥ इथ
पिता जद कहियो हित उपकारि ॥ हु निस चो
चाहत देरत हरि ॥३॥

कवित:- नाम लय पुर प्रनान तदन गोमती विवर
जात ॥ मिले देव रहां प्रमंत ॥ जिगन इक
करण परम हित ॥ मन प्रति चाता महु पती ॥
इंद तहां मिले प्रलाइक ॥ पदम नाम प्राइ तहां ॥
प्राप जुगो हित कारक ॥ रिख तई सकल मिलना
जीये ॥ पुछत रिल उतीम करन ॥ परलोक लहंत
तिर उपायदा ॥ मव मं कंचन देदन जरन ॥१॥
प्राइ तेह फिर प्ररवीयो ॥ परस निज चरन सुने
सुर ॥ प्रथम ग्राहि धावियो ॥ कांइ करती पे सुवा
सुर प्रनजल कल चित प्रमल ॥ जेत प्रति थ
करीजे ॥ प्राहि लोकह उधरे ॥ परम लोकह
पुजजे ॥ प्राकीजे रोह गहीया चरन ॥ जे ग्राहे
नान पातली ॥ तेह देह प्रतारि प्राहि उपचार ॥

सित दिन आगमन जो रही ॥२॥

दुहो:- ग्रहीया धरम विसेस गिथि ॥ सबै भी कहत मुनेस॥
जो पालीजै प्रीत सुं ॥ छोड़े मन की रेस॥१॥

कवित- दस दस परब सहस ॥ कह्यो मन व्यास विचारे।
राज दान आपदा ॥ मोख च नाम धरम निहारे॥
रहित गुज थिर चित सिथर ॥ भविख भारत आगम॥
वंतना सकति सकल ॥ कही जुत नीत पराक्रम॥
धरम राव सुणे संतन सुरवा ॥ मन भ्रम मोह
विखंडु को ॥ करि राज नीत मही हरि क्रिपा
सेत प्रविनह छंडियो ॥१॥

॥ इति सांतिक पर्व ॥

॥सम्पूर्ण ॥

४.

~ : ॥ -पश्व मेध- पर्व ॥: ~

दुहो:-
हरि हर लंबो दर सहत ॥ वाणा जुगल मनाइ॥
कथि कौड़ि इमे दन परण ॥ चिंतत कवित उपाइ॥१॥

कवित:- सेत परव पंचमी ॥ वार रवि, सुवन महा गहि॥
भारत मिगना मक्षि॥ वाल भासि कर दसहि॥
तुला जीव पर लरव ॥ ईख विच गम गमा लत॥
सकर भोम सुत वहठ॥ चंद रहि पंचन
पालत॥ हेमत पर वर रिस थपां॥ धम दहर
उत्तर निका खींवे॥ कवि सीह कहत -पस मेध
पर्व ॥ उर गुर व्यास प्रकासी ये ॥१॥ राजवेधपरोपत,

पंस खग धार पहरे ॥ पंथ नेत कुर रेवत ॥
भार अवनी उतारे ॥ [illegible] राठ अनत अपारे ॥
करै धर्म कु कुला क्रम ॥ धर्म राजन धर्म धर ॥
मोह पायो आगम गत ॥ राह देसा देखि प्रकरण
करण ॥ जुज धिर कीच समाधि धिर ॥ है मैं
धर चायो हित प्रविन ॥ करण अधीरवत त्रिवहर ॥
दुहो:- अविनासी प्रकरण करण ॥ सर सत सहत मनाव ॥
पंडव किरत उचारीयो ॥ कोविंद जांनि प्रभाव ॥
छंद वेअसरी:- कथनं कथ अग मेघ सकारण ॥ अथ दुज
कथ कहणीं अन वारन ॥ मह वाडके अनि प्रवित
महा माहि ॥ कवि जन दन कंव तन सम सत कहि ॥
धर्म सुत कोहित जिग कथ मित धारि ॥ नव
सुप सट करही हित संभारि ॥ सुंवत रिव राजन
सुर भत जाति ॥ कीधी दुजनम नसुरव सुचा
हित ॥ २॥ नंद्र हराय जेथ सुभ अपूर ॥ जिग
रचीया अवनी तजि रन सुर ॥ अनुगी लाने अगह
उत पंत ॥ गरम प्रवेस कहयो दुरव अनजम ॥३॥ क्रम
फिर गीता विवेक विचारे ॥ कहियो अष्टांग जोग
हकारे ॥ गुर सिरव चो सम वाद चीत गाहि ॥ कवि
भुज मोह टालई किरत नह ॥ [illegible] प्रविरत करम संसार
संपूरन ॥ निधालह सीखद गावि दूरन ॥ उतंग
रिपन सिरवन अलोकत ॥ गुर सिवन सम कहत
परम गति ॥४॥ अक्रम क्रम अनुचो उतिम ॥ धरम
धरा जो सहत कहि तिनम ॥ जिग हंस्या अप मेद
फलनहु जुत ॥ संम उत वित अपारवन कहि सिखति ॥
चितारसट सुत भार दे अण दुर जुज धिर
दुरव सम कहणो दुर जुर ॥ गज रोगे जिम
पड़णो सुच कहि ॥ किसन कुकम सम चीन चीत
कहि ॥५॥ चितारसट पोरवि जद अपवर धर्म ॥ करतो
सोच सराजन तजि क्रम ॥ कहीजो ते धर्म सुकंत

क्रम करि ॥ अवनी जीती भुज बिंद अपार ॥८॥
तोनह सोच उचित उचित पानि ॥ जरयो मोरह गंधार
संजुत । मै बिदुरह कौरव अभिमानी ॥ अरमीया
कृष्ण मिस्ट अपानी ॥७॥ वसनां साहि ज्ञप्ति बिण
वेरवत अनतम करम अधम अवेरवत ॥ वरजे हिह
जुवत सोसत धृत ॥ हठियो महरि दजोवकहा कुरत ॥९॥
धम सुत हरि अभिरवरव राज धुरि तजे दुख गति
दुर चार ॥ :—

दुहो:— हैं मेदन मां अरवनी ॥ जे बिरतंत बिचारि ॥
रवि कहि सोदिज अनुक्रमै ॥ सुण कहिया निरधार ॥१॥

कवित:— जद पति अरियो दसा नर नाथ निहोरै ॥ सोकहि हेतु
मुगत ॥ सोक पितरां दुरगारे ॥ सो राजन विसतेरे ॥ रहे
हय मेघ खरा खर ॥ लेम पान सुर सकल ॥ करहि
जिन पां नेस अतुर ॥ पुरजन अपार ॥ सुधा श्रुत
जिम पाभति ॥ इला दिह चित अमल ॥ भाग लोगै
अगमाहि ॥ मह पिता कही सुजा मह पती ॥ राजह
नीत बिचारियै ॥ कुल धोत सती अस आरभे ॥
अब मन मोह निहारियै ॥१॥ जांच जोग जांचो यै ॥ करण
जोगह सुनि करीयै ॥ वेद व्यास नारद ॥ पास परमह
अनुसरीयै ॥ मुन माते अर्चौ ॥ सिमुख मति
है परीया वट ॥ भावी जोग मुचालह ॥ अथा धन चाल
सती वर ॥ दिन विरंम धरा मुरवि जांठी ॥ जाति
रिम ॥ तैन न सीर महारिया ॥ महाजन जिस्या जुध बाद
मिलि ॥ जोध अजारह जारिया ॥२॥ जुध थिर जुध
अरवीयै ॥ सुणह मुनि राव महा मति ॥ मै भीखम
द्रोण महामति ॥ मै भीखम द्रोण साहिबो ॥ दिल
मंझि करन जुत ॥ तिह कजे बन विरम ॥ मारे
अया फिर कीजै ॥ ओह अधम उधरे ॥ पवित्र तोहि
राजन कीजै ॥ अब मोहि क्रिपा करि चित अमल ॥ देह
दैरवन ग्राम सारियै ॥ वन जेमज मारे माहो ॥ जांचत

नह परजाइये॥ कह्यौ व्यास जद उत्तम॥ वचन नर विघन अवारण॥ तूं बालक बुधि नेहि॥ चित वित ग्रही खदारण॥ हम कोइक अब हितह॥ निरन नेम निरखन विचारे॥ रवनी सुध जीवन अधिक करना निरधारे॥ तातें जांण हमह कथ हित तहत॥ मन वन जांण तत जीयै॥ न धर्म राव कुल धर्म धीर धरि॥ एव नर वीर ग्रही जिवै॥८॥

छंद बेअखरी:— व्यास कहै सुण राजन अघवर॥ तूं किम करत सोचि बुधि अपतर॥ सुधि निज धरम जान धर्म जोहर॥ सो तूं सब जांणत हित दुत्तर॥ असुर असुर + अस भेद करत सब॥ सोहिज थव जांणत हित दुत्तर॥ ही नृपा अजाइव॥ सरव भेघ नर मेघ सकारण॥ कौ किन रचीजे आक्रम उचारण॥२॥ रघ कुल गुरवी मरवा करि रब रह॥ वही पोराक्रम तकुले अवंचह॥ भरथ दुकत त्रिपत सुत भारी॥ कहणा कुंतला मस हित कारी॥३॥ सो रच जिगन प्रथी सा उजल॥ प्रोप धरा सम कंचण उजल॥ अपनी तणे वेध अवने सुर॥ दे दर जोधन गमे खरा खर॥४॥ धर्म सुत कहत सुणहु दुज धर्म धरि कारि वामो कारिज प्रकट करि॥ मुहरत मात सोचि जद पुजनम॥ जा पाछे कोले हित संजम॥५॥ काइयी राजा सुरत सकारण॥ त्रिधी किया जिण अक्रम सकारण॥ अवीपा के हेत विध मानि वारण॥ पद लेह लीतें होये अपाया॥६॥ हेमा चाल चैं कंठ ढंढि हित॥ निभ्रजा मुखे हरत उपवंछत॥ मोहा दिक ब्रांणे नृप हित सुध॥ वह विधि कैरे रची है जिण सद बुधि॥ ७॥

दुहौ:— मरुत जिगन चीह हरन हित॥ व्यास निदोरव बताइ॥ फिर राजन पाण्डव सभी भोरवन कथा सुहाइ॥१॥

छंद बेअखरी:— आप देव मुनि हुवौ विसारद॥ तातें हुवो-ग्रंथह

इत्यादि ॥ पुत्र देवता के रखत चाहक ॥ परवु
कारन कि लिह प्रेरि सुलाइक ॥१॥ जाके हुवा पुत्र
तो पुर और ॥ त्रिस री जामें जेठो कुयवर ॥ ताकें हुवो
कल्याण नृमैं करा ॥ ताकै लक्ष्मी नेत्र रातै दारन ॥२॥
सुवचनी ताकै पामी सिच ॥ जात्य कोस समोद
विच विच ॥ बहु दुसमण जो पै जिणि भुज बल ॥
मी कीयो बीजै रचै जिण केहल ॥३॥ जाको धम
धीरज राते जांणे ॥ पारि सिर सिहजन खीव पंणे ॥
संरवत सिध सबद जेथ परि प्रसहज कहि का तिनो
पैदा सिन सकारण ॥४॥ ताकै हुवो कही धम दुस
तर ॥ कां यास जाकै ऊमर तर ॥ सोचपो करन
जिसो विमव सक ॥ चक्रवरती पुरुष चपास चक ॥
सो जिण जिग कीया जस पर सुर ॥ कै प्रकार
होता रातै करि ॥ धम करि पुरत पीत ऊंच
व्रत ऊंचहं करिका पतिणा पाषा उचता पातै ॥५॥
सो व्रत तिखारि जैण जिग साक्र ॥ प्रांणे करि दुजनम
प्रण पारत ॥ सब राजन किन मोलियां पांणी सति ॥
बीजै विहारी केई कंछत ॥६॥

दुहौ:- प्रारम्भ चवेत नृप राती सुणो ॥ थवी प्रजा पाते
हिरण्याता थी दानव देवता ॥ पैड़ा हुवा प्रतरव ॥१॥
प्रकार रिख री सुत भया ॥ वरत पाति संव्रत नाम ॥
जेठो जीव प्रजोग करि ॥ कीयो स्नेह निकाम ॥२॥
गयो संव्रत छुटै वन गहन ॥ बंधव वेष विरक्त ॥
जीव जला वण पुरत नुं ॥ रहियो गृह जिम रात ॥३॥
पुरत जजा वण जीव है ॥ थपो मघ वण मान सांत ॥
वासव सुण रह वारता ॥ प्रायो रिख वर ठांण ॥४॥

कवित:- कह्यो इंद्र तरि पंद ॥ सरस सुर गुर दुरव दरखे ॥
तुम जजई रह नृपत ॥ कीयो हम तुलह मकारण ॥
प्रब रह केन मारि करह ॥ जीवे हम जीव प्रवोरवण ॥
हम लहे रहे प्रमहन कहन ॥ प्रबर रिखह समजोरवण ॥

गुर अमर अस ली तद असि को ॥ सुणि मघवन मम कथ सरन ॥ आवेमे तो तिन करुं अवर ॥ उंच विरहं आवरन ॥१॥ तै नि सुंच निरमूल ॥ जैसे तुमल सम कंदल ॥ विसव रुप नै रुप ॥ कैसो तुरि पंद मुजन बल ॥ तै राकस है रले ॥ सुरां अग लोक बसाया ॥ तै विना सुर जिसा पाय रण कांज अपणाया ॥ क्रित तोहि अंबर सर भर करण ॥ जो रम थान न जा वहै ॥ कलि मोभि अफेरवत गंग ॥ कुं विध विच धोरव लगाविं है ॥

छंद बे अरवरी :— श्रवणे मरुत नांम कथ असरन ॥ आपा सुणि सुर गुर पै आवन आप कह्यो मो अपार अर अप्ति ॥ वेगन जावो जिका भ्रत वंछत ॥१॥ गुर जद कह्यो सुणहु नृप स्राति गुण ॥ अबहुं थयो जाजन थी उरण ॥ मघवन बिना भूप माहि मंडल ॥ अवरन जा वसि नांहि अखंडल ॥२॥ सुणे इह कथन गुरन मुख नृप सक ॥ बलियो मुख कीं वदन अवंछक ॥ देव रिखी मगन हितह अन उर ॥ आवो मुरत मिलन कीय आतुर ॥ विमनह नृपत पेखि जद विप्रनविध ॥ नारद दुन पुछ्यो प्रसन्न दिल ॥ जा संबर तक पाति अपै जल ॥ जद ओपत फिर कह्यो हेत जुत ॥ विध किह लहुं अंगरे वछत ॥४॥ नारद कह्यो सुणहु रवत नंदन । कांचो रसी पुरी हित वंछन ॥ जीव कहै रही दरस काजि ॥ आवत है विन पाति निज आरिज ॥ तब तिह द्वार कांधि इक अन सह ॥ बलैव मुख जिम निरख अवं छत ॥६॥ इहि गुरा निरखि नव रिख आरिख ॥ प्रसन्न कीं पाछै गुर पख ॥ मुरतह जांम मांन कथि सत माति ॥ आया कांचा रसी अलौकत ॥७॥ रिख काडियो जिहि थांति देवरिख ॥

आयो मूरत निहारि परतख्य॥ कर अंजल करि तहां
लार क्रम॥ भूप पति सरस सुणायो अन भ्रम॥ १०॥
दिल तद रिखह रोख गहि दारुण॥ कीयो तप को
आतीहि अकारण॥ माहि पति जद लखन मुझै॥ चित
मुच्छ जिग धांमं फिर मन सूझै॥ ११॥ तांम त करतिह
प्रसन होइ तत॥ कर छाया आयो चित वंछत॥ राही
तिह खड़ो मुने स यथा ठावु॥ पै कहियो राजन
सुं पर लख॥ किहि विध मुरत मोहि तैं हित
कर॥ पायो अप्रछन दसा अपंपर॥ नृपजद
कह्यो सुणहु रिख निरमल। मो नारद कहियो
तजि कस मल॥ १२॥ अंग्रां सुन तांम कहियो॥
इम जीव करनै जा फेर दुराजम॥ माहि पति कह्यो
फेर सुणि निज मुनी॥ जा चुनाही जीव इह जांनन॥
तांम संवरतक कह्यो निरखत[illegible]॥ दिढ चित
नारद गयो कमण दिस॥ राजा कह्यो देव
रिख कथ रारि॥ जो करि अगनि प्रवेसह प्रगटि॥
मुनि वर कह्यो फेर सुणि माहि पति॥ जरत नहीं
नारद तो जारत॥ जित पातग मो लाइ जोग जुत॥
वचनै करस लगावत चित हुत॥ १४॥ हु उनमत अत
हित तन डालत॥ काहि तो नृप तज जोड किहि
कुत॥ देव राज दुरमद अति दारुण॥ करति सो
मो आतीहि स कारण॥ १५॥ जे सिह चाल कुप
करोहत जुत॥ तो तो कहुं इन्द सम उनमत॥ कहियो
नृप बोल करि कोमल॥ चलु नाहि हुवा चा
निश्चल॥ १६॥ सिव तप तजे भाग नह भातै॥
अगिन जिगन हित हन उबासै॥ दिग पति
डिगै मेर जो डोलै॥ वह मिथ्या तो मुरतन
बोलै॥ १७॥ तद बाचा सेठि सति जांणे अगिन
पति॥ कहियो तो करिहुं रिख सत ठित॥
हेमाचल मेरह दिन अवहल॥ १८॥ मुंजवान परवत

इक उनमत ॥ तामैं धात सात अतिमता ॥ वरै छहु
रित नितह अवरता ॥ सिन तह सिवा सहत नितसोभत॥
विध विध सगपण गिरन विमोहत ॥२०॥ तामो गणी
जोग पाते त्रिनियण ॥ त्रिपुरा अरी मसांणी नीयतन ॥
दिख दोही पसुवा पाते अनड ॥ वहना मोधा रक
बाधं बर ॥२१॥ रित ऊठी पुरखा सुविचारी ॥ कपर
छोर इक पाव बिहारी ॥ वरदाता पुरव उसण विखंडण ॥
बामन सिव संकर ब्रेमा मुणि ॥२२॥ हरि केसह हरि केत
मुंझ कहै ॥ कोधा कार देव देवन रहै ॥ विसव रुप
सरबाद व्याप विछ ॥ पोपा सहस चाव गिरखा सत
सिध ॥२३॥ सुजह खाते धारणी वेलुदंत ॥ म्रिग व्याघ
महनु धन वीकस ॥ धरसो माव केह चिरवा चावि ॥
एकर पाते पसु पालहे दुसट दवं ॥ भुता पाते
विरनमा धुज भारी ॥ मध्या मह विलहत अनगारि ॥
महर मतो जाव सुरेता माहि ॥ कपालो मालो गण पालह ॥
माहि धातो त्रंबक सुअले सग ॥ सुदु बाहा सालो सहसा
नग ॥ सह सत सिरा सहस कर सोभन सुध रुप
बह रुप अनो अन ॥२४॥ धारेछि धारे उमिया पाते
धुरीति ॥ से अुर गव देसा सुकरा साते ॥ नीय संगह
विरव मरवण उग्रतप ॥ ईसुर अपज पिथु हर पिथु
पे जापि ॥२५॥ वैतर विकर नाथ नाथनवादे द्रिठ
चित जापि कवि देव विसारद ॥

दुहो:- संकर तक रिख सुकत नम ॥ काहिको साति परकार ॥
तै इहकान अलोकता ॥ करि सिव प्रसन उदार ॥१॥

कवित:- इन्द्रो वाच :- तांम इंद सुरि पंद ॥ कह्यो उर सरस
सकारण ॥ तो किम चंता कठण ॥ करण विकरण
गाते दारण ॥ कहे अनुचर कचर सेव अन नेव
विचारत ॥ कना भेदत जि वेद ॥ दिवस निस मना उधा-
रत ॥ कुल धारस देव कुल अन कयो कहि सत
पुरख पर सुख सकल ॥ पांडे अजां गुर धंमरे ॥

वेग विचारे बुध्धि बल ॥ सुण सुर गुर कथ श्रवन ॥ हम सम मघवन उचारे ॥ सो व्रित ते गुर परत ॥ हेत गुर तह चित धारे ॥ मोहि मोरे मोहि उचार उपन जोग जजावत ॥ थयै मांत खंडांण जीव जीवन नत धावत ॥ कैसे लोप जेही कथन ॥ तुम सर नर गुर तह करत ॥ दिल सुध दुसाध समध्याध दिल ॥ जिहि हम इह दुरव पाजरत ॥ २॥

दुहो:- इन्द कहयो रिखि यंद सुणि ॥ तजि मन सोध समाज ॥ संवत तो सम किम करत ॥ मुकतन जोइ निकास ॥१॥ जग जीवन सम जीव जद ॥ इम कहियो निरधार ॥ तो सर नर दुरव तोह तिम ॥ मोसम मोह विचार ॥२॥

छंद वेदक्षरी:- सुर पति सुणे सुर गुर दुरव उपाइन कीजे उपाय मुकत चीन ॥ कहियो गुरव इह विध तुम कहियो ॥ इह रितज कीये इध कारी नह होती व्रत वेस निर धारी ॥ २॥ वहनो वाइक कीयै उपवंछक ॥ ममही तो वजह कीरि उर मत ॥ मघ वचन एह सुणि उनमद ॥ वेग वहन कीय पंथ विरमारद ॥ ३॥ वन वेली जारत चित व्याकुल ॥ मह पति पै आयो जुतकमल ॥ मिल परसा अगिन रपति गुरव ॥ तविये बाल विहडग पारतव ॥ ४॥ कहियो भूपति तादजोरि कारि ॥ अगिनन लेहे गमनस आतुर ॥ ज्वाल नत तर्द कहयो रिरव जुत ॥ मिध रूप मारि कारि जीव उपवंछत ॥ ५॥ सुर पति कहयो सोइ व्रित संभारि ॥ कारि जीवह हो ता उपकरा कारि ॥ मघ वनहु कमलो पोयै निज मन ॥ धति रूप पामसो पोइस अनगत ॥ वज्रन तणा प्रहार विरव्यात ॥ विध विधरूपरव माहि आनि वाता ॥ एह सुणि कथन जलत पै उध्रत ॥ आयो रिरव वाते पह आरत ॥ कहियो सुणि रिरव राज श्रवन कथ ॥ रिरव एह इन्द कहयो समरथ ॥ संव्रत ताम विचारि वचन सह ॥ कहियोआति

अग्गिन इह लाइक ॥८॥ अरघ पाद ग्गहि गुण
चित आवारे ॥ चोंसठ चार सुर सुरन गुणउधार ॥
रिख सम अग्गिन कह्यो जद सांति रह ॥ इह दह
हित थयो वसी हह ॥९॥ पुजा ग्रहु तुमह ग्गहि सादि
पाति ॥ वासव तो छोनै मुहि कुल खित ॥ मुनि
जद कह्यो चारि चित करत मत ॥ जातु जोतिग
जोले मत तप जल ॥१०॥ चलत पवह जेहि कंपाति
चित ॥ आयो अग्गिन सचन पै दरव आति ॥ तत
कुत मुनि चा वचन सकस सुणि ॥ मो कलियो वज्रह
नृप मारण ॥११॥ रिख अवतन वह आवध रिच राजन ॥
फेरै अति आवत तप पुरन ॥ रहस रहस हिमन पछारि
देव ठिग ॥ सुर तह जद जान्यो इह मिग मग ॥१२॥
कंपत चित राजन कर जुत करि ॥ आयो पासि सुनै
सुर आतुर ॥ कहो यो वासव वज्र कोप कित ॥ कंपति
हिदै दीन गति दुर कित ॥१३॥ तपोधन तप ह वलो
अण तप ॥ मांगह हित कीचो आवध सच ॥ सुरपती
तप पेखि रिख अप्त हन ॥ आयो निकट तई नाजि
गति इन ॥१४॥ कहियो मुनि अब मोहि उपा करि ॥
आयो जै खिज मती अब आतुर ॥ संवत तास
विचारि देव मति ॥ कहियो करि कारिज इह मति
कित ॥१५॥ ग्गहि निज भाग पुरन सम कर जह ॥
कीजै जिग कारिज अकता कह ॥ सत ऋत तास
मांगि कथ रिख साति ॥ विच विच कोज
उपजत वंछत ॥१६॥ सोम वलो करि पाँन सुरिन
सम ॥ आये फिर सघवन मि निज आश्रम ॥ जीय
जिगन रिख हेत राव जद ॥ विध विध पुजे विप्र
विसारद ॥१७॥ सो धन आनै पारि करि दे दुज
अव ॥ ग्गहि दिस सो कलिया गुषा ग्गहि गव ॥
हारिक अहल धाम नीजि धन रहित ॥ विप्र ग्रह सधा
करै चिन वंछत ॥१८॥

दुहो — व्यास कहाई दोरव सब॥ चितजुज थिर हित चाहि॥ प्रगत मंगावो घात घति॥ मरन करिज-घन थाह॥ १॥ क्रम ते जह -प्रायित क्रित -घाग सघुम-घथाह॥ धम सुत पेषे गिरधरन॥ इम कहियो तद चाहि॥ तै राजा जीतो नहीं मन सन महा निदान॥

कवित:- क्रिसन ताम करि कृपा॥ कहत जुजधिर सम कारन॥ ब्रेत सुर वासव हुवा भारत -घाति दारन॥ तद त्रिकरस-घाति दुखित भयो गुप्त लीण सुनंघह॥ वज्री धार तदवजर॥ कीयो कर हत सकंघह॥ डोल चितदे तेस॥ हुवो जल लीण जिवारं॥ फेर दन्द कोपिये॥ -घागिनत कै निरधारं॥ मिलि वाय वहर -घाकास॥ सम पंचुत तह जुत थयो॥ निरधार के इंदी दीसवो॥ वासव मनह विचारियो॥१॥ वाचस्पति जद विरच॥ कहे इंदह छल कारन॥ मनह मात मन मही॥ हयो -घघातह दारन॥ तद राकस पंचत॥ प्रमा हरन सत पायो॥ ताजे इन्द्री गाति -घपुतल॥ जाय कम मोम वसायो॥ मन -घकति -घजीता धम सुवन -घारिजन जात विचारिये॥ जाति गुपाति -घार -घघह जिणे॥ मन तन मारह मारीये॥२॥

दुहो:- श्री भगवान उवाच :- कृष्ण कहत धम सुवन सम॥ सुणि मम कथन सपेम॥ निगम कहावत मन वचन॥ सो करि धीर मन नेम॥१॥ तै जुध जेते सत्र -घजर॥ कुर कुल सार पहार॥ मन सत्र जिता विनह मन॥ जे मत मांन उदार॥ तन हुं दोइ वाधा -घतुल॥ रोगा रोग विचार॥ फेरवद करि -घा मय मिटत मन दुरव ग्यान उदार॥ ३॥ परसा पर इह जनम गिणि मन तन तन मन मार॥ एक लेहत दुख एकते॥ एकै एक पहार॥४॥ पित सलेसम वाइ विदि॥ सर भर -घातम चैन॥ एकै वधीयै एक थी॥ बाधत दुरव गहैन॥५॥ सत राजस तांमस प्रकित॥ रे तिहुं फेर संभारि॥ वधीये चाहिये घट वधत॥ मन तन दुरव निरधार॥

छंद बेअखरी:- कहत किसन सम जुज थिर कारन ॥ अति हित
चित सम अधम उधारन ॥ जु अब राज समाज छोरि तन ॥
बन किम मन धारत अन बछत ॥१॥ जीत कदन करि पेहली
अन गम ॥ विध्य लोहि अविध दुवत अब बिसम ॥ तै बन
बसत महा दुख तांको ॥ थित रिवत छांडि मांहु हित तांको ॥
अरतमें रकन बसन अधीनो ॥ किसना धकरि अनेसो
कीनो ॥ बैरागह तुम किम दुख बोले ॥ रिवत खितत जि
नित दोह सखोले ॥ कोधक दुर माते कांम अध करि ॥
किसना पदह धहारि कुंकरम ॥ पाय सहत गो अब
तुम पेखो ॥ उधजि रीन रखित खित अबरेखो ॥४॥ किंना
दिक बह अगाध अहेतु ॥ बन तुम दुसह मिले दुख देतु ॥
करमो रह जंमांद फेर कांहि ॥ दुख दाता मिलिया सुख
आदि ह ॥५॥ जे धारक चित सेन गंध्र जोपि ॥ लोखा
ग्रह फिरे मन लेख पुज वर कपट भीम खिरख मोदज ॥
अबगुण रता संमरह उद्धिज ॥६॥

दुहो:- उमें मन मन मां अनंग ॥ बिनां मलियां दुइ मार ॥
कांम बावांणे अनग रकित ॥ मदन नर कांम विडार ॥१॥
मन जीतन बिन नन मिटत ॥ मित मव दुसह दुराम ॥
आसा पासह बंधती ॥ उपजत खपत अपार ॥२॥
राजन थी इम रिखन सम जदु पति कहि निरधार ॥
मोह मिटायो भरम को कर कुल धोह निवारि ॥३॥
मुनि जद आनंदत थया ॥ जुज थिर रथेये सकाम ॥
राधावर हित मानियो ॥ टालियो मोह दुगांम ॥४॥

कवित:- तांम राव दुज राव ॥ पुजि मन मोह निवारे ॥ करे
पेत निज कृपा ॥ मृगा बंधव चित धारे ॥ सूचह
नीर सुर सरित ॥ न्हाइ सुच होइ नै सुर ॥ कहयो
लोक निर विरत ॥ थयो मुनि किसन कृपा करि ॥ धन
अंगोधि ब्रहम अंधांध्या सधार ॥ देव पितर जजा वचन ॥
न्रिप भवन गया रिख धान सम गइ ॥ तांम राव चित
पवित ॥ उदि गामैं निज मगह ॥ करि भीरवम निज

कीधा ॥ दान पुनिह दुज आरि ॥ चिताउर संग लीयां ॥
फेर राज पुर पाधारि ॥ बंधवां सहत छत्र पति अचल ॥
प्रज पालन करतो थयो ॥ असमेध स्रुण मन हरि कृपा
बुध विचारह जांणियो ॥ २ ॥

छंद वे अखरी :– वैसंपाइणो वाच ॥ राजा मोह छाडि विचारह ॥
धन विलसण लागो धुरि तह ॥ नंदन वन जोही चित
निश्चल ॥ मुनि मूरति विलसत चित अमल ॥ छआ
ससोभत छातह चार छत्र ॥ गड पति पति धारे ब्रिद
अगाध ॥ जध नातां छातां सम देर जाम ॥ गज पुर यह
करता या गुर गाम ॥ ३ ॥ क्रिसन कहत सम पाथ तांम
किंत ॥ सुम कहि तुम जीता खल धुरित ॥ भुज चिर
किंत दुस्ट कुर दुर जात ॥ पाडि वंस कौरवा सरकज अपंपर ॥
अधमीं अपती अक्रित उपाजी ॥ रवरी ऊंभी आहत निकाजी ॥ चाचारसरा इसा दुर चारी ॥ जुध जीता थे दुस्ट
सुधारि ॥ ४ ॥ कोरव सुरना कहत अकर कर ॥ तुम संगह
मर मीयां थीयां तर ॥ अके चित मात मिलन चित अवि
हित ॥ विध विध करि नित पर चित बंछत ॥ ५ ॥ राजो
होय मन सुध धम राजन ॥ कहोत करी पै गमन सकाजन ॥ राजो होय मन सुध धम राजन कहोत करी पै
गमन सकाजन ॥ जगत पती चित धारि जगत जद ॥
विध इम कहत निकुल सम हित वादि ॥ ६ ॥ पाथ सरस
फिर कहत जगत पति ॥ मैं भुज चिर अरधि इह सत
गति ॥ मन धान तन धन जोग धारि मन ॥ पाइ बंधू
नाहि दुं गति इन ॥ ७ ॥ अब तं अजन बंध सम उव
धारि ॥ किंत मोहि सोरव समा पण हित करि ॥ सुणि
अरिजन इह कथन गमन सति ॥ पै कसटह सम बोले
जदु पति ॥

दुहो :– जैन मेजे रिख राज सूं ॥ पूछ्यो नसन विचारि ॥
बैसु पाइन सुध विमल ॥ सुण राजन कथ चाहि ॥ १ ॥
जदु पति करता मन्न जद ॥ निरखो करत निवाह ॥

छंद बेअक्षरी:- जन मे जे सम नांम हेत जुत॥ वैसां पाइन ऊहत
सुवंछत॥ एक समे जद पार्त सम अरिजन॥ निज भारवत
पुंहतो दुसतर वन॥ पारथ तिस अहियो हित तूरण॥
चित सुधा सम सेती अथ पूरण॥ दत वीं नांम सुणे हित
रुख रख॥ पे बोले रेह बिच पूरण परख॥ भरत मै
माया अति भारी॥ महिमा ता दारवो मैं म्हारी॥ अघि
चुज नांम फेर कर जुत आहि॥ अति माया हित चाही
अवाहि॥२॥ नाल बिहंडण नांम विचारे॥ निज सुरव इम
जपीयो निर धारे॥ मो माया अरिजन ते सत माने॥ अरे
निरखन की चित उचूत॥ कहि पे अकतो फिर रहिरा कर॥
दरवा सूं कहि सु क्रम दुसतर॥ उतिम चार मन हेत अब
रेवे॥ दिढ चित कहन निज सिख दोवे॥४॥ एक अत्यास
पुरांण अनीक क॥ तबे सुतो अगौ अब परतक॥ एक दुज
ब्रहम लोक थी आयो॥ तीहि मे पुज प्रतख वत लायो॥
विप्र जद मो कहियो सत वादो॥ इम रहिम सुछत देव
प्रनादो॥ मोरव चरम तो सरण सर ब माने॥ गुण तो
गिण तन अगता जाने॥५॥ एक कासि रव गोनी दुज
उतिम॥ विप्र रहिइ इन दीठो चित विसंम॥ भ्रम
वेता सो साति ता गाचर॥ ग्यान विग्यान वेद जांण गर॥
सुरव दुरव सम वेता याति साचक॥ तत जाती समरण
चित पर तक॥ जीव अगाति गाते जांण च्यांन जुत
सोइत सब क्रिया जीवन साते॥८॥ जित इन्द्रिय राहित
नित जांण प॥ तत वेता हरि हित उगान प॥ क्रमिय
गोनी पूजी तास किंत॥ बिच जुत फिर भारवे तिह वंछत॥
आतम रांम फिरि उचरियो॥ तुरत तां करमां फिर
फिरियो पुनि प्रभा सुर पुर पर पूरत॥ वसियो बह
दिन भोगरस वंछत॥१०॥ मित लोकन केई जाति माले॥
पुन राव रतन हन दुरव बोले॥ रावरंक बह बेला
राहियो॥ कबहु चन निरधन हु कहियो॥ पावर जंगम
कबहु कथा वो कबहुक उतिम अधंम कहायो॥ विहंत

सुद जागत सुपनहि पुणियो ।। गिर तर जल जंत्रह फिर गुणियो
दुखी सुखी बहु बार कहाणो ।। तांजा पांण के बार मिलाणो ।।
जोगी जती फिर जुवारी ।। रूप ही उंचे नर्क पाडे कारी ।। १३।।
रोगी रोग भोग पासीरत ।। पापी पुनी पतीस्ती नीत पति
बहु माया जायो बहु बेरी ।। सांसे चरियो फिरियो बहु ति
री ।।१४।। पारधुड़ियो चीड़ियो पाड़ियो पाते ।। नीवाड़ियो कोचो
साचो नित ।। पांत धने बहु के बहु पियो ।। रीमजर
पगसम परी चान लियो ।।१५।। चौरासी फिर फिर दुख
चीनो ।। कबहु निह चो रहण न कीनो ।। तद वैराग
मोह मन तजि बत ।। मे पायो पामण जात सात मात ।।
तजलो कीक काजा सद अनंतह ।। थयो निकांमो कांमो
थानह ।। पै बहु विध बहु सुख जद पायो ।। निज
आवाम भेद न सायो ।।१६।। मन बाधा पबकबहु
न माने ।। अब देहद दुखह नर हांने ।। जीवन मुगत
जुगत सुह जांणे ।। आसुर सुर चित भेद न आंणे ।।
पूरण सुख पूरण चित भुगो ।। साते फिर मुनि
पावन उगो ।। कीसन अब पर परंम क्रिपा करि ।।
पोल रखिले मोकुं हित उधारि ।।२०।।
दुहो:- आतम रामह परखियो चिन कसिप गोतवाद ।। मोनु
पतखि पिछांणियो ।। किम ते छांडि प्रमाद ।।१।। कसियो
जद फिर कहयो ।। सुण आवि कारी अंस ।। आतम
उपजत खपत रिवत ।। मो मह त्रिम हल हंस ।।
आतम आगि लो प्रकति तज ।। किम पामत अनि देह ।।
रहत वंदेही जीवतां ।। तर तद करमन किहि ग्रेह ।। ३ ।।
ब्रहम कहत सुणि क्रिसन सात ।। सुणि सात आतम
ग्यांन ।। पांभी पंचित निकरती बदलत प्रकति
आमांन ।।४।। क्रम विपरीतह आचरै ।। बुध विपरीत
बताय ।। सब की रीत विचार लो पामत पंचत
काय ।। अन सुधपा स्तनन भखत ।। बिदा सेवत रीत
यां मैं आगम आताच नुं ।। हो उदे अत अन बीह ।।५

पांचित पामित आत्मां ।। तिहि वैसी होइ ताल ।। नाय
प्रोपन तीव घात ।। प्रानी अगम अपाल ।। ८।। सेचत
इन्द्री प्रकृति गती ।। भेदत जीव सथांन ।। उरवमी-पारी
प्राति थाया ।। पामत कष्ट अमांन ।। ते सोही पंचुत-प्रात ।।
जीवह ले हत निदांन ।। १०।। पहले होत सेद तन ।। अंतह
विरवै अमांन ।। इन्द्री अपतो तजि जरा ।। सीतल होत सुजांन ।।
प्रांण अपानह विच बसत ।। आतम पवन समीप ।। तन
इन माकत बांधिये ।। १. छाड़त थान प्रदीप ।। ११।। सिगुरह
लेग कारि गमनि गाति ।। चालत आतम संग ।। पाछे
देही आति दुलभ ।। होत निराट निसंग ।। १२।। पुनि पापह
तोइ वार मिल ।। घेरत जीवह जाय ।। नपता को बल
बाचत ।। करमन हार मनाय ।। १३।। अतीत मम चित्त
आगियो ।। निस पेरवत चाव वान ।। तेम मिलांनी चेष्टा ।।
लमत अपाय बान ।। १४।। फिर प्रावण ग्रभ वास चा ।।
पुरु यातक हीय तेर ।। भग मूत लोकह नरक गिरि ।। धामक
सारन केर ।। १५।। मोरबी मारग दोइ निज अपरे घर चोम
अमांन ।। इक चंदह तेजी पवत ।। रेक आंचलों मानि ।। १६
अंचह नीचह मथता ।। है तिहुं सरगम होनि ।। हारि
पुर विण निज सुरत नहीं वेदह भारवत जांन ।। १७।। पाप
अजांण उतार चो ।। है उपचार अरवेद ।। जांण पणां
चो जांण के नइन बतावत वेद ।। १८।। करम करावत
सुजि करत जीव अजोगह जोग ।। सुरु मोनि दुह मिल
बचत ।। थांनिक करम प्रयोग ।। १९।। जे क्रम उत्तम नुपरा
तोउ दज कुल वास ।। २०।। पापिन प्रवेसति लोह मय ।।
तिम तन जीव प्रकस ।। करता करम करता लिरवे बरत
भाव वेकोस ।। २१।। सम दम पाले प्रीत सुं ।। मात-पिता
गुर सेव ।। पर धन पर स्त्री परतजै ।। सो पांमे गाति
देव ।। २२।। ब्रहम कमल विच पोरवे ।। जो ब्रहमंड उदार ।।
सो सेक राती हुकम यी ।। ध्यो करत निरधार ।। २३।।
दुरव सुरव सह जह सपने ।। लोरवि वरतत बुधिवान ।।

मोहन वामन मन महा ॥ नर धारत अभिमान ॥२५॥ लोभ
अली मह ठग्गबजुत ॥ सबहु मीन समीना ॥ फंसत अपना नैत
कहै ॥ कम फल सोड कृपान ॥२५॥ कमइ धन्य पतिया प्रमाद ॥
बहनी जीव विस्मरत ॥ पावत चिरता कंमगति ॥ लोई प्राण
विसवास ॥२६॥ सपना पुरव जिम जीवत है ॥ सद कुधी
संसार ॥ माया मोहित फिरत है ॥ अवागमन मझार ॥२७॥ मन
वस नित ही राखणो ॥ सुकलत करणो नांहि ॥ ध्यांन
ब्रहम को धारणो ॥ राहि रक्रंतह मांहि ॥२८॥ ज्ञान
सानयो दीप कह ॥ जेनर राखत हाथ ॥ कूप संकुची जगत
मां सेनर पडत समत्थ ॥२९॥ ईसुर सुजन अमान ॥
अन्तरस उतिम नांहि ॥ तजे भ्रम रस पुरता ॥ रहणो चेतन
मांहि ॥३०॥ पुज बीर हर उपदेस दे ॥ गो निज धांमन
गेस ॥ फिर सुकरित चित धारिजो ॥ ध्यांन विधांन
वरीस ॥३१॥ किसन अजन कुं फेर कहयो ॥ बीय चोडहयो
विरतंत ॥ सो सवर्ण अर हो बीसि ॥ नर भव पारन पंद ॥३२॥
उति अनुगीता फिर दुजन कुं गोहणो पुछयो प्रसन उदार ॥
कवि चुज आगे करि कृपा ॥ सो भाखत करतार ॥१॥ ब्रहम
वामा विप्र सम कहयो ॥ तुम जाहो किर लोक ॥ सोइ विधीरै
अखवेपी ॥ सोइ वचन प्रतोक ॥२॥ दुजे नम नर वांमह कहयो
चलोयै ब्रहम सिद्धांत ॥ महाजे कांमी करमथी ॥ लोइजै
पद निरवांण ॥ वांणी पान समांन कारि ॥ ध्यानरै दानव
सेख ॥ जीव वरतत माहि जांणीजो ॥ पां बीच कहत
प्रलेख ॥४॥ रकत वीरज प्रदीपतो ॥ पंचुल हथ प्रतोख ॥
लोप हुवत फिर वान वच ॥ जैसै प्रांणी मोख ॥१४॥
रकां हता भाखतो दिस्टा वीरस्टा वान ॥ मोला मा सा
सुधाता ॥ रस सत वाइ महांन ॥५॥ प्रथमो वई अंकास
जल ॥ मन बुध तेज महांन ॥ रा पिण उपजत वाइ
थी ॥ काईजैं सुगत गिनांन ॥६॥ गंध सरस रस उपजत ॥
सा रस थी तिण विचारि ॥ ताथी सपरस संपजै ॥ सव
दह तिमह मझारि ॥ ॥ माते होत सरीरता ॥ पुरण अनुता

पाय पत्त इन्द्री कहौ मथौ ।। होत प्रवित चित आय ।।९।। वांची
प्रवर मंत्र सुर ।। पढ़हु वंछत पाइ ।। चेतन ताई चढ़त
चित बहत इन्नेवर माइ ।।१०।। चित धरणी फिर चित्रन सु ।।
पुछयौ प्रसन सकाम ।। मन चित रुकत किम तहै ।। किम
पावै आराम ।। मन इन्द्री थी वाद वादि ।। कवि भारत विध
दूर ।। दीपक बिणाहि मरत मिटत ।। मन विन इन्द्रीदूर ।।१२।।
केन्द्री तद मन सम कहयो ।। जोग मिलत तहं मजोर ।। घर
माडै बाहिरै नहुत प्रवेस विचार ।।१३।। अथ दइवत
नारद रो चरचा लिखते :— छंद पाधरी :— नारद कहत
दइवत हंत ।। प्रांणित अगार किम प्रथम सूत ।। रहै उरध
मार्ग ताते आंध देव ।। तिनतंत सुक बांधत भेद ।।
उधान वाइ सुक सोस दूर ।। रहंत लहत जो नीझर ।।
दइवत कह रहै अगर धारव ।। रज गुणह प्रचावत
प्राण रख ।।१।। मद पाने करम अपन मोच मांन ।। निज
देह रहत जिगर कर निदांन ।। प्राणं इधर प्रातम अपात ।।
अगार बात पत दिख प्रति चाल ।।३।। भ्रम हुंत विचारि
नारद विध्यांन ।। पुढै प्रबति इक समाहि पांनि ।। जीव
हुत केन क्रित कहहु स्याम ।। विध कुर मोहि काटण-
विरांम ।।४।। पांचद अरनर जद कह्यौ पेख ।। तिह
सुपान नाग जोत जस तेरन ।। देवंन बलेह जिम दांन
दूद ।। रिखो प्रन बलेह तप धीर अरबूद ।। इर्तांन वह
तद मोज दाखि ।। गुण प्राण गुणह बल निगम साखि ।।
नृप बलह दलह खत क्षम पेरन ।। वैश्यार बलह जो
धन बसेह ।। गुर बोध वधेत आतम गिनांन ।। जतिमांन
घटत आरह अमांन ।। व्रत दांन सांन नह विधि विचार ।।
उपचार ब्रहम पामण उदार ।।६।। संकल्प विकल्प संसार सार ।।
कित मोह मनह इह पंच कार ।। संसार वनह विच कहत
स्याम ।। विध दूर इतां काटण विरांम ।।७।। इक भाव महा
सुख फल अमोघ वह भाव विधारत जनम जोग ।।
त्रिगुणाद हुंत जिनान जत तोरन ।। कांमना करम आचिगा

सदोरव ॥९॥ फल फूल आस वन रोह फैल ॥ मिलि महा मोह
अज किरन अमैल ॥ सुगिलांन छह अगिनांनताप ॥ आनन
सुरोह सोहक ~~क~~ अमाप ॥ १०॥ अथ उरध गताहि दुह मिलत
आइ ॥ भव भाइ सरग नर कहत सुभाइ ॥ लपत रता रक
बिक हत सोह ॥ परसवी प्रतोरव परचा अबोह ॥ १२॥ गागा
सुगाग वीझीया समतल सीधी सकांम तेजी अपलन ॥
अनु वरत आगम तन वरतग रथ ॥ गवि अंत सपत
रह सपत जपत रथ ॥ १३॥ वइरवत परम रहलहत वेव ॥
सो लहत ब्रहंम जुग जुगन सेव ॥ रोह वन सुरोह तन
पाप आदि ॥ पारंत पीर पुरखह अनाद ॥ १३॥ अविरवत
जीव जग पिरत पाइ ॥ देहा दन हित दरसत दिराय ॥
* कम हुंत मारण जांमण अमाल ॥ यह लहत जीवजीवन
अपाल ॥ १४॥

*विते:— जिग कारण कित जवर । पुसु पावत जोद प्रगट ॥
दुज बामां दुज सरस ॥ वचन मिलि कह्यो विरव्यातह ॥
कहो कैम तुम करत ॥ जीवहत्या दुर जारक ॥ दुज वर
जद दरवीयो ॥ सुणहु बामां हित कारक ॥ सोइ नहन
नास किन उच्चरण ॥ मिलत भार भागह मई ॥ परलोक
लहन जीवह अगर ॥ तजि जांमण मरण हसाइ ॥ निप तेज
धामंत ॥ सबद आकास सचेतन ॥ धरव तेज रवि कचन ॥
तुचा पवनह बह वेतन । आपार सरस विमल ॥ जीव
जोतह आवि कारी ॥ कम उन्हीं कम तजे ॥ मिलत निज
देव मझारी ॥ सुण तीयां कथन मम सत गहे ॥ जिग
पसु लादिक विध जरक ॥ यह देव लहत है भोग पल
उजल कित हीत उचरक ॥ २॥ अथ सिसाह अरीजनतें
समदरौ लीदो छै ॥ :— छंद वेअखरी :—

:—: सहसा अरीजन एक दिवस सक ॥ आयो तट सायर
कित पातग ॥ जांग जलत तहां वेध विचारे ॥ महा
जंत जल अन कीत मारे ॥ १॥ दध जद कर जोड़े चित
आति उर ॥ आयो ~~ब~~ सरण त्रिपत ची आतुर ॥ वे कहीयो

जलै जलन नरा पति॥ जिम आहि हत विनह विधि
जांमत॥ २॥ अरिजन फिरि कहियो सुणि उहव॥ चित-
सुध को भारथ करता चवि॥ जांमद गन जद पावि
तेरव सुत चारि सत वचन वतायो चारित॥ ३॥ रामतणी
आश्रम तज रवत रह॥ आयो तहसा अजन अलोकह॥
वन तोड़े पादप तोड़े आति वारु॥ अतही पेखत अधम
उचारु॥ ४॥ फरसी धर जद फरस साहि फिरि॥ कर-
राजन काटे अकरा कर॥ दल सातुल जद रवल खेलि
दारण॥ जुध वाणे कुठा रिप जारण॥ ५॥ रांम नांम ग्रही
विसरव रोरव हरव॥ पै कीधा अराहन रिप पर मुरव॥
गिर किंनर ज्या ग्रहि छांड ग्रह॥ कांपा अमांण वणायो
पर गह॥ ६॥ अरि जन जारि रांम उतलो बल अति
फिर वन वसीयो चीत अांमल॥ पित चै वइर अाइ
मिले तिस अण पल॥ हलियो जां मदि गह क्रित अणहल॥
तांम रांम सुणि पितर मरण तत॥ चारवियो क्रोध अगा-
चाह चुरित॥ इक वीसह वेला ब्रिद आवि रि॥ वसधा
कीन खत्री रिण दुजवर॥ गिगन गिर जद कहियो क्रोध
गुण॥ अब छांडे दुह जेहु उरण॥ रिणह तची कआइ
फिर रहित रवरव॥ दिढ चित बोध समायो पर दुरव॥ ८॥
पितरे फिर कहियो न चीता पति॥ अब हंस्यात नाहै
हम आरति॥ इक अतोल राम सम उछज॥ आहेवा
लागा पितर सकारज॥ १०॥ अलरह नामां रूप एक नेह॥
जारिया जिण रोरव अनत अजोरह॥ तंखा करम
छांडि फिर निज हित॥ बिरव छाया बैठे कातिया
वृत॥ ११॥ अति चित सोचे रूप निज आरिज॥
मन जीपण चाहे मन मांनज॥ मन वांणे हिणि के
जुध चत सम॥ कीजै मन ह्रकि महा परा-क्रम॥
मन जद कहियो सुणहु निप सुध मन॥ तत मोहण
सीलै तन॥ राजा तद अति सोच रोरव रत॥ चारे
लप जीतो चित चुरित॥ १२॥

कवित्त:- तीन सत्त तन जुगत ॥ रहत नव गुणो अंतर ॥ हरख
आत आनंद ॥ होत सतो गुण तत पर ॥ सोक मोह क्रोधादि
रजह गुण हुंत उपाजत ॥ सुपन सोक परमाद ॥ रहतामो
गुण दाखत ॥ अंब गिरव आपत रहे संत लोरवि ॥ छंडे
आतम होरव गुण ॥ मन मारि महा त्रिसना समान जिन
आंमह पायो अपण ॥१॥ तरस रजोगुण असह अगमतासो
गुण उंगह ॥ जनम हुंत प्रित अवर ॥ लोभ चीत लोमह
प्रजत ॥ त्रिसना अकरण कहन ॥ काम आतम उपराजत ॥
मनह मोह लाग्यो पै क्रोध पाछै राव गाजत ॥ अंब
गिरव होइ जीता गुणी ॥ सो कवित्त अब अरवही जन
रवांण ब्रहम चो भेद जुत ॥ दिढ चित प्रसन हिय रवहो ॥

छंद बेअखरी:- एक समै नृप जनक अख्याता ॥ दुज सम
बचन कह्यो दुरव दाता ॥ विप्र जद कह्यो तरस त्रिप
चारव ॥ सिरव हुं नहीं रवमण कथ साख ॥१॥ आम मारण
वेरव देस कुल आंम ॥ बहीन भारवत राजन विश्रांम ॥
माहि पत जद काढियो राज कस मल ॥ क्रोध नमै जीतो
चित आकुल ॥२॥ तन अपणो नांहिन दुज सद पावै ॥
देखत अपणो मुरवह सुदारवत ॥ हु मारग रतै मुणि
अवातीत कस मलइ तैन पांगे अगकुल ॥३॥ पंचु इन्द्रियां
खून परापुण ॥ दिल जे तेज करि विड़रण ॥
प्रथमी वस वरती हित पाले ॥ थिर मन वरती अम्रत
उचाले ॥५॥ जद दुज कह्यो चरम दुहि जांणु ॥
इन इन नात तिनेहन आंणह ॥ पै तोहि चरम लोच रयो
पूरण ॥ अपावा गमण फिर नहीं उरण ॥ अरणी आगेन
जेम उर अंतर ॥ तत हुव सत जगत विच हुत तर ॥
सलता सब जिम महण समावत ॥ इम सब करम
ब्रहम वीहि आवत ॥६॥ विप्र विमौ फिर कहत विचारी ॥
त्रिप लखीयै आतम हित कारी ॥ सुकारित मन वासि
कीयै चलण साति ॥ धांमीसै तिरवै कहि औप जलपाति
अरि जन लई कह्यो हरि आविहत ॥ कुण इ दुज वाणा मम

सुध किंत कवि भुज सर सत ३ हरि कहियो मन सो दुजन
प्रगट मही महियो ॥ ९॥ बुधि सुजि चौ या जांणि नांण
वत रार सुध भावन सुभ मिलि अमल ॥ गुर सीखरो
अभ्यास ॥ फेर भगवान कहै है शिव इक दिवस धारे हित
मन सुध ॥ बंध्यो प्रसन गुरन है विध विध ॥ कुण
हम कुण तुम करण किता रथ ॥ विवरो कहीये गुरह म
जंसत ॥ १०॥ थावर जंगम आव कहो चित मारग भलो
वलो सुभ सुरत ॥ सुख दुख चले जोग गाड तिमरि ॥
मोख मार्ग फिर कहो मनोहर ॥ ११॥ गुर जद कहे फेर
मानि ग्राहण भेद पढ गला मैं पह मग वग ॥ सोहम
चिद्धायो तास भाव विध ॥ सद बुध यो आवे यां मे
सिध ॥ १२॥ ब्रहम सरूपी पेट जांण वित ॥ अहंकार
ते उतन अलो कत ॥ सुख दुख फलह लेख छाया सरू॥
अपरम करंम पात्र रा उपक ॥ ४॥ भल पत आदवाज
तपह वित जीतम सम मारग प्रविता गाति ॥ वाचिसट
कासिप विसव मित्राह वदि ॥ अत्रे परम धांम लोरवि
आदद ॥ ६॥ अंगर गोरव आमें कौर अब हैत आया
ब्रहम न पारस अलो कत ॥ कौर क्रष्णांम करह निज
जुत कौरि ॥ पुधी पाप गमत विध नत प ॥ ७॥ क्रम
करणां नजणां आतंम कोजे ॥ आति फिर पुछ्यो हित
हस आरज ॥ उतर दिव मा मारग उरधा अधा वेदां
गाति पुछत विचया विध ॥ ८॥ चत्र मुख तई सील
मत धारण ॥ भ्रम तप विनैं वरतिया हित हग ॥
जोति अधर सवाई आदित जज ॥ परजा पाति अधा
तम धरज ॥ ९॥ च्यार धरम मां राह भ्रम धारण ॥
आमण मरणाह काल लाहत जग ॥ तत चोवीस पांच
निम चा साति ॥ इन्द्री करी वंधण आवत ॥ १०४
नव द्वारा चौ भुकपु भ्रतइ धर नित ॥ रज कर दस
इन्द्री तह वरतत ॥ मन ता मे पर भाग मदो मत ॥
वरतत वासि इन्द्री अपरा भत ॥ १३॥ तीनां गुणां सिरीर

जांण तरु ॥ सत्तर जता मोगुणी महा सरु ॥ तमो
गुण धारीयै रज मीलेह ॥ सत राजो गुण धरत
सतो लह ॥१२॥ तामो गुण अग्नि नाम बखत आतै ॥
लोभ रौस ओ चित भ्रित लागत ॥ भ्रम विश्वास
नहीं चित धुधार ॥ क्रम सब अतुभ जांण
उचारह ॥१३॥ द्रिब ढूं प्रीत करत सुभ राहक ॥
अविचारी बातां अणराहक ॥ देव ब्रहम थी धोरह मोह
द्रिढ ॥ कुडै² आरंभ अमत लोह कढ ॥१४॥ काद बसेत
लोभ आती गाचारु ॥ हंस्या सामरथ पर सुख हरहु ॥
सो धावर जो नी आवै सातै ॥ पंखी प्रगट कीय
पसु ना पातै ॥१५॥ बह रोसंगे रोगी, कीट काल ॥
अधाम नाचक अमत अधागल ॥ रह तमो
गुण चा गुण आवारे ॥ पुन राव रती तुबत
अपंपर ॥१६॥ ईसुर जांबि गई आपा सह ॥ जुध
हित बल अभिमांण संजा नह ॥ ममत मता ग्रित
पाले अवर मन ॥ छेद भेद उपदेस सछोहन ॥१७॥
ब्रहर जग दांन करम बिच ॥ सो जग आति
हंस्या करी हित सुच ॥ गीत नाद सम प्रीत
जांण गुण ॥ भाव समाव उपरि आंबत ॥ कांमह
हरख चीत उदित कथ ॥ महा रजोगुण लच्छीह
समरथ ॥ धीरज धरम धान चित धारह ।
अनह स्पावै राह उदारह ॥१८॥ क्रिपणं प्रणौ अजांण
सुध क्रित ॥ अनर्त आरम्भ तिल अक्रोध अती रत ॥
निज निज मारग निर मोह निरासा ॥ लज्या सुचि अकठण
पण भासा ॥१९॥ नाम चरन पर माहित निहचल ॥
बहु सुख दुख न करत चित बित बल ॥ से
साता गुण सब गुणा भाखत ॥ भव अजीत सम
सुमन होय भाखत ॥२०॥

कवित:- अस्ट सिधरी:- अणमा महिमा अलम ॥ महा
लघिमा प्रांन मावत ॥ ओ… अतही सगह ॥ वले

प्रापति सती हाजत॥ प्यारौ मत तप हेत॥ वले ह सात
वातना ईन॥ के आदु दाव प्रहत॥ कहत कवि मोह
मुदित मन॥ प्रतमेद पर्व विघ चित चमत॥ अनु
गीता कविता कही॥ सो लिखे पढ़े स्रवणां सुणै॥ नर
पंथ पुर सति पांमहि॥१॥ अहंकार थी रतन॥ सिद्ध पर
मही सकारथ॥ तुमा मंस सर बन॥ प्रसतन जाइक धारण॥
राव रंक नव भेद॥ करम अकरम गुण दाइक॥ अहमईस
वह भव॥ जाइ जोगिण मिल गाइत॥ रहे गिरइ लदेण
छिपक उतार॥ विण करता विन वास सति॥ प्रम लिखत
चौरे न बढ़े चपल॥ जोअ लहरा खोमह लहर॥२॥

छंद बेअखरी:- ग्रांथ तीन थांन पर वरण॥ प्याकाररइ जल थलह
अधूरण॥ चार भांति ओपत जन चाहण॥ जर इंड अंड
पज अपद भुज जग॥४॥ अहम देव जग जिण अपंतर॥
पित पिसाच रकरतन ओल पर र सुख हम सुनत
चित उजल॥ अहमह थी पैदा इल विहल॥ गाहण
माह ममा सुख वाचत॥ नजंत निमा विखतगाचत॥
बल बसमां उदर दृष्टि कीह॥ गइवां उसमा गिरत
हित आह॥३॥ विरखा मे निग तोच चलतह कंद॥
साल वलोरसी सम इक मिगह॥ कीचक विण छिलो
उतम कोहे॥ चबे पर वत भीरवत कवि पोछह॥४॥
हेमा चल पद जात गिरन हित॥ सहजा चल
विन्धाचल सम सत॥ त्रिकुट चलणी लह और
हत सकट गन पुर सकंध उगम दत॥५॥ माहे समस
प्रमल वन गिर मेरक॥२० सब कहित श्रवित पै
पारस॥ नरव तामा चंदह भीरवत निज॥ पित राजा
भीरवत छमा पुजाउ॥६॥ नदियां नाथ महण जस निरमल
सत सामी इन्द्र हरा उजल उसनह सामी सरस
उपंस॥ पार्क नइ सामी पंच भुत इम॥७॥
मीह वइ सामी व्रह सापतह चवि॥ कल वाने
सांमी बल बंधव॥ वसु वामे सामी वसुधा पाते

तजि दिरनण सामी जिग छ्यरित ॥ ५॥ दीस सामी उतर दिस
ही दीस ॥ जरवीपा जेम कुमेरह जांणस ॥ एना पाती प्राणी
सब पुजग ॥ जट चेतन चोसत छ्यावत जग ॥ ६॥ नव निंव
गंधर्व जिरव निदू चल ॥ ग्रेस अरचा देव दाणव चल ॥ यां
सब ही सामी हरी उचार ॥ दसनी जण माहे उमिया
फिर ॥ ७॥ तीन रमणी माहेपयहार राजत ॥ चाम करम
राजन सम छ्यरित ॥

दुहो:- जिह छत्रचार नव नैजह ॥ सोहित साध समाज ॥ जाहे
निहचे जांण जो ॥ पिरला लेहे न राज ॥ १॥ छंद बेअखरी:-

—: ग्रहण वाच:- लछण चरण छपाहिंया लेखिय ॥ सबदेह मुज
छ्यारस मिले रेख ॥ सपरस लछण वाद सवारे ॥ ओतह
लछण रुप समाहजारे ॥ १॥ गंधह लछण पृथी छ्यगावत ॥
सुर नो कह वांणी लछण साति ॥ महमनुजे सो साध
लछण जत ॥ २॥ गिनांनह संचारस पावित गिरहे ॥ तामो
गुण छ्यावण आवण मुणि ॥ छ्याद मध छ्यंतह स उपजत ॥
पाहिला दिवस रातै पुहत साती ॥ ३॥ सुकलह प्रथम
किसन पखला तुज ॥ पाचपहह मुनिया मुरव बाचज ॥
वरं लह देहाद हरीत बाचत ॥ तेज श्रीयां छ्यदीत करत
तत ॥ ४॥ मह मुलां छ्यानी मुरव मेहठ ॥ वेदां गायत्री
विचरवण ॥ छ्यमरां छ्यरवालि प्रजा पाती उतिम ॥ निगमे
नेम छ्यणगह निजाम ॥ ५॥ वचने प्रांग उतिम सावंती ॥
पसुवे एक जे ओरवत सुर पती ॥ चंत्र पर चीन मरा दुज
चाहन ॥ पर चारां सीचांण कहत जन ॥ ६॥ अचल सुवों
छ्याहिराव छपलोकह ॥ सत गुंग जुगे कहत निसि सोहि ॥
चातां रतन उरनह जव पुरी ॥ चोसत लोक सब मोज
छ्यनह करी ॥ ७॥ रसमा जलह गिरंद मेरह रह ॥ मे चीह
सुजोवर नेमे निजवर ॥ प्रज पति पे ब्रहमा कहत प्रग ॥
द्रिसी यां मां छ्यादेस कहत रिगा ॥ ८॥ नदीयां मां गंगा पति
निरमल ॥ सागर सारां कहत सब उजल ॥ छ्यासम मां
ग्रहस्ता जग छ्यारवत ॥ वडे हथ वेदां चार वाचत ॥ सुरव

अंतह दुख दुख सुख सोहत ॥ नाहत जनम जनम फिर मेम नासत ॥

कवितः- आहेस्या अपार जसा साले अरे प्रेम अपद सुन ॥ क्रोध देह दम कुसल ॥ मद्य भोजन गारगान ॥ अम अपधरम गह चरे ॥ करत भोजन अधम डर ॥ तजे दीन धन अलह ॥ दीन दीजे बह आदर ॥ मन मनत भोग सुगतण अमाम ॥ चाहीजै सुजि चीलिये ॥ आजीव अमर धी अुकवे ॥ आपन काज अचिंतिये ॥१॥ रहित उपदेसी आहित ॥ कुह बुध बात न करणो ॥ सुत भ्रात सब सुमत ॥ सुखह हेकत हरख चरणो ॥ वेद साग विचारीये लोक रहह नन लहीये ॥ थावर जंगम अपधरम ॥ हेक सार अर रहित गहीये ॥ जो सोक हरख आपै सुराह ॥ कहु किन्हे न कीजीये कुरंस तणी जाहि मन करे ॥ लोभ जनम फल लीजिये ॥२॥

दुहा:- धरम सुधा कन कि जीये पापह प्रगट प्रतोण ॥ सम जांणे सोइज ब्रहम ॥ अवर ब्रहम मत जांण ॥१॥ ब्रख रुपी संसार [illegible] गिण ॥ जामै बुधि सपेड ॥ साखा आहिंकरह सरु ॥ दुख सुख फलोह समेट ॥२॥ धरम करम सम धारीये देसा काल विचार ॥ कि उद्दम उदारवही ॥ गह सनेह उदार ॥ आसा अवर न धारीये ॥ धरीये हरि विसवास ॥ मम कउ वर पार नव ॥ जीवह ब्रहम उपास ॥३॥ तमका दीपक जोइयो ॥ सुजन सब विरतंत ॥ तिस ग्यानह चख जोवये ॥ भासत ब्रहम न चित ॥४॥ दुरमी मद बुधना लहै ॥ सुबुधी तजै न रांम ॥ पग मारग वह धारीये ॥ ब्रम मारग सुध धांम ॥५॥ रथ मह विचरत गिर फिरन ॥ अपरम मिलै न रांम ॥ सागर नां वह लंघिये ॥ तिम संसार जि नांम ॥६॥ प्रिथमी नावन पर वरे ॥ सागर रथन राह ॥ बुधियोति सही गति पाईये ॥ जस माफक बीजाह ॥ गुण रेको धानकारत गिण ॥ कै गुण वाइ लिवाह ॥ तेजह नभ गुण मांनियै ॥ धन गुण जलह विचार ॥१॥ प्रिथमी पंचह मांनिये ॥ कर निरणै निरधार ॥ पंचुत ता

प्रकृति या ॥ कवि गुण कहयो उदार ॥१३॥ वेला जिम सागर विषै ॥
भ्रम तिम वर्णत संसार ॥ साधन गुलेह नव मिणत ॥ कवि भाखत
निर धार ॥१३॥ मद पानी भ्रम धात की ॥ काल मीयाहत कार ॥
गुरु तलपी सम पावई ॥ तप करसित न विचार ॥१४॥ मांगेती
मित मांगी के नाखा मेती गंम ॥ गुर कहीयो से सुण
लीयो ॥ दुह धर्म परम सधाम ॥ पारिजण कहियो कृष्ण
निमासे सरन गुर कुण देव ॥ कहिये मोह विचार कै ॥ पूरण
पुरख सभेव ॥१५॥ जद फिर कहीयो जदुपती ॥ गुरह किरन
मन मोह ॥ तो कुं फेर विचारने ॥ ध्यान करो भ्रम छोह ॥
अनु गीता प्रगट करी ॥ जद पाते परम निधान ॥ करहकुं
दीधो दुवो ॥ रथ जोतह करि ध्यान ॥ रथ पारथ जुत
आरहते ॥ जात हुतां जग पाल ॥ खाइया जुज थिर
मिलण रवित ॥ गज पुर दिस गोपाल ॥१८॥ धम सुत
आवन किसन सुणि ॥ सम विदुरह हित स्योंम ॥ मिलिया
आवै मन मुदित ॥ कीरत सुणत सकांम ॥२०॥ पधारावे
गाहि जदु पती भगतन हेत भुवाल ॥ क्रोधव कीधा
चित समलत ॥ मंगल धमल अपाल ॥२१॥ धरणी धर
हित चित सधर ॥ गज पुर रहे सगाह ॥ जद कुल
मेटण जदु पती ॥ चढ चाले चत्र बाह ॥२२॥ जुज थिर
तद निज मुरव जेरु ॥ यूं कहियो घन स्यांम ॥ जिग
अरसमेद पधार ज्यो ॥ करिजा सिधा सकांम ॥२३॥ पुरण
पुरख पधारतां नगर मती दीरसाद ॥ मातंग उतंग मिहत ॥
मुनि मिलन यह मजाद ॥२२॥

कवित:- उतंगह अरवीयो ॥ किसन सम वचन सकारण ॥
नाचते गज पुरह ॥ वेधां कर कीयो विदारण ॥
कहियो जद श्री कृसन ॥ भकारवे पारथ विथारे ॥ चढियां
चारां चढे ॥ कुरह कुर वंसह करे ॥ लोरवह प्रमांण दि
कांण विच ॥ भीसम छोण तिरवा हरा ॥ क्रम सहेत
गया हरी पुर सकल ॥ थिड़ गुथे हथणां पुरा ॥
क्रोध कार मुनि कठण ॥ वचन जद कहयो विचारे ॥

तै समरथी थकै नही ॥ हित सहत निवारै ॥ चढा
चार तो चित्त ॥ कुरह कलि बंस बिधारै ॥ सार दाझ
कुर खेत सुवा उरि नेत गहीरै ॥ सुणि दोरव जिये पसरथ
सरण ॥ हतो हि आपद पारिड ॥ निज तपह पांच कंपै
नही ॥ करणा कारि सत कारि हडु ॥ छंद बेअक्षरी ॥
:—: उतंगह रिख कुत अपंपर ॥ काईयो अद इह विध करणा
कर ॥ कु अध्यातम चारम जांण हद ॥ बिध बिध सब
ही बात विसारद ॥ करमां कारि जुध जुन्ह पडे सामि
जीका कुर इन सब दुरजोरह ॥ भीसम द्रोण निवारै
भारथ ॥ पिंड सुई सबै अक सोया पारथ ॥२॥ निमधा
बंध जोध जुध निजामि ॥ गिरीधा रिन आवे आगामम ॥
दईवी लेख चोख चरीयां दिल ॥ आवत गया खत्रीवट
उझलि ॥३॥ तप धनु वामो मा क्रिम अनंतह ॥ अवगुण
क्रिम काटत पत पोछह ॥ रिख अद कहयो सुणो करणा
रत ॥ पै तुंहि ज सब विध त्रिभुवण पति ॥४॥ विध
बैराही रुप विसंभर ॥ कृपा निधान दिखा जो हित
कारि ॥ दिठ व्रत अद रीझै दइतां दव ॥ नारायण तनह
दिखायो अन भव ॥५॥ तद उतंग कहयो जग ताता ॥
दीजै जल आंणे हित दाता ॥ भगतां पति अद भगत
भाव भज ॥ आया जल कौहे रीख आरज ॥६॥ पैतहां
रैक चंडालह पेख्यो ॥ अधम रिख ग्राहिया अवरेखो
हरि अद कहयो हुर होइ अब हित ॥ कैरीखह अद
जल आणी कुत ॥७॥ मघवन अद असुधी गरि मेले ॥
वै ओ खरगा रिख न जुधि पेले ॥ जदुपति भंम वार
लो हित सुत ॥ आया मुनि वर पास अलोकत ॥८॥ कहीयो
रिख तो हेत मघव कारि ॥ आयो चोले सुधा अपंपर ॥
आगे लो कथन निकह अमाता ॥ दिठ बुधि गो निज
गृह अत दाता ॥९॥

दुहो:— जगमे जे नृप जूझियो ॥ बेरसं पान बिचारि ॥
उतंगह की तप रिझयो सोआयल करतार ॥१॥ वेरसं

पाइन जद विचारि ॥ परिखत समझ सप्रीत ॥ तब
उतंगह सिखतणों ॥ कही धुरहु ले रीत ॥२॥ छंद पे
अरबरी:— इक दिन गुर आग्या हित आवहि ॥ जो उतंग कहि
काजि बन फिर ॥ इधण अति जोड़ फिर अरणव ॥
सिर धरियो बाधे जुग सम ॥१॥ गुर ग्रह आय हेत
जुत गह वर ॥ कहण लगे अंगण अब कर ॥ जरा
कारव विच अरा अब सन जुत ॥ इसी लोटी हे क
अति तांणत ॥२॥ गौतम अहिल्या नाम पासि गुण ॥
पुत्री ले दीधो हित पुरण ॥ गुर फिर कहयो पुत्र
अब जो गह ॥ विद्या ले दरन चित वंछह ॥३॥
कहियो जद उतंग जोड़ि कर ॥ गुर दिखणा लीजै
मो पै गुर ॥ गौतम जद कहियो गुण ग्राही ॥ अहिल्या
पै जा कहण अजाही ॥४॥ सिख जद गुर मुख हुता
कथण सुणि ॥ आयो तहां ठौ वधु कजि उरण ॥ आह
अतिरहि पेखि गुर गेहन ॥५॥ मुणियो मुखह सनमानंद
मातन ॥ जाहु सुद देस राव ग्राहि कुर जर ॥ कुंडल
ले अवहु अति श्रम करि रिखजद मांन कथन
अति हित हरव ॥ पै आयो राजह पै पर तरव ॥६॥ आय
कही नृप आग्या कीजै ॥ अति हित मो कुंडल
आ दीजै ॥ कहयो सुदेस नाम जोड़ कर ॥ अब जामो
वा मां पै आतुर ॥७॥ नृप वधुना विप्र गिण हेत
कारी ॥ ववही लो सद विध सुवि धारी ॥ गई पाते
वांमां पासे धाइ मन ॥ कुंडल जाचे अतिहि
सकरन ॥ नृप पतनी जद हेत सहेत नाथ ॥ निज
कुंडल दीना ले दुजनम ॥ जतन अवराहि आते
आपे हित सुत ॥ विप्र कुं चिंदा रहियो क्रित वंछत॥
कुष्णा जमह लेपेट निजह करि ॥ उनमद दुज चलीयो
हेत आवहि ॥ पंथह विच बीलो फल पेखण ॥
विग्रह चढियो तरह विसेखण ॥१०॥ तेता पाहि नाग
आति उतेम ॥ गो कुंडल ले निज ग्रह अगम ॥ तब

धनुकी तह रोरव धारि आति ॥ खोदत लागो महा-
प्रबिल खित ॥११॥ दिन पैंतीस लागे दुज इन उर ॥ खोदी
उंडह अविन खरा खर ॥ मघ वन दुज तह होरस महा मति ॥
आयो पास रिखे अलौ करति ॥१२॥ जोजन सहस्र रह
धर दुर जर ॥ तब करि देरहि खिम हरखे सुर ॥ धरि
हरि उंड नांम रिख अण धलं ॥ आती आगम लागो जल
उछलं ॥१३॥ तन तज तो देखे दुज सुर धति ॥ आयो
वजा संत अलोकत ॥ धर विहरे रीरहि करि ताम
धरि ॥ आयो काहि नाम सुर आतुर ॥१४॥ निरख तत
सकर तहां नयरा निज ॥ कुछ संसंसियो रिख चित
धर कज ॥ पहली तहां अनुव अकृत वाणि ॥ कहैयो
आवे वचन सकारण ॥१५॥ औतै अपनी दुज नम
हित माने ॥ निज जिगनह पोरवो निरवाने ॥ अब
मुनि नांम धवन धव अब हित ॥ करि अज लत
जालण दु-कामित ॥१६॥ मुनि जद आगेन कथन मन
मानत ॥ अज्या क्रत करि धमत अमानत ॥ अजलत
होरस हुतासण पुरण ॥ आहि सुर जारण लोरे
धधूरण ॥ नारज जद कर जोड़ छोंड़े बिरव ॥ वे
कुंडल आंणे दीय पतरव मुनि जद सिध कारिज
कारि उम उतिम ॥ सुर गहि फिर आयो आगम ॥
कुंडल आंणि सुरांणि हित कित ॥ सुंद तोले विधा
गहि संपति ॥:—

दुहो:— वैसं पाइन विवर विध ॥ सुन परिरवतन सुणाइ ॥
पुह तोर अंत जदु पती ॥ तो कथ कहत सुणाइ ॥१९॥
परवत रेवंत आति प्रबल ॥ निरखे नंद किसोर ॥
कौतुक सहत पधारिया ॥ द्वार वती बहोरि ॥२०॥
मात पिता हित जुत मीले ॥ जदु कुल सकल
कुमार ॥ उछरज सरस विराजीया ॥ आनंद बरख
गहि ॥२१॥ बरत देवां तद विवर विध ॥ इहो किरन
कृपाल ॥ श्रीसंत द्रोण इजीया क्रमि ॥ रहिस कुप धमचा

कवित्त:- क्रिसन नांम करि क्रपा ।। राम सम पिता उचारै ।।
बंधो सेत कुर खेत ।। जोध सा-बोध जहारे ।। रण
रत्त खोहणी होस्स भीसम सेना पति ।। सैरबंडी भारथ
भौरे ।। दिवस दसमें गिरियो खेत ।। नव खोहणी दुज
दुगम ।। द्रोण सेनाप कहारै ।। प्रसु थामां मुत सुजत
पांच तजियो निर धारै ।। अन पंच सेन सेनाप
होय ।। कहत वच निजाहरो ।। पोड़ गावड़ मंडा गिरियो
पहव प्रब पोमे ह थणा पुरो ।।१।। चोप खोहणा रिण
रहत ।। मुरवी सिल्ल पयो मडे सुर जांम दोय जुध
अपवर ।। करै कर गिरै भुज थिर ।। परथ दीह गद
गहण ।। भीम दजोण विधारै ।। रोम प्रकारह अगम
दिवस भारथ विहारै ।। सव सेरव सेन निसमकली
द्रोथी कैर न सेरव रिण ।। भप पत्थ जयो रथह
खड़े ।। दुज दुर जम दिस बढ़ी पण ।।२।। भीम रथ
भारत ।। गिरै पितृहर समंगह ।। पंथ पांणा नी गंथ
करन पड़ियो भड़ जंगह ।। चरत राव धण लाव ।।
मुवो मन्द्रा जब हैसे ।। सातु री कर प्रतर ।। जोध
भुरी रिण वसै ।। सह देव सुकर सुकनी समर ।।
खोड़ दजोधण राज रिध प्रलु भीम ... सह तर
अप सह ।। पिड़ियो पड़ प्रसिध ।।३।। प्रवर धान
भारथ ।। मिले राम राम मडा बल ।। करे सारवा
पार ।। गिरै घाम पात अप गल ।। नव दुण खोहणी
करि खलि सार पहारां ।। चोथा दुरधां पड़े ।।
गौथ सहीतर पर वारां ।। भर पूर सुभट सोणी
भरे ।। करस जोम उर रिव खेत रिया ।। च्यार रख
सर रसिरव ओपा चरण ।। गहरि पुरि सुमपति
प्रगट ।।४।। बेरी सोमडा पिता ।। प्रानक दुंदोभि
बाजे ।। कहियो प्रमिवन प्रद्रस रिम ।। मो हंता
पत बाह ।। पुनो तद फिर राम पिता ।। वाइक
कहयो विचार ।। प्रमिवन वीरा गाती लहे ।। गोहरि

पुर लेहै ॥२॥ वांदिया फिर अरचवे ॥ सोदा सहत समांम ॥ अभिवन है हथां अछस ॥ गिरियो विच संग्राम ॥३॥ हरि जद चित चाइ क अमहत ॥ सुचित अहियो निर चार ॥ रट रथी यां मिल जुधा अखिल ॥ चारि उरे अ ओचार ॥४॥ अहे हरख गनी सरस कित ॥ रथ जोरा जुत सांम ॥ पारथ प्रीत पधारिया ॥ गज पुर विखे दुगांम ॥५॥ उर पावै जिग आग्या करे ॥ अमरण सरण अलेख ॥ जुजथिर गेह विराजीया कारज नयणां देख ॥६॥

कवित:- हरि आग्या जुज थिरह ॥ करण हय मेध महाचित ॥ धनह चित धारियो ॥ विप्रां लाजे यो लह वंछत ॥ इरम सोइ मन मुदित ॥ सकट भरे अनतह ॥ हथणापुर आणियो ॥ राव जद राव वचन लाहि ॥ गह सूर सेन जुत संगणी ॥ जुजथिर सके निजि सगह ॥ हललियो सुगम उतिम लेहे ॥ सभ सथ हैमाचल देसह ॥ ...नरह नाथ इन आथ ॥ आदन भीक निवाहर ॥ करे होर महा वन ॥ महा मंगा जुत आतुर ॥ पूजी नरां दुज नमां ॥ देवजिखो तैं नरां ॥ केन गंध्रव पितरां समह ॥ सिधां साधां वइनेरां ॥ भव करे प्रसन सकलह सहत ॥ विप्र वाइक वंदे जरन ॥ चालियो पाव अहिरव रिस ॥ धन कठण धत कहं धरन ॥२॥ दयिम थाल कड हाल ॥ चरु अप्राचाल देखे ॥ हरन भात सात हरन ॥ धार रुपात उलखे ॥ मांणिकां मोतियां ॥ पनालांला पुख रागां ॥ घणह कोरम उघड़े ॥ लखण डांगियां समाजां ॥ आनि दरब सर बह वा ॥ धरम चौवे प्रां चोरी ॥ धंम राव धरम पामी धरा ॥ मावरिध जिरवे सरी ॥४॥

दुहो:- साठ हजारां सो गुणां ॥ करहा भार क लार ॥ भांति बिवणां अरि अपतह ॥ धन पुरे निरधार ॥१॥ सिंधुर अपतह अधप बल ॥ दंता हल गिर देह ॥

सै सब भरे ह रन सूं ॥ नर नाइ अजिम नेह ॥२॥ रथ रुक्कां वर त्रण गिणत ॥ प्रथ तातो सह भार ॥ वतीया ले मोचन विवध राजन हित निरधार ॥३॥ दिव पण्डिव तने त्रिप नदस्त ॥ करे कतार कमाल ॥ आयो आसि रथ भीड़ पतिह दिढ चत्त करी पंपाल ॥४॥ तै ही समीपें जदु पती ॥ इथणापुर सम हेत ॥ पुरण पुरख पधारिया ॥ परजाह पुत्र सहेत ॥५॥

कवित:- परदा मण मातु की ॥ आरके देसह संबह किय ॥ गद्द कृत अहमां सगाह ॥ सगज सारथ निसदी मन ॥ उत मुक्की बोलि विवध तियां जदु कुल जोड़ हत ॥ सम कुंती स मिले ॥ आय गज पुर हेतारथ ॥ जिह सेमे थयो परिखत जनंम ॥ सोभद्रा दुख दह सरु ॥ कुल राज मह्णा रिख्या करण ॥ होण विरदां पावरु ॥ दई जोग पण दसा ॥ बाल गतचेत निहारे ॥ हाहारव अति हुवो ॥ महर किज बाल मझारे ॥ सोभद्रा सम प्रथा ॥ जल ह मोचत चख आतुर ॥ आई अस्सरण सरण सरण संपत हित सातर ॥ कर बेर जुगत कुंती कहत ॥ सुणो हु साम दुख माहरो ॥२॥ ग्रहे ग्राह गज राज ॥ तजे पंख राव तिवारं ॥ नग नगो दौड़ियो ॥ सुणत सादुल निरधारं ॥ तै पाहि लाद प्रवीत ॥ ज्वाल माला विच रखे ॥ तै पंचाली पतरख ॥ लाज रखी छल देखे ॥ मह महण कुंभ पुत्रां मरण ॥ तै रालेवह विच अपती ॥ करि महर किजे भारथ कीयां ॥ सिर समो सर माहि पती ॥३॥ उचा कुंती अतह ॥ सुणे सादुल सोभद्रा ॥ कैसव अक्करण करुण ॥ वचन मुख चवे विहद्रां ॥ हूं भारतां हित अहित ॥ करत दुसहां दुर चार ॥ कहुं ऐपरि जन बासते ॥ हुवो पर चक्र पतारक ॥ सुणि पिता कंठन सम कथ सरु ॥ बहनी [illegible] तूं पण कथ बोले ॥ हद बाल ॥ उथा पै काल फिर ॥ कथ लग्गा कुंती झाले ॥

दुहो:- हरि कुंती चौ दुख हरण ॥ आतम सकत अथाह ॥ अभिधन
सुवन उबारियौ ॥ सुनि अग्या चत्र बाह ॥ गौ ब्रम्हा सत्र
ग्रहण पै ॥ हरी अग्या मद हीण ॥ रोचक परीखत
बालक ॥ उरख लखे कुलीण ॥२॥ रतें व्यास पधारिया ॥
जुजथिर गेह जरूर ॥ कहिवा जिग आरंभ सकल ॥ मेयण
देख समूर ॥३॥ हरि तद अग्या पद हित ॥ जुज
थिर बंध सजोग ॥ पूछ्यौ फिर संतत पदौ ॥ कारण
जिगन अमोघ ॥४॥ व्यास कह्यौ निज दुज वरौ ॥
प्रसिलपा को जिग बांन ॥ तेन सम्हो चतुरंगिणी ॥
कजहै मेद निदांन ॥५॥ पट बंधे आसि सुरसरी ॥
करि पुजा पदि पुर ॥ जल तीथह लग जीव जें ॥
राजा राज समूर ॥६॥ तद पारथां सथ दे ॥ सेन्या
सकल सनाह ॥ है रख्या कज मोलहणा ॥ ले अग्या
चत्र बाह ॥७॥ पुर रखण भीमह रखे ॥ जमुवां
सहल सजोर ॥ है जतने इन है लिया ॥ मेटं नंद
किसोर ॥ किसनां जन राजन चढे ॥ चाढेड दुरगंम ॥
जिग थिरज्या नीची सजग ॥ अग्या व्यासह वांम ॥८॥

छंद बेअखर:— चलि अजन रख्या काज अनचल ॥ सकल वीर
सनाह ॥ असुव फेरत विरद उनमत ॥ खलो खलोयां
राह ॥ जहत इन छत्र मारि दल जुत ॥ करत जुज
थिर काज ॥ चरत विरदां अनत अपि भुज जीपराजन
राज ॥१॥ त्याग जोतह पुरन पापत ॥ थपो आसि अस
हरत ॥ ग्रह्यो भग दंत सुतण धरि गरू ॥ वजदंतह
तरत ॥ पिल हंतक गिणै पथह ॥ सूर वीर सनाह ॥
अरोही पुर दह खेत आयौ ॥ नेत उहिनर नाह ॥ पीड़
जुध सदिरवां दलां अण पल ॥ वपर वेचह वाधि ॥
बिने नायक भ्रवत बांधे ॥ तेन अपर प्रमाथ ॥२॥
कोपि कपि धज लई कलि हण ॥ गोपि नग अवरोह ॥
हई सेना लई अणहित ॥ छडे स्यार अछेह ॥ करे
कडुल जुरि कलि हण ॥ अजण धाइ अधाइ ॥ लार

लै अपण पार छिद लेही॥ पले सपंत पोर॥ जहां
जप घात सुतन दुरजेध॥ सुरथ नाम पिता सझाज ठेलह
गिळै पारथ॥ मुदो खार सदाम॥२॥ तांम दुसिल लेह
प्रोहित॥ आवत पार परख पार॥ पथ रथह छाड़ पुगो
वंध मनह विचारि॥ कह्यो भाती अत कारण॥ पुत्र
मृत कित पुर॥ अवह संताने सुरथ अयध॥ करोतु
पर दल दूर॥ आ जई कपि धुज वाहन तांणगा पेरवताजे॥
चीर चीर॥ कीध निरमे वचन मुख काहे ठरि धरनधीर॥
दुहो:- कै कै दिस किरात चा॥ सुध जो पै जोधार॥ निगरधां
दिसहतलोपो॥ अरजन घात रंकारि॥१॥ कवित:-
:—: वयर वेध खलवार॥ पचह पर नरे सुर॥ तिगरती
साहियो सेल अंगमें निवाहर॥ तांम पथ लसमथ॥
हथ मांडी वह चारे॥ कीध फेर आरथ॥ वांण
विधा विसतारे॥ खल भ्रात पाथ हुता खले॥ मरे
वाथ विरदां वहण॥ अन अनह वीर दियई खता॥
कीध अचानह आरि पण॥१॥ पथ हथ आरथ॥
गिरत देवे दिण संगणि॥ दुवा तांम तर हत॥ मधि
सुर तोड़ सझारण॥ वे मधी वंध पतारे॥ दरनण
जोध सा कीध तेह॥ खलवार फिर जोरे खलै॥
वर वीर पथ विरदां वहण॥ उभौ निज भुज
:—: आभलै॥२॥ दुहा:- पारथ आरथ गंजनै॥ तिगरथी
वरियांम॥ खल वर है दुठी ररवो॥ पायो मित्र पुर गांम॥
सुणि कपि धुज आगम सरन॥ वडृ वाहण वीर॥
चित जांणे हित पुरियो॥ आयो पेग अधीर॥३॥ वे
मधो जद रे कहियो वचन कठोर॥ पुत्रह रहिम
आयो पगे॥ तूं खलेसां धुम धोरि॥३॥ परिजन
सुत चित चा अहित॥ वाइक सुणे विसाल॥ परिजण
गंजण वसतै॥ भयो अकालह काल॥४॥ भालू कै
जद अरवीयो॥ पुत्रह निवारि॥ जुध खंडा दे खलै॥
करि खित वांति निरधार॥५॥ वडृ वाहण वाहणां॥

समझ जद भड़ां सहेत ॥ रथ आरोहे आविहो ॥ भिड़ का
पथ महेत ॥५॥

छंद पद्धरी:- जुध काजि आय दिन महाजोध ॥ धर चंत सेन
कारन सक्रोध ॥ मानहु वचन करि मिलहु सूर ॥ चढिहुं
लिय जन रथ चढन सूर ॥१॥ पुन रंत सेन फिन उरह
धाइ ॥ कुंडला कार कीधु नारद में बार हड तहें थट
तेज ॥ मन चरत भीर वीरत सजेज ॥२॥ जुध वेसल
वह जाति पथ लोक ॥ आघात जुड़त नातह सपाल ॥
पुत्रह निहार कपि भुज सप्रीत ॥ मन भयो प्रसन्न
मह महज मीत ॥३॥ दुहु हत्थ बांण छुटत दुगम्ह ॥
रवि भयो छिन्नहि छिदु रूप राह ॥ भार दंत पुत्र भुज
स्काहि भारि ॥ वज्र दंत भरन दिन भुई बिहारि ॥४॥
पित हंत बेल मन खेले भूर ॥ चढ भेर बाव दोल
खाले सभूर ॥ पित पुत्र भिड़त पौरख प्रमांण ॥ मन
चरत मोहनन चरन जांण ॥५॥ छत्र सजल गिरत
धण चाइ छत्र ॥ जांणे कमतुह सर गहु जनील ॥
खुंडल दहत होइ खंड खेत ॥ गिर जांण कर वज्री
बवेत ॥६॥ नर फंत बाज स्काहि सारपार ॥ मधाद
मनुह कर दंभ मझार ॥ दिण छेकत जोध महि
दिण अपाय ॥ प्रहूत समह फिर भीय प्रलाप ॥
जंडीव चरण जांडीव चारि ॥ भिड़ि चरत पुत्र बानन
अपार ॥ जंघ्र की सुतण दिया विरवम गाजि ॥ जल
बांण धावत जाति जलेह राज ॥७॥ जुध मे बहु वन
पित पुत्र जोर ॥ प्राण सोण पतन सिलली हिलोर ॥
नवाद लाल ओति सेस बांण ॥ भिड़ भीम रचियो लातह
प्रपांण ॥८॥

दुहो:- बबू बाहण दिया विरवम जंजे पथ भ्रमाह ॥
उभौ पित हंतक खेले ॥ चढि विरदां नरनाह ॥
चित्रं गदा भुण देह चढे ॥ धोवे खेल मझारि ॥
भिड़ भुर बांण निकालियौ ॥ नालि दीठो भरतारि ॥

आलू कीसम अखीयो॥ तै लोइ तिल भार॥ जमीया कैम
नि बाहर॥ विधवा होई आहि वाल॥८॥ चित्र गढ फिर कारी
चले॥ सुणि आहि सुता समाण॥ ते गढ गेह पधा-
रीये॥ ईहे आतेथ कोप जांणि॥ बब्रू वाहण जुध किवन-
सुणिवा वचन सधीर॥ कहयो रखी रवत-क्रम करि
रीण पोरुत नर वीर॥९॥ हारिया पिता हंत कुं हुवो॥
मात्रे ही कुध मांनि अब ऊठ पाप उतारयो॥ कीजै मिलै
निदांनकि॥ कहो लरत अचल करन॥ गुरु कपाती काइ॥
कै वन जावे तप करन॥ कै छंडू तन माप॥१०॥ अइये है
कोव वीर पुत॥ अचल लगन अपार॥ सहस मुण
थी सुर अदे॥ कारन करम विचारि॥ तिपत न पुत्रह
सम कहयो॥ पुत्र विरख चराल॥ मैं थारे वल पांमियो
भारथ भीम अचाल॥११॥ चित्रासर पे फिर सधर॥
अलु की नाथ अथाप॥ आंणे पित जी वाढ़ियो॥
पारथ भारथ चाहि॥ यान अंदे जद धन धरा॥ कहियो
ऊठि रत कांम॥ तुं किम नि डर वलि हुवो॥ तजे मती
संग्राम॥१२॥ इग जद जोयें आरवियो॥ सुणि बे मधा
वीरि॥ पुत्रन पाइ पहारियो॥ तुं सुतो नर वीर॥१३॥
वारता:- अरि जन बेरा का पराक्रम सुणि कै मन मा मोद पाया॥
अभिवन का सोक मिट बै का इलाज पाया॥ बब्रू वाहण
आंण पगा लागा॥ पुत देखि पिता का सनेह जागा॥
चित्र गढ आलू की तुं मान दया॥ फेर अरि फेरण करइ
पुछि लेया॥
दुहो:- आसि मागध देस आविया॥ वधे परच पुर॥ सुत
सहदेव विचारि॥ वधो जेव तुर॥१४॥ सारथ पुइ
सहारियां॥ आयो पथ अमान॥ जुर सांची संलिन
जहन॥ भारथ करण मयान॥ मेधा सिध वाहिय
निप॥ विधि विध सेन बणाये॥ वे मधी हुतां वहसि
जुटे पधरी धाय॥ करे पराक्रम रिप कहण॥ भर
नारमं ताल॥ उतं भोव गोविंदह॥ रवगां खेत उझाल॥

कपि ध्रुज सेती फिर कहचो ॥ पे जुर लिय जोध ॥ धावे ॥ धाव पहारियो ॥ काइक विरंभ विरोध ॥ सो प्रोरस वोरस प्रघात ॥ और लहु खत माह थे खत बंस पहारियो ॥ सो ऐसो चंत्र कोह ॥४॥ जुह धाव विदाव जुध ॥ मेधा तिथर-पथ ॥ अरिजन निरख किसोर वय ॥ नह नहीं पै भारथ ॥ ओरेस खुस्या फिर कहयो ॥ सुणि सहदेव सुतन ॥ माहे पुणि मन नहीं जो हथणां पुरां जिगन ॥६॥ पुर दिखणाधी दिस चलत गयो चंदेरी बाज ॥ साहयो तहां सिसपाल सुत ॥ वीर विरलह राज ॥८॥ सर भर कोरण रिण रचे ॥ थांम रवे कुल कोर ॥ एम परव गिण मिलीयो ॥ पदे अरिजन ईं अवि पार ॥९॥ दखण रिण देसह दिसा ॥ फिर चाले नर वीर ॥ तहां चित्रांगद समर चढि ॥ आयो मिलण-अधीर ॥१॥ फेर तिरखदी देस दिस ॥ सो हय पथ सहेत ॥ तदह रुकिलेव सुत नमि ॥ बयो बंधण नेत ॥११॥ ताम नमा रखेन सुत ॥ दावड़ देस दबाइ ॥ लोभी अमा साह अणवियो ॥ हय पुर आइव राइ ॥१२॥ राज कुंवार वाज तद ॥ वाध्यो मने विचारि जद उग्रसेने जांणि यो ॥ रो-कारथ तिरचार ॥१३॥ जिथे समंधी भगति जिण ॥ मोहण मित्र विसाल ॥ पर गइ नाह परीछ नै ॥ अति उपजे तत काल ॥१४॥

कवित्त:— जिगन काजे सुध बाज ॥ गयो गंधारि देस-धमि ॥ सुकनी सुत रहिह रोतै ॥ गह अरिस अंगी कुला ध्रमि ॥ जोम पथ रसस मध ॥ चित संबल सुध धारे ॥ सेध सार का चार ॥ अमर तुणीर सहारे ॥ पर अर जोध हथणां पुरां ॥ नीर निहसै चाड़िया ॥ गंधार छत्र वालो समह ॥ छत्र खवनी पाड़ियो ॥ पुत्र सीस छत्र पड़ण कुध मात ऐसे रवत ॥ गई दोड़ि विच गहण करि सख पाद सुवर रहित ॥ थाल पुरि मोतियां थाल ॥ धरध चड़ावे ॥ करे भेट वो माल ॥ श्रवन सुरख बारुक बधावे ॥ वस चाल पूरु करि माल लाजे ॥ चित उचाल कौरस

सहे॥ सुकनाल गेह चोल त्र सहत॥ गमो पथ प्रयाग हे॥
चौपई:- जो पे पाथ बिदेस दिस राजन॥ नर पुर फेरै काज सब्र
जन॥ नृज चिर * चा कादि ज दुर जारी॥ पायो छाइ गज
घर पहुं छारी॥१॥ पथह सुख भीम उधिता पानी॥ राजा -
नृज चिर मोजि चारस रत॥ चैतह वदि आदस मी मोहन॥
उदित राजा कहियो पंनो पनि॥२॥ सही पातेयां उदेर मह
स्वामी॥ मिलि दीप उतीम दैय सुहामी॥ भोजन भाति भाषो
सुच भारी॥ मरत करावत तिष रहत जारी॥३॥ तिदज
पद नृज जर उउज सह॥ पाया नृज चिर निगन पलो-
कह॥ दर घत छउ तुरे मरुणा तिपत पण॥ पाया चित
हरखत नृप पंगणि॥४॥ निरख रही नर दु धरा धारि
दुर जर॥ पाया पम सुत सुराह स्वंपर॥ दैव दिनी
राकरा जारि हरख॥ पाया पाले हित जिगन उचरत॥५॥
दुहो:- राजा जिण पारंभ कहियो॥ वंश सकराजा जांणि॥ चान
ताजा पधण करण॥ जरत पाजा मही नांण॥१॥ वह
नोमी मिलि आवीयो पादि जग समंण पगाह॥ दूग
वीटिया मिलियो॥ हय फिरते नर नाह॥ वहू वाहण
उपादि वाद॥ सागच खिंच नेरत। कह्यो चदेरी पति
सहत॥ विद विछ मिले विसेस॥ पारथ रतै पचा-
दयो॥ दहस जी पे हय फेर॥ उथ थांनां थै सतै॥ रवै
हाकै मेर॥३॥ किसन खिजासर सथ छदि॥ मिलियो
पथह पाय॥ वहू वाहण सम तिपत॥ पवर लगावे
पाय॥४॥ चित्रंगदा दूंली चलण॥ लगी पनु छोलेह॥
उत धर वार हती इधक॥ मिलि विचांलै नेह॥५॥
सोहा पंचाली सहत॥ कन्या मिली प्रसंस॥ दुज मिलत
पिक पिछांणियो॥ है वाधारु वंस॥ सब ही मिलि
समिल सकाह॥ बैठ बिच दिण वास॥ उतराधीथ
पावीया उतै बिचारै आस॥६॥ राजा द्वारका पाद करि
दिने अथ निवास॥ वाढै करण पुछने॥ जिण पारंभ
पकासि॥७॥ तीजै दिन आरह तवे॥ चौनीय दिरवण

प्रान नी ।। जिग्र पी साधे लई ।। कै पुरषा ता मान ।।१०।। वंसा
ठोरव त्रिदोरव रुपो ।। पाका प्रवन्त पसारि ।। उरध्या गाति मझी
उधरै ।। कै भव सागर पार ।।११।। हरव सदेवह धार तो राजा
धंमह रेवाइ ।। द्रीच रंवगो सुरचि हन रिक्त ।। कुंडह जिगान
डितोइ ।। नीरन्तप्रा सुवाइक प्रवह ।। जिग भारेज जगजीत ।।
वेदा मग संग्गविया ।। राजा प्रादह गीत ।। १३ ।।

छंद वेदपरवरी:- व्यासह प्रगपा राजन कुंधि वर ।। जिन प्रारंभ
रचिमो जग आदर ।। प्रसि वच कै मिन वेद मगर
प्रवहत ।। प्रंग प्रतंग होमि या निज रित ।।१।। पोरवे
देव पितर रहित पुरष ।। राजन करे पाप प्रच्युरष ।।
चहुवे वरण फेर चित चाहन प्ररपे राजा वीति प्रनो
प्रन ।। लह स भार तो प्रन जिगन लाति ।। विप्र रोरी
कै दीप स वंछत ।। प्रिथमी उदय प्रजं तने पावन ।। निज
व्यासह प्रापी मन राजन ।। वा प्राइण नद मनह विचारे ।।
प्रवीस कुंती प्रविनह पोरे ।। संतन धीरन मिराक्षि
जग स्वामी ।। गो बडी प्राश्रम वह नामी ।। ४ ।।
रिरव राजन राजा परमा रत ।। विद्या विद्य पुजे विद्य
जुत सुध वित ।। व्रह्न वाहण चीत विचारे ।। निदा
रुक्यो पुत्रन चिन हारे ।। संतति सहत दुसीलता हित
सुध ।। विदा करी जुज चिर स्वाचव विद्य ।। मागंच
फिर ठरन लोरव लोरवि मन ।। वेगह देत मेजे हित
पुरन ।। ५ ।। सुत मिरत पाल सि कन सुत रहित लेम
जिथि निज समंध विदा कीय सुधगम ।। उन इन
वात कुरन छत्र उलरव ।। माने रवि दा रुक्या प्रगमरव ।।

कवित:- दुय मेदह विद्य सहित ।। जिगाहि पुरन करि राजन ।।
गोतक दन चो गहन ।। करै प्रतरै होरव सकाजन ।।
जहु मती रहित जुगत ।। चांम प्रारंम पसादे ।। विवध
ताप तोडि़या ।। निरखत्रां या धम पोहे ।। हथणा दि काजे
कुर दातडिय ।। जुज चिर तिर छत्र धर जरु ।। थिर करे
मनह माडि़ पल थयो ।। माहर विरदां प्रावरन ।।

दुहो:- राजा जिग पूरण करे ॥ पेरवे विप्र अपार ॥ मन
थिरता कैसे भयो ॥ भ्रम करता निरधार ॥१॥ एक निकुल
डेते अगाम ॥ आयो तहां अचेत राजन सरस सवला
हवा ॥ सत चार राग की नेत ॥२॥ अथ निकुल अथहास
लिख्यते ॥ :- चौपई :-

:-: एक निकुल बुधि वान अलोकत ॥ आयो जिग
निरखण चित उनमत ॥ अंग अरध सो वन मैं
उपम ॥ अर यह जातीन ॥ अति दिग बैठ अधम
उचारण ॥ इक कुर देवत महा दुज उतीम ॥ मिथ्या
करत फिरत चित अन भ्रम ॥२॥ पख इक महा खुधा
पर पीरत ॥ फिरह अन सो लीधो तीह सद पीर ॥ जब
चौ करि मातु तीहि आदर कीयो चल भाग चित
दिठ करी ॥३॥ इते एक खुधा रत आयो ॥ जिण दुज
मन को मरम जणायो ॥ आठ पैसा आप भाग
लीन ॥ करथी दुज दीप दुजहि सवास ॥४॥ सो
भरखी भीरवम फेर तेहण रत ॥ अन मांगत लाग
इन आकुल ॥ बामां भाग फेर सुवि चारी ॥ आपे
तीहि रहित सुत उच करी ॥५॥ पुन राव रति फिर
दुज पूरण ॥ अन हन थायो न हवो उरण ॥ पातह
मज आतम चारक अति ॥ आवियो सत साधक हित
वंछत ॥६॥ तौही निपतन थयो दुजह तद ॥ उ भत
मनह वतार आपद ॥ सुत गृहिणी को सतह संघारे ॥
बुविधो भीरवम भाग विचारे ॥७॥ वत्रो सिह पररसा
अन कारन ॥ आपे सिहुवां कष्ट उचारन ॥ भीरवम
दुज सत देवे निरधार ॥ कहीहु भ्रम सहु सुकरत कर ॥८॥
तुं इह सत करे सरग अलोकत ॥ विप्र जा सम पद
कर हित वछत ॥१०॥ भ्रम सुत दुती तिही काजे कुला
धंम ॥ आयो तिहां देस इन आकमि ॥ भ्रम सुत हो
जिगनह चु चारन ॥ अरचन थायो कुंदन तन अन ॥११॥
दुहो:- कीयो निप तह निकुल कृत ॥ सत चारन को सेरव ॥

राजा मातिमन मद धरै माया प्रगत प्रलेख ॥१॥ सातु
से रहु माते जुगाती ॥ विप्रह अविनिद्रेन ॥ राज तिहि
सिर पर नहीं ॥ तेहरे जिग इह रैन ॥२॥ इति श्री निरुल
इतिहास सम्पूरण ॥

कवित्त :- जनमे जो व्यास जु प्रसन पुछ्यो हित भारी ॥ कहो
निकलंक समन जेत साते कथा उचारी ॥ रजन ध्रम
निदवे ॥ दुजन मात जुग गायो ॥ जदुपति लिरखायो ॥
वचन नाम गो प्रगरियो ॥ विरतंत एह मातह सहज ॥
वैसं पाइण प्रगटिये ॥ श्री कृपा सोइ सुनवा श्रेकत
मनह सनेह न राखीये ॥

छंद वे प्रवती :- वैसं पाइण विचार सकल विधि ॥ निकलंक
लोगो कहन हेत निधि ॥ राम नाम रीति देव प्रलोकत ॥
जजवा लोग इंदह रहित जुत ॥१॥ रित जय सुवांतो
मत ध्रम रह ॥ उदित मंत्रा रेखीयो सुनंतह ॥ इन
तीरथ यां कहियो तिरहि वारी ॥ दिठ नेम करतह जेन
दुरवारी ॥२॥ करुना मन तिहि विचार बुद्धि विधि ॥
सब नेम जिग माते कहत होम सिधि ॥ प्रसन वसु दे
जई उवचारियो ॥ धुनि मुख दान विप्रह नह धरीयो ॥
जांग चंदेरी नाथ हेत जुत ॥ वाहिवा ताते गयो पुछ्यत
वत ॥ विनय रिख सम जई विचारे ॥ पुछ्यो प्रसनकाज
चित धारे ॥३॥ रिख जद मानहु कहयो कथा करव ॥ सुणयो
काज इंत सकल कारिज गुव ॥ जांगे तीह सुणि कल
मुरका जथा ॥ कहियो नां कहिये जन कारण ॥४॥
धन धन्या की तिलये प्राच धरि ॥ ब्रह्म होय तिर
धंकुरस सविसतर ॥ विसवा मित्र प्रासिती प्रगटत
जुत ॥ जाम कहु दुख तिन हित जानत ॥५॥ प्रसि
नंरवन संवाद दीप दरव ॥ कराजा तरिया माते पर
तारवे जनमे जै फिर कहयो वेद जुत ॥ धर्म द्विज
दान कहयो फल धुरित ॥६॥ वैसं पाइण जदह
विचारि ॥ प्रगा सत रिरवि ति कथह उचारे ॥ कुंभ जरग

समै जिण सुध किंत ॥आरंभी वो छम छर बारह आति॥
न रता आगिन थापी मुनि वर निज॥ उतम रिख व मैलि
कुंण ध्यारिज॥ आसति सि कुट मरी चिप रेख आतं परखी
सकट वरेही पुरत॥ ८॥ संग्रषलो संवरी पत सोभन॥
रित ज मिले महा रिख राजन॥ धम करता तप धानि
सच साच धर॥ आगसत मख वारत हित आवार॥१०॥
धम करता तप धानी साच धर॥ धम जाप रता
रिख धारित॥ अगसत जिग्या मिलै अपनो कत॥ जगती
मह पालण जग जेता॥ विरतह क्रोध लोभ नह
वेता॥११॥ उतम जिग माहे तत आचार॥ नीरन
भावे यो इद निराहार॥ रिख जद रोरन मारि ध्यान
रत॥ चितन जिण निसंधे चित चाहत॥१२॥ समरण
मरव फिर मनह सहारै॥ काइल सत किंत कीयह
कारे॥ मुनि तद सबह मोद मन माने॥ उगतव
कुंभज उन माने॥१३॥ इंदनै कांमी ताय आवइ पतै॥
कुंभज जिगन रीयो संगी किंत॥ मुनि वर लोक
लाज मन मोने॥ वारनि व पुजन क्रोध विधाने॥१४॥
काम चोन तह तोड़ि अगम किंत॥ विध पुरग क्रोध
चित वंछत॥ क्रोध रवांन तहां होइ अक्रम करइ॥
उचरनट दुगध रीयो धातो आतुरी॥ मन
जाहि जत दह मारि मन॥ कीधो कुकर जाहिन
अकारन॥ पितरे क्रोधह लखे पुर परव॥ उव-
धारियो निकल ५ हलेहि आरिख॥१५॥ क्रोध तुकुल
होइ तइह जोड़ि कर॥ कम तवियो पितरन सध
आतुर॥ मोहि उधार फेरि माहि मंडल॥ कुवह कर
हो कहो लजि कस मान॥१६॥ आधाह लुने कह्यो
जद सम सत॥ धरि चितजा जुग थिर जिग धारि
धारित॥ तेनह संभाषण कियं अताई॥ वद लोतै
आगरति भाप वराई॥१७॥ सोउ धाहि ओहिअरिख
सत॥ आयो जुज थिर सभा अपनो कत॥ किंत कुरन-

तारी ध्रम सुत सुणे इथ ॥ अस्त तजि जुद्ध तो पथ
उन्नत ॥ १५ ॥ :— वारता :—

:—: जग मे जे राजा वैस पायण दीव तुं नकुल की
जाते बूझी ॥ दिन रा व तद राजन सेती विध विवर
के कही सारी करके सूजी ॥ अव अस्वमेध अबको
पूरण थया ॥ अनुसासण कहणकर कवै कुर उद्दिम
जणाया ॥ वेद व्यास वैसं पायन की त्रिया धी उही
पुराण होसी ॥ आगम कोनो जांणण हार लो एक
रा कहीज जोसी ॥

—:॥ इति अस्वमेध पर्व ॥:—

६.

—: व्यासासण – पर्व :—

दूहो:— वद चैत्र ह नयो दसी ॥ लगन वारह सुभ दीह ॥
अस मेदह पूरण थयो ॥ नहीं वैबर सक हीह ॥ १ ॥

कवित्त:— अगर पुख चंदणो ॥ चैत सुदी रुध तै एकम ॥ देवी
पूजन सु दिन मांग उत रंग अगम गम ॥ रित वसंत
सा तंत ॥ प्रविर धाया वन पुरदं ॥ सीत अंग समीलित ॥
उसन तपन हन अपुरत ॥ वाघ तान वां विद्रा विवर ॥
नेउ वैमल मचयो ॥ कवि लीह ताम व्यासह त्रिया ॥
व्यास सम अव आरंभियो ॥

दूहो:— वैसं पायन सम कहयो जग मे जै राजांन ॥ केता
बरस बतीत कीय ॥ जुजष्ठिर राज महान ॥ तद मुनि
तवह फिर तवे ॥ नाग आदि सम एम ॥ बरस छत्री
सातु हैत अव ॥ पाली प्रजा सप्रेम ॥ २ ॥ आम्या पंथ
निरंद नी चाले स रजन चाहि ॥ औरती गंधारी कथ नह
लोयत हेत साहू ॥ ३ ॥ अताहे अप्र की दोपदी ॥ जनोंदर

हित चाहि॥ ब्रह्मचारी पोषै रहत॥ वह रीत पास मझाह॥४॥
विद्या विविध काढ़ि नीत निध॥ कठिन करावत काल॥ पुत्रन
दुख प्रजनन रहत॥ निस दिन उधरि सुकाल॥४॥ राजा
वचन बंधत जंत॥ राजा चोर न चाट॥ पालि नतोपत
विविध मन॥ आगया चीन निरार॥५॥ छंद के उपरनी:—
:—: चित्रारथ आगया कीने नित धर्म॥ जुज पिर चलत
पतिहि हित संजम॥ परगह सहज कहत इम नित पत॥
विध विध करहो चित्रारथ वंछत॥ दुं वन वरती
रहत सदा ही॥ चित सो वरती स्नेह सदा ही॥
संवत तुला पंड पुत्रन साति॥ विधा विध कालह
आगो वंछत॥२॥ राजा होम दान धरमा रहं॥ नित
पाती करत हेत सुर नंदह॥ तुरसती वादन विप्र सुखों
साति॥ राजा अचरज गावन धरम रक॥३॥ पंड पुत्र
सम होत पिछाने॥ पाती सुत सो कन मन माधि
आणे॥ भीम तथा बाइक उक भारी॥ पाती लाटा
लोगत अहं कारी॥ चित्रासट जद कहत देख चारि॥
जुजत पिर सो मेलहो वन दुरजर। राजा जद कही पो
चर मारत॥ वन तुम पिता कहो किम वंछत॥४॥ दुःपाग्या
वाति पतिही अपीनो॥ डोरन पाती किहि कित दीनो॥
कहोत राजन जुद अपण कल॥ जाउं वन वासह चित
उजल॥ कही पो जो न करन अंगी कृत॥ तोहु पातम
हत कृत सो सत॥ जो तुम वन पाल दै जत जोहर॥
चीरन छनह मसतक दुर चार॥६॥ सारवी लीहि कुच
चार विदुर सक विध विद्या जोन करन पित वंछक॥
ब्रह्मचारी जद कहयौ पालहि गुण॥ पंचे पातहि
वले अचूरण॥ चा मारुत जिनह लोह मैं मारे॥
आपण सुत हित नीच उबारे॥ :—दुहो:—
दुहो:— चित्रारथ राजन सरस॥ कहियो वचन विचारि
आवह वरो पाठ सो॥ सो रहियो निरधार॥१॥ वन
रेख मझे पाल तन॥ है मुगतन को मारग॥ चारं जोग

माग चित्त ॥ श्रीपावन पद मांगू ॥१॥ कारेजुत कोरि
जुज थिर कहयो ॥ जुग पानि रोति विचारि ॥ तो वन
वास पधारि पै ॥ हुं ताजेतुं गह लोर ॥३॥ ध्यास्त विनोद
फेर विचा ॥ कही यौ सम राजांन ॥ रितरंभा सुजा-
नापित हरे ॥ पतीपै वनह महान ॥४॥ गंधारी दुज
दांन दे ॥ भोजन आनह आपि ॥ राजत विरचा गजह
गनि ॥ ले चाली वन तप ॥५॥ जाय उराहन मन मुदित ।
चित्रासर छु छु धार ॥ राजस नीतो राजनुं ॥ लोरो-
कहत विचार ॥६॥ : छंद के पदवरी ॥ :
अपाकह अंगा राज चा उतिम ॥ जुग जुत क कहत रीव
अगाम नाम ॥ थान मोर्ख अगमात सेन थिर ॥ देस
प्रधानह प्रोहित अनंद ॥१॥ देहा दह वल परवोध
दिढ ॥ पेरज अपसरह राज हेत पढि ॥ से सुकजथा
जोग हित अपा करि ॥ रावीजै कीजै नितह परि ॥२॥
पिंडत मित्र चारि चित धरया ॥ वन जाई कीजै जूक
विचुरया ॥ ता नर तुकन नारि की अवनन ॥ उत्क
नर नह चातरो नह गन ॥३॥ अंचल पजाह दीन
मानि अपारि ॥ क बहु तुकन कह कीजै ॥४॥ परनारी
पर चत पर हर पह ॥ कीरा नगनन करणी करह ॥
अगामन जाम क बहु नर हित आनि ॥ विच विच
करणो पर जह वंछत ॥५॥ होम हवन पी परम
सदा ही ॥ चित सुध नप रारवे चित चाही ॥ सेवा
करम विचारि सहाई ॥ त्रिप वरतै सो सदने आई ॥
सेना पत्नी सुर करणो साति ॥ जुणो अवगुण लिजै
उतिम जाति ॥ अपपण वल जोरा आरवोड़े ॥ पर चित
विषै काढ़ि प्रकोड़े ॥६॥ सत्त संवतों थीसंप सकार
रण ॥ पुत्र क्षीलह मेते कीरेपे पिण ॥ तुधि वांनन
राजत जं व विचा ॥ सत्त रोती करतै पांमणसिधा ।
विगह संघ जोरा वल विर तीजै ॥ सतरी सकाति
सजोर लीजै । सेना रक्ष अंगर करि रारवी ॥ जुध

जुवार हुवो र जुवारी ॥९॥ सुन आया राज बोलो बात्ह
सही ॥ आगे कहियो सुमन अलोकत ॥ सो संभारि करतै
त्रिप सरीपंद ॥ गुन गिथि जिकां परखी कै गोविन्द ॥१०॥
विग्रह विग्रह भीम विराणी वंछत ॥ करजोर पहु विचारे
कुल रित ॥ सत अस भेद सर भर लागे । कुरु
प्रज पत धरम लगाओ ॥ सुणि इह नीत वचन जुज
थिर साली ॥ कहियो पिता सो कहियो कृत कृत ॥
चितारस वन गमण सुपत चुरि ॥ अपा करन चिहु
चित वंछह ॥ जुज थिर देह मतां मथ आदर पासव
कुंठह हुवो राज कर ॥१२॥ सुहरत मात मोह धारे
मन ॥ हरख गय सहत हदन अाति चरणा रथ ॥१४॥
जिण कहियो राजन तै रहित जुत ॥ वन कुं गमण
विचारे वंछत ॥ भीरवम द्रोण करन मित आरथ ॥
सहत दुजोधन भीम हत समरथ ॥१५॥ मागंतह सुदेव
जोध सिद्ध ॥ अंगह सहत सरग गा रूपवृद्ध ॥ देवारह
खोज वीर उन को बात ॥ कुंअर हया कसे किरट
कंदत ॥१६॥ रह दइ की इच्छा आईन ॥ चोकस थयो
कहै चतुरानन ॥ लाजो धन कह दोसम तंबीर ॥ कोधो
मन चाहत करण कर ॥१७॥ कारुल हरख कह बात
भारवे साले ॥ सुर आसमी पंकत गो चूरित ॥ चौदह
सदी पुनिम गाहि आकमे ॥ वन अंबे चालत बिन
विश्राम ॥१८॥ जुज थिर सरस जांग विचजांगे ॥ राम
कहायो कथन अजाये ॥ बिल कुंद बचो मोहि रहत
वंछल ॥ जेम पिंड डांव रिपु चित राजन ॥१९॥ सुण
अरिजन सुरव वयण पितह साले ॥ आयो पास बिहो
इर आदित ॥ कहयो चिकोदर सरस जोड़ि कर ॥ धन
आयो करि दया चलह चार ॥२०॥ पारथ वचन विके
कर सुरत ॥ गाहियो नाह अंकको अव गुण गिन ॥
विदुर अजन सम लई विचारे ॥ निज धन आयो
कोच निवारे ॥२१॥ पारथ जद आयत बिन प्राण

आयै भयौ चित्रासर उरग ॥ तीजो रहि चितु तह पारस
पिउ पुत्र न दीया पार वाति ॥ २२॥ तावे सुरथ नचा
भाय सारी सचि ॥ मन तिह मै कियो महा काते ॥
नवहु भयो उठ अंग जपहि वाल कल तन धरीया चित
बंधहु ॥ २३॥ चौपई वाते सावि धु धारव ॥ करि वन
चालियौ नृपति सकारण ॥ कुंता कसना उला कुंवरी ॥
तोउ चित्रांगदा फिर सुवरी ॥ २४॥ आलु की आदि
सुत अलोकत ॥ कुहि सार राजन बंधन ॥ नयनो
नजर महाजल निरमल ॥ करती रुदन महा जल कोमल ॥
उरध भुज थिर जोते जिम कहीया ॥ रहिमद चित्रासर
तिम हीन कहीया ॥ तप न सचै ताहि रुप ताहि लोचन ॥
धीर सायर वन अथगाह भागे ॥ कुंती सिमरन कीयो ॥
खरर खरी उरध जाल न लावियो पहली भारथ चिंतन
बंचारै ॥ निज पुत्रन अब मोह निवारै ॥ २८॥ चाविये
जदह [illegible] छिया चित आयो ॥ बंधि मै सजीया
धरम बताया ॥ उसमै कसना गेह अवकारी ॥ मद
मन अपनो छमा मझारी ॥ २९॥ ते अधीर सिमरन मांहि
सहीया ॥ कारज सुत बिध बयन सकहीया ॥ बंधनो
मोह दोही पर धरणा ॥ जाति सत पंच तह नरक
अधुरव ॥ ३०॥ तिहि कारण तुम उधह लाडे ॥ विघ
धुरा सब सागर बसाडे ॥ रह सहदेव न रहित
आवहिशा ॥ कहि जो आवहि निसुरथा सात करि ॥ ३१॥ अंत
निज बंध जाने रहित कारी ॥ कुल रहित जो कीयो
सुचि धारी ॥ ३२॥ अन सो जेठो सुतह कहाइ ॥ पडी को
पथह उप जाडे ॥ द्वार सुतन चित बंस सोमाचि ॥
गिरिधो हरि अधुया मिलि धौठ गाठ ॥ ३३॥ दिवा
धारथ बाहियो नह खल रह ॥ विघ सोमो कीवा
चित बंधह ॥ अब पानी को कुपा अलोकत ॥ कीजो
धांम घर निज कुल केत ॥ ३४॥ विधा करत रहित
करे पुर परव ॥ राह बंनह पुछयो करता राव ॥ कुंती

कहत गंधारी ऐत कर॥ जासु पंड लोक दुख आजारि॥

दुहीः– कुंतीमन निहचै करे॥ गमन गंधारी सत्थ॥ पुत्रां
बिन पत पर हैरे॥ करे बिडांगी पथ॥ पंड न फिर
ग्रह देस फुलै॥ छोडे मारह पछे॥ सेहा चित उचमाप॥
जिम बिथा धीना बछ॥२॥ राजन गंगा तट बिरैं॥
आवै चित अचारि॥ अवनी सैन बिचारीय॥ चित
धारे बढ़े बीर॥३॥ प्रात भये उठि संध्य पह॥ करि
सुरसर रित सनान॥ फिर उर खेलह डिस चले सम
कामा राजान॥४॥ सत सुपह ररिख राज है॥ प्रभास
हित सुत आय॥ तप हुत कर तन धारियो॥ क्रातन
कहे बचाय॥५॥ नारद परखत मन मुदित॥ देवत
सहत सुजांन॥ आया तहां अवतीया॥ बन राजन
बिरत रांम॥ करि जह दरस्या का सुत॥ चिंतासर
कुपित बांन॥ सुधगी नारद सम प्रसन बनसणो
ताजि थांन॥६॥

कबित:– सुनि नारद नृप सरस॥ सेम फिर सम्मुख उचारे॥
आगतै सहसा चिते॥ गयो नृप बनह मझारे॥ मेला
लह फिर सुणहु बिबरस पर उध बिचारे॥ मातै लोक
मारिया॥ करे आतन तिर धारे॥ उह नृप दुतालय
आयरै॥ कथिया अमरा पुर बिचत्र॥ सत लां सेम
पुरन अबोध्य कबह पुरन तुम॥ लाहियो॥ किहि कथन
न सुजाहै॥ उबह देह छांडि कलेवर॥ समै रह-
सिरतंत कहो मुनि राव सुधा कर॥ तद कहयो मुनि
राजन सुणात॥ देह की बरखह आव अब॥ पाति बाक
सहत अगन कर पुरी॥ कीसाई अक कारज सरब॥७॥

दुहीः– देव ररखी फिर दारकियो॥ तपह बिचारे देव॥
कुंती लहि सी पंड धर्मी॥ माड़ी सेवत सिहत॥८॥
नारद उम कहि उठि चले॥ इन दासियन चित धारि।
तत्र जु पर चिंतास जो॥ मन तप ते हेत बचारि॥९॥
सुज फिर अगाध दी उदास सुत॥ गजपुर खिरवी सुजांन॥

कीयो मन निसचै कै // धाजर राज बिकांम //३// कुंती
हित निस दिन कहत // रुकिमणी बचन सकांम // देखत
चलीये मात दिग // वन दुख तर विश्राम //४// सत
अजातह कथ सुणि // करन गुण्ह सकाज // वन
पधारन विचारीयो // तज ग्रह राजन राज //:~ वारता:~
:—: राजा मन चिंता धा द्रसठ कै तिलक सैन्या नर
दीयी // आप आप आपकाल हस्तन दास कुं आग्या
दीयी // हाथी रथ घोड़ा नर बाहरां समेत चीलया //
जता नियत सातुही कुनिक कै पोट कै कै जांयै उथलै
ढाना प्रजा बिन सब्हरां कै कैहै राज धा द्रसठ
कुं बही // वछ राई अपहर मार जांये जै वचन लाघई
हैके सुही //~ छंद चौपई :~
:—: वन धन विच जुज थिर सुचि चारी // आयो लीया
सेन अपारी // चिहुं वरण सम सत चित चाहे
आयो आश्रम वन अवगाहे // चित गावन द्रसठ
चारवि कायो // विच विच कुंती हरख बढ़ायो // नाम
गोत्र कही सब सनोती // प्रजा लोगाइ पेठ सप्रीती //
दुहो:— रिख राजन सब आखीयो संजै सम निरधार //
जुज थिर भीमह अरजन जमु // पांचुं जोत प्रवीन //
सहत परा क्रम सुर धी // कहैया जोध बलीन //
पंचाली सुत द्रोपदी // कुंती सोदर सोच // उता-
चित गदा आखत // फिर हार आहि सुता अभोच //३//
राज रमन सेरवह सरव // संजै सुल वताय // राहैया-
~~धाडो~~ धाडो रिखन कै मन मै धीरजा पाय //४// चित्र
सट जब फिर पुछीयो // जुज थिर अन्नजवांत // राज
समाजह कुसल इकेत // कहैयै हेत महांत //५//
छंद वेताखरी:— साति कहिको आगै अजता सब // नवी पै
राजन खेम अलो कत // जोधा कुन आगम सुधानी पथ
वप है कहो विचारे बांभण //१// कौस दुगांम कुरा हित
करीत // है ज तन धन सेन ममकारी // बाहठ तज [illegible]

पुहवा सब वीरन।। ब्रज चल वांन अमोघ अपार।।२।।
सुरथ सहेत सचेत अमातस।। देवह पितरह सुजन
दह दीस।। विरचा विप्र विपति विहंडन पवित्र।। नित
जांन जहो होरर दया निच।।२।। तप धनुवा तिहचे
धायौ तप।। जज तहैं तिहचे अजपा जप।।
दूहो:- पित पुनह सम बुद्धियो।। सब विद्या आनंद अपार।। जुज
थिर भाव भीत जुत।। वीरके कहयो विचारि।। विदुर
तपो बल बुद्धि विद भेदक भाव समेद।। वन विहरत
चित विदुरतंत।। उदंत गमने नर देव।। तापन तपह
सरवीन तन।। वल कल छीन विभाव।। दीन दशा
धरव धारवियो विदुरह चित्र अजात।।१।। जोग मारग
ध्यान धरि विदुराई कह विचार।। मिलिवो रुक्म
अजातसम।। तजि देहा देह तार।।४।। आह सदन लह
वन करो।। राजा अजोजन प्रजालि।। कोधी नित
नित विदुर को।। देजन धंजल काल।।४।। जोग
निसां तहां सयन कीय।। जुज थिर सवि समाई।।
दुरव धर घन नित प्रात कीय।। वन गइनह निव
धार।।५।। त्रिग रक तहां अनेक विलि।। तापस सब
तपत अगाध।। पतह दीठा कुर पती।। साधह भाव
असाध।।६।। १८३ह मास उदार दिल।। रहे तहां
वन नाव।। नारद परवत देव लेह।। फिर अगमा जुत
भाव।। २।। विधि वसु चित्रांगद वले।। तुंवर सहर
प्रताप।। इया गंध्रव नह अगम।। जुज थिर जोगि
निपाप।। ८।। व्यास वशेरव विचारे विध संतती हेत
सकाम।। पुरण क्रिया धारीया।। वन जुज थिर विसराम।।९।।
कवित:- कहयौ व्यास हरि कृपा।। सब वह दिन वास सुकत मातेत
चित मोहन कथ धवी।। हरं सोइज अपार क्रित।।
गंधारी द्रोपदी सहत।। कुंता जुत अकरा।। भार थह
मिड़े घड़े रिण भीम मछरा।। सो निरव दुप वह मारि
सम क्रिया करि सम।। सम हित चित धारि जीवैं।।

वाहणा सहत जोधा विचत्र॥ दिखत जग करी जिके॥१॥
वेद व्यास ब्रुधि बिमल॥ हेत संतती चित धारे॥ महा
मोह मेहिला॥ तकारी ब्रातेमा विचारे॥ प्राय नीर सरस
रत॥ जोध दिख धीर प्रताप॥ प्रगट कोच पर पुरख॥
खोभ प्रगरह उक साथे॥ वाहणा हद ग्रावध विचित्र॥
तन धरिया पोरख अतुल॥ पावीया वीर माया अनंत॥
वाहीर वह सौ जल वहत॥१॥ छंद चोटक:–
—: करणा कर अंधया हुत जेह॥ माया मिले वीर गये जेह॥
दरजोधन मोद समंद दीये॥ जाइ अंध को पुरख रामजपे॥
पित भीखम द्रोण करत मिले॥ मन मोद चिनासट हुत
मिले॥ सुखनी सुत साथ लीये सत ही॥ गंधारीय
समाले जुक गाही॥ वहली कह गुरीय सोम बले॥
माया जोगि कीत करे उजले॥ भगदत जला सिंघ
जोध भले॥ वधि अया व्यास कैने मिहला॥३॥
जय धत्तह धोपद राव जुत॥ मिलि मद्य नरेस सभे
उमत॥ चितरा इम खंड महेल सरुत॥ जल छोडि
मिले कुल आइ जरन॥४॥ अभिवन पंचालीय पुत्र
अहे तव वधि मात मिले विदं अविंद समेत मजे॥५॥
धार उदार सनीत हुइ॥ मिल समले राजन हेत
मह॥ इल कम धते धत तं व अती मह पत परस
करनी मती॥६॥ दसारथ दरथ व्याल दया॥ छित
पांथ मिले न वधारिक था॥ इन आदीह खोभ
अटर अती॥ मिलिया सब खेत सहेत मती॥७॥
दूहो:– आया व्यास विचत्र सो॥ मिलि समले राजांन॥
मोह निवारे सब मती॥ गा आपो हैथांन॥१॥
भीखम जोध वसुधां मले॥ सुर गुर जोण सकाज॥
कन आंगाह जाते आगे॥ मिलियो राजन राज॥
अभिमन सिरत कर जाते गयो॥ सुर भो चिहर
सकांम॥ नारी नर रकस थयो॥ सुकनी कैपुर
धाम॥ दरजोधन कुल जुग थयो॥ के जिवके

निस धार॥ कै गंध्रव कै सुर नर॥ या अंसा अवतार॥
चित्रांगद गांध्रव हुतो पंडु महत गत मांहे॥ अग्नि पवन
इन्द्र अजन॥ अवनी जमु वां जांने॥ हरि अंध्या रहे
पर भरह॥ आप मिले म्रत लोक अवकी भारउतारीन॥
या अपनो पै अंश॥ ६॥ चित्रा पट जो हो चित्र॥ निरखे
अंध नरेस॥ कुरु कुल ही मित्र असिध यो॥ सब तजि यो
अदेस॥ ७॥ जग मे जै जद कुछि यो॥ व्यास तजे विमात॥
देखा इछा दिष्टा किया॥ केम मित वानि भूपाल॥
जो मो चित रहित उचारे॥ तो मानहु साति वंत॥ ८
इन संभारि सती भरत॥ तो ही कमल थिरत॥ ९॥
अक्षरश करया विचारि आति॥ राजन वचन सनेह॥
परगट परीखत अप्रोतीयो॥ निज वोन्धु द्विज देह॥
जग मेजो जद हेत जुत॥ पितहु मिले प्रमाण॥ व्यास
प्रभाव वसेखियो॥ छाडि सनेह अपमान॥ मरनी
कह सम अरवीयो॥ जन मेजे राजांन॥ व्यास कीया
उप पर सीयो॥ परीखत पिता सुध्यांन॥ राजन पुत्र
निहारने॥ छुटे मोह दुगांम॥ गांधारी कुंती सहित॥
आपो आश्रम धाम॥ जुज थिर कुंत दत जुत॥
दीनी सीख विचारि॥ वामा जुत राजन रहयो॥
वन मन तपह सुधारि॥ १०॥ गज पुर आवे छह
रतीयां निरवांण॥ वरख उभे वेतां विरवम॥
रीख नारद चित चाह॥ आयो तहां अचीतियो॥ सुख
मुख तो नन वाह॥ १४॥ :- छंद चोपई :-
सम जुज थिर नारद सुख दाई॥ रह आचेति कथह
सुणाई॥ चित्रांगद तज देह जो जोग चित॥ जो
धरा धार अपनो क परम गति॥ १॥ जुज थिर जांम
उक दुर जार॥ सुक नारद पुछयो हित संभारि॥ मम
पित काहि किथ देह त्याग महि॥ जो सरगा मग
छोरि तपह गहि॥ २॥ जुज थिर सम नारद तप
जेता॥ तत किथ कहिया वचन सहेता॥ चित्रांगद

साहि दाइ चौंस थर ॥ जो गंधार गंधार पुर गइ कर॥
राव कह्यो फिर काइ हैत करव ॥ मुने कह्यो के होयगो
सब की लेख ॥ देव रिखी फिर कह्यो धारि दिल॥
राह बंके इह बिधा जो अग्गा कोले ॥ बीवरखह रहवन
तप तापे ॥ प्रकरम कृत करि सबह उधाये ॥ पवन
भखन तप साहि जोग बरव ॥ परथ वरख तजिया
फल भाखिव ॥३॥ गंधारी जल मात लीपत ग्रस ॥
कुंती मास भखत कंद रस ॥ संजे रवट र दोहं
सुविचारी ॥ कंद मूल पासत पाहि कारी ॥४॥ इह
बिधा तप तां ताप प्रलोकक ॥ पाये संजय करम
स उधत ॥५॥ इहया अगनि लहां जागी पति ॥
बिधा बिधा राज रिखी पमन वंदत ॥ जोग धारि
दिल सोक मोह जाहि वप दहियो राजन पित वंदहु॥
जोग धारि दिल सो क मोह जाहि वप दहियो
राजन पित वंदहु ॥६॥ गंधारी पति हेत जोग
जागि ॥ कुंती सामत जियो देह किन ॥ इह बिधा
तज निज वप पह कारी ॥ निज गंधार पुर गो निरधारी
उवाचः— बिधा नारद सब बिधा विवरी॥ जबपि तप हतह
सजीह ॥ सुध करवमल वर गावतो ॥ गो उतराथ
दिसीह ॥ सुज फिर सुध पित मिल जाह ॥ ले साथे
दिन काल ॥ पायो गंगा तट विरवै ॥ देवा जलह
उदास॥२॥ पये गरर उदारमति ॥ धरम सुत
चीत सधीर ॥ वाहि फिर पाया ग्राहे किरवे मपन
धारहत नीर ॥३॥ कुल धरम वेद मग क्रिया करव
प्रजंत विचारि ॥ चित नित करि उरध थयो ॥ मात
पिता निरधार ॥४॥ दान जथा निज पिड़ के अधाया
विधाह सराय ॥ राज बंधी राज पुर फिरवे ॥ कातिके
त्रित रहित दाइ ॥ ५॥

॥ इति आसासन पर्व ॥

॥ संपूर्ण ॥

~ : ॥ मुसल — पर्व ॥ : —

कवित्त:- चैत सुदी अष्टमी ॥ वार सोमह पख उज्जल ॥ मीन
मांय उतरांय ॥ मेरव मंगल अनुकूल वल ॥ मिथुन चंद
सुरव कंद ॥ जीव तुल राम विराजत ॥ विचज गह परवरत
रितह पालिया केत छाजत ॥ आसा मन परव पुराण
रविवचा ॥ हवीवधा मत साहुक कीयो ॥ कहे उकति
कुरण आसट हुवा किन मुसल अरंभीयो ॥ १ ॥

दुहो:- अब मुसल प्रब प्रब अरवही ॥ कवित्त मति अनुसार ॥
तंबोदर हम ना हुवै ॥ लर लाले लागडे विचार ॥ १ ॥
जामे जदु कुल आवजो ॥ कहि यो व्यास विचारि ॥ पोहीज
करतर अरवही ॥ कहे निरखौं निरधार ॥ २ ॥ : —

वारता:- छत्तीस वरस पंडवे भारथ जीतने राज कीयो ॥
अटार मे छतीस छर सिंघासन दुल कौ दायौ वन कौ
राह लीयो वन जाय राजा गंधारी कुंत सलह देह
का त्याग कीयो ॥ जुज थिर उपरांत दुरव को जोर दाह
थी तो गयो थो तिण उपरै राजा कुं मरण सुख
: — : दीयो ॥ दुहो:— अहि हो सकरि निज अगम ॥ सुधयो
अरजन विचारि ॥ जादव आप सभ गलाहि ॥ किम सुर-
खग चारि ॥

छंद मोतीदाम!— तवै सम रावह व्यास श्रवंत ॥ अहं सत जादव
वंसह अंत ॥ सवंछया तापस जुध सकाम ॥ चरे चित
आयुरा जादव धांम ॥ किसवा मित्र लेख अकी वाच ॥
दुभरता नारद लोमह साच ॥ इतां के आदि रवेस
अनेक विध विध जांगय हौंन ववेक ॥ २ ॥ जग नह
हार विरवै नृप जीहि ॥ वर वीर थांन सुग्यान अदीव ॥
मिले जहं राज कुंवार समाज ॥ कीये तहां आया कौतिक
काज ॥ ३ ॥ उडवी लेख आय उंत ॥ मिले सब काल
हुवां उन मंत ॥ जदु पति पुत्र सुस्यां वजियार ॥ सह
वजि कन्या चारि सिंगारि ॥ ४ ॥ ग्रवा धन वधिह गोह

जहीर ॥ करि मुखे मंन चले सुन चोर ॥ तवो धल दाइ
दिख तीरहि ताल ॥ जहाँसे राम जपंत सबाल ॥९॥ कहो इह
क्रिया ग्रम्ह कर ॥ निज पुत्र पुत्रीय होइ निकहु ॥ दुवासा
तामह बैठ दुरंत ॥ कहयो इह होइ सबै तुम प्रत ॥ सुणे इह
बाइक बालक सतोक ॥ धापा दिग जादव नवलोक ॥
कहे दुरवासा अथह कथ ॥ सुणतां जादव वंस समथ ॥
तई उरि लोयण जरिबे हाथ लाइ ॥ जहाँसे राम कहंत निवाह ॥
रहे वपप चूरन कोजैय जछ ॥ पचारेय सागर तीर प्रतच्छ ॥
जदु कुल बिग्रह जाप अपार ॥ मले हथय मलेय भोम
संघारि ॥ उपनो घेरह ररे [illegible] ॥ प्रभासह खेत समेत
अजंत ॥८॥ रहयो कुल हेमह जोहि हलोक ॥ हलां
सुजि जीतले दुपार रोक ॥ जरा सुज बाणह मोलि
जिगार ॥ किधो [illegible] बेरे धरतार ॥१०॥ जदु
पति नेरे दवाम जिगार वहे उतपात दुबंत दयार ॥
समै निस काल पुरख सचाल ॥ कुआ मागा सत
रूप कराल ॥११॥ रतिरे कुताश्रम चोम छैतरव विथा
बिथ फैलत जिग वेरव ॥ नर नह चाल दहराल
निहंग ॥ प्रिथी चरव आतत हीण पतंग ॥१३॥ नीया
बिमचार महा चित तोम कुलटं सिवत नाह निकाम ॥
संख धु धुनि संभरि गीधव सोच परवां जाति
बोलत वांछी दपोच ॥१४॥ संचारीय संभरि गीधव
सोच परलां जाति बोलत वांछी दपोच ॥ देथा विथ
भारवे प रुच बिसत नहीं इक संजमा नपीय प्यार ॥ दिनां
नीय जावत काल नैरवाइ ॥१५॥ तीर्थे सजि चालि प्रभा सह
सह तीर ॥ उजासे आप पहोइ पचीर ॥ जदुपति बैठ
सबै जदु [illegible] दार ॥ पह चालि खेत प्रभास उदार ॥१६॥
विसनी पच्चंचक भोज कुबीर ॥ कुलो धूम जोगा
पाठ कहीर ॥ छवनह कोडि छलोल पदेह ॥ जहे सब
[illegible] पावत वेडा लेह ॥ प्रभासह खेत पधारि सप्रीत
कीया बत दान रहा जल कीत ॥१७॥ विप्रां चलनपवे

अजीत तिथारी ।। पुजे सिथा साज अनेक प्रकार ।। अदु पती
मांडे छत्री जात जीत ।। परा फ वैठ अप्यास अकोन ।।१९।। दुवो
मद नाड़ीप वैकुट बात ।। चला चल वैठ वधे कलचल.
कहुयो जद सातुक वैठा कोर ।। अहो रेहत ब्रहमा हूत
अमोर ।।१८।। तुमे निस कांकि रवनी छमकीया ।। सलै वक्र
छतीसीय नाड़ीप रवग ।। अहे पुत्र द्रोपद पुत्रीय अप्रछ ।।
परा क्रम हीया द्रुपा पर नछह ।।२०।। इसोवण माराथ मीन
दुरास ।। अहे नाजी धारीप जीवत अपाल ।। सले वित
कार लाजवे खोड़े ।। बले तुम अपाया मेह बहोडे ।।२१।।
कहुयो जद हरद कह वैठ केलर ।। अहे सम सातुक
तेरव अपथूर ।। बधे तुम कहु करो रवत कारन नरां
नर मारथ कोच निहार ।।२२।। मेरे तु रहे कथहे मुज
भूप रिदै कीयु आतम संपट रूप ।। तुमे नेह कीर
चले मन तेरव ।। विहड़े अतैर वधाइ वेसरव ।। वधै
वधु वाद सबेथा कवैठा ।। गह वर मोथा लगी लगा
मैठा ।। परगो परव वीर सधीर अथाल ।। कलोकाल
उठे छेदरवतु झील ।।२३।। रीति काती सातुक वेलसोच
वाटु थत मीयाह संरव सथोच ।। उठे जादि संवाह
नांम अमंग ।। जुड़े कजोधा महा रीधा जंग ।।२४।।
मिले मधु मारण वंस निमोह ।। लिरवे कुल लेरव
चिरवे नाड़े लोह ।। विभुजुज धानीय वीर वेसरव ।।
उठे नाड़े आवध लेरव अलेरव ।।२५।। तक सत मामां
नाम सकाम ।। दुरधर अरवे अवैण दुकांम ।। अहो तुम द्रोपद
पुत्रीय अप्रछ । वहे सुरव सेम कीप निज वछ ।।२६।। दुवै
सुथि वाइक भाम अहेत ।। रवरा रवर जादव वंस सुहेत ।।
छूटे धकर लोह उपटे छछोह ।। मिले जुद जोध मने अथ
मोह ।। रवको कर तार अपार अरवंड ।। डिगी कोरांग
रवगं ब्रहमंड ।। कटे कर वंस न वंस निकाम ।। हुवे पल रवंड
अरव तुम तुत तांम ।।२७।। जुडे भडनी जुडे लेग अपान ।।
महा वली मली अमकि महान ।। छपनह कोडे अपसार

छत्तीस ॥ समै तीहि चातत पाव अस्सी स ॥३०॥ कंवर छह उठत
वीर अनेक ॥ विचै वसचाल अवाल अनेक ॥ तुरे अर आवध
वाहत तेरव ॥ अह प्रत रारह लीध अपरेव ॥ वहे चाराल
हुता सुज वाच अहंकार जोधन जुध असाध ॥३१॥
मिटै अर जादव वंस समांण ॥ जुजा वे भारथ भोमभयांण
दुहो:- सुर पंडवां जिम कथा ॥ चार रखे नर वीर ॥ आवधीया जादव
अखिल ॥ वंसी अंगे अधीर ॥ हरि सब वंसह नास करि ॥
स्वारथ कहत सकाज ॥ जा पारथ ले उठा जरठ ॥ तीयध भला
वण लाज ॥२॥ द्वार कनुं गज पुर दिसी ॥ मन सुध भेज मुरारि
उधव फेर चलावियो ॥ दिस पित मात निहारि ॥३॥ उधव
पुरह पधारियै ॥ सवह व्रितंत सुणाइ ॥ सुनी गई कुल दोइ
लाखि ॥ चित अति दुखह अथाइ ॥४॥ सु सं संकर सपाकुल
मरण ॥ सायर तीर सहास ॥ तजियो जोगा रेभतन ॥ करिवा
अहि पुर वास ॥ छंद बे अखरी :—
:—: संकर खण तजि देह अगाम सति ॥ आया अहि पुर देव
अलोकत ॥ कर कौट कवा सग क्षालि क्रम ॥ त्रिखग त्रिपु
सवा वरणी तम ॥१॥ कुंजर कुं मद संख उतिम कहि ॥ पुंडरीक
चुहह पर सम गह ॥ क्रिथ सित प्रिसट अरि तन रक्तथ ॥
सुदाते अति सुदह मिल समरथ ॥२॥ पुर पुरब पुर चारण
दे अपदह ॥ आया सामां नाग अलो कह ॥ बतन पाताल पधार
महा बल ॥ मिलियो सम नामं तजि कस मल ॥३॥ पवनी
उतारि भार सेखह अति ॥ विधि विधि करि ग्रह आया वंछत ॥
दुहो:- सेख महा प्रत संभले ॥ जदु पंतो जग जीत ॥ जर व्याधह
हथां जरठ ॥ तजियो देह प्रवीत ॥ पारथ इतह पधारिया ॥ द्वारा
मती दुगांम ॥ मातुल सेती मिल कहयो ॥ परसा परस विरांम
आनंक दुंदुभी अरखीयो ॥ सम अरिजन सुविचार ॥ सगरह वंस
प्रजालियो ॥ कवितह भाय उदार ॥४॥ तिमह गंधारी कोचता ॥
अपर पुर भाला भाय ॥ वंसा नास विचारि हरि ॥ पुहता धांम
निपाय ॥४॥ अरिजन लै त्रिय वास अब ॥ जाई देहु प्रसथान ॥
सायर नयर लवो लही ॥ दिन सातह मे आंन ॥५॥ प्रातह कीले

काल लोरनि ॥ ध्यान क दुरी चाहि ॥ तजि देहा रंक मुद्द विरचै ॥
गाथा से चत्र बाह ॥६॥ परिजन मातुल देह दाहि ॥ ताहा गमत
सुध्यार ॥ विसनी संपात्क की विवध्य ॥ ले चलि यो निरधार ॥ ७ ॥
अरि जन चालियो दध उलटि ॥ बोले नगर नसेरन ॥ मातमीया
दुख लेह बहे ॥ वज्र नाभ बसेरव ॥ ८ ॥ :— कवित :—

:—: परिजन पाते मन दुखित ॥ लेह रेज बाल समत्थह ॥ उदु
प्रसन चालियो ॥ गहे गंडी धन हत्थह ॥ मिलि का बातिह समै
पांण पथह पवरोध्ये ॥ क्रम सुरा तन कले ॥ जोध्यो कोइ निकज
पजोध्ये ॥ धन लुटि विभछी गंज रिण ॥ गोपी गह विह वल करे ॥
पति पधांम पजोगी लुकरीया ॥ कथा निज विद पावरे ॥१॥
सेरव मीया धन सकल ॥ पाथ मद लीज सुपत्थह ॥ इंद प्रसन्नह
पाविया ॥ लीयां वज्र नाभ सुसत्थह ॥ पांज हेत पभ सेरव ॥
करे कपि धुज सकारण ॥ वज्र नाभ बुधि विमल ॥ धाधे
धानक पाणंद घण ॥ वे मधी प्रीत निर बाह बह ॥ जदुपती
कारिज करे ॥ गज पुरह राज पाती हित निगुक्ति ॥ दुख दाकत
सुख संभरे ॥२॥

दुहो :— पट रखी पाहु प्रगार ॥ रुखमण पादि पोरह ॥ गीतव कारण
विसम गाति ॥ हेमाचल चित देह ॥१॥ काल पगांम निकाम चित ॥
किसन पंते वर पाय ॥ उग्र तपस्या पादरी ॥ चित कित
धांम लगाय ॥१॥ :— कवित :—

:—: कपि धुज नत लख विकल ॥ भारत चित चल विरधाता ॥
कहेया केम मन कठण ॥ रह पाते भरम पधाता ॥ समरि
पराजै थई ॥ कना उपमानह पायो ॥ का पायां जरत करे ॥
दान करम को थापो ॥ गंडीव धान चित मान धरि ॥ इम
सम भास उचारियो ॥ कित कठण जदु कुल हथ करे ॥ सोमह
धांम पधारियो ॥१॥ जिण धुर गज पुर विरचै ॥ भेज पकरन
सकारण ॥ पाप दमा पापरा ॥ हमह गोपिया पांणद जण ॥ जिण
लोरवा ग्रह विरवम ॥ पागेन पाग्या उतारे ॥ पंचाली जोहि प्राट
लोज रखी निर धारे ॥ भीखम द्रोण कनहण कठण ॥ जोहि दाना
धाना हीणो ॥ हम हेत दजोधण कारि हितह ॥ जैतवजाई पारणो ॥

दुहो:— सो हरि अकिन अंसोच सदी॥ करी निरधे निर धार॥
भारथ ग्रंथ विचारने॥ जो निज धाम उद्धार॥१॥

—:॥इति मूसल पर्व॥:—
॥सम्पूर्ण॥

८

—:॥प्रस्थान पर्व॥:—

दुहो:— अब प्रस्थानह आखिहूं॥ सतरह मो प्रब बोध।
सो कर कृपा चतानही॥ लंबोदर निर बोध॥१॥
कवित:— जनमेजे पूछियो॥ व्यास सम फेर विचारे॥ गये
धाम श्री किसन॥ अजन की मनह विचारे॥ व्यास सुवन
जद विवर॥ कहो सम राज सकारण॥ गीर धारी दुख गहन॥
राज तजे पो निरधारण॥ अभरेख परि खत कमल क्री॥
जजु भलाके तज सब॥ तत मत गहे सुरव राज तज्ञि॥
प्रस्थानह लयो प्रब॥१॥
वारता:— पांचु ही भाई द्रोपदी सहित महा पंथ कुं चाल्या॥ परीखत
कुं तो राज का अभरेख करके जजु कै सोतै चाल्या॥ परीखत
कुं हेमा चल की तरफ जातां श्रम राजा स्वान का रुप करिके
भेला थया॥ जुज धिर का मत का फेर आराह जणाया॥ उतर
कुं चाल के पिछम का राह लीच्या॥ पिछम थी दखण
कुं पयाण कीच्या॥ दखण थी पुरव की तरफ आया॥ पुरव
थी फिर उतर कुं चालण का उदेस जणाया॥ पर दखण
तो च्यार तरफ री संपुरण कीची॥ फेर के पंच ही भायां
हेमा चल की वाट लीची॥ हेम के राह जातां॥ पंचाली का
तो व वाका थया॥ राज कुं तो नजीक थाइ कै भीम करुणा
करि कै सुणाया॥ राजा कह्यो इस मत बिच मां दुबिधा
राखो॥ अरि जन कुं मरम की बात आदि अंत काई ले कै

सदा ही करणी ॥१॥ आगै आतां सहदेव का ही विछोहा थया ॥
उभी भीम राजा कुं सुणाया ॥ तद कह्यो इण नु समझ का गरब
थाया ॥ इ तिण थी पैहलां ही रहिगया ॥ भावी जोग कै जथा ॥
ता आगै निकुल रही आरन आयां बीच गिर कै जमी जाय परा ॥
विकोदर फेर राजा सूं मालिम करा ॥ जुजथिर कह्यो नुकुल
कै रूप का गरब बहुत तिण दोरव करके आयां कुं छोड़ जमी
जाय थाया ॥ आगै अरजन ही जा मुवां की गति थाया ॥ भीम
फेर कै राजा कुं अरथ का ही विरतंत सुणाया ॥ अजात सत्र
कह्यो इण नु ही धनुर विद्या का बहत ही गरब थाया ॥ तेण
दोरव थी हिमाचल की उपकंठ बसाया ॥ ता आगै विकोदर ही
तन का त्याग कीया ॥ जुजथिर तो मन मैं बाल का गरब मान
लीया ॥ राजा आयुं का निमंत पेरवि कै सरग का मारग जोया
स्वान का संग थी कुल ही मन मान हुवा अछोया ॥ सरग थी
इंद राजा कुं आनन्द सुण कै सामां आया ॥ आपका मित
करि समीपी जांण + हेत अती ही जणाया ॥ विमाण बैसण
का हुकम दीना ॥ स्वान का तो सत कितमन थी त्याग कीना ॥
दोहा:- इम जद राजन अरखीये ॥ सुणै बा सब सुविचार ॥ करे विछोहे
नत केसु सनर स्वानह सुविचार ॥ कीहिं कुत करि आवै कह्यो
तूं कर सरग मझार ॥२॥ जिहिं दिं दिवटा भोजन भयो ॥ हेत
अप्रीत अकाज ॥ इन भरव फिर साहत नही ॥ जोये होय समाज
गाथा:- जुजथिर कह्यो जियारे ॥ सम सत कुतह तिथति विचारे ॥ बारह
संगी विछोहे ॥ करणो नही उचित हित आकम ॥ ॥ सत पंडह मा
संगे ॥ मित्रह जिनह सतह दुरवसमत ॥ सो तुम नीत सुजाणो
कुकर तजाहि हेम कि कित कहै साति कत ॥३॥ इस बंधव आम
विचारे ॥ मंजा घात समह पह मानत ॥ जुजथिर कहत जियारं
सरणाइ तजणो हित संभर ॥ धमजद सुतह सधीरो ॥ धरमा मग
केरवि धू चरण ॥ धरी जांण सुधा मै ॥ बसु ची गतीहि मिले
—! आकुत ॥४॥ दुहा:- धम सम राज अपोहे रथ ॥ तो धग मगह
सुभाइ ॥ मिलिया तहां सधीर मन ॥ नरद परबत आइ ॥ देवरिषी
मत करिये ॥ जुज थिर इंत जियार ॥ नर पाती नांहिन निमचीयो करता

॥ इति प्रस्थान पर्व ॥ संपूर्ण

:॥ सुर्गा रोहण - पर्व ॥:

दुहो :— स्वर्गा रोहण पर्व सदिस ॥ पठर सो उदार ॥ कवि भारथ पूरण :— करण ॥ चरियो मन निरधार ॥१॥ :कवित: हस्तिना पुर मांहे आय धूम राव अजाणत ॥ दुरजोधन देखियो महल रोनहद दुरुकत ॥ छत्र चामर संजु गाते ॥ माल चरीयो मिलाहल ॥ इन इन ऊरवण अमल ॥ तनह सोभत भाते उजल ॥ दुरासण सुकन विकरण दुसासन ॥ सम सुरेसर नैरस तिह ॥ सुर राज समाजह भारखियो ॥ भाती जुजठिर लग्गो असह ॥१॥ प्रजला सत्त आकुले निरख निज चरव सजोधन ॥ अजुबद करण संभारि ॥ चले निरधार रहण वन तरना गृह विरव विलच्छ ॥ धीर भोगा चित चलावे ॥ कतियो धरम मग तजे ॥ वीर नरख उ हत भोछव ॥ निज भीम धान मनह सत्त पेरवने ॥ उतारे राजन अतह ॥ क्रन अजन भीम हेतह करी ॥ इन लोकह देख सामह ॥२॥ देव रखो नारद ॥ तई धूम राव मिले तत ॥ कहो साती विरतंत ॥ लहे पितह भाती अपारती ॥ दुरजोधन क्रम दुसार ॥ काजि हथवाद विचारे ॥ जुबद करण अजीत ॥ सोथ जीता निरधारे ॥ इह देरव मक्र सिर उधारे ॥ पापी गत पावन अनर ॥ सिर सार पदारां साहेलं धयो अदोरवी छात चर ॥३॥ किंत सरधा यह कियो ॥ पटर सरधा कित कुनर दुवधा चारी सहस ॥ वस वल नांहिन आमरा पुर ॥ सेह सजोधन अधम ॥ सार धारां तन गाले ॥ वीर चित चार तो हुवो निह पाप सकाले ॥ कुल जुग धंस कुल करन करे ॥ हरि इच्छा पुरण सरक ॥ भार थ कथ रखे समल ॥ हुवो विरदां अपावरन ॥४॥

दुहो :— राजन सम नारद रहत ॥ कहत धका सकाम ॥ अमरां कृतह आविसो ॥ भाते उतम धाम ॥१॥ तीहि राजन डर डर रहे ॥ लेगो नरक निवास ॥ दिरव काया कंचन दुरद ॥ कामो सहत उदास ॥२॥ छिम विसदा तह सुतक कृत ॥ कुंवरन पंरव कु भरत ॥ दुरमंचह ह आवन दुसह ॥ नीचन करत निवास ॥१॥ सुहरत मातह नृप तहां रहियो अतीते अचीत ॥ आगा धम तह

अधर्म गम मेटण अातम अचारी ॥४॥ सुर भाते सब देवन सहित ॥
आवे तहां आनंद ॥ दीसही जाचीना दुरू ॥ गामियो आली राहु ॥५॥
कवित:— तांम दुंद सुरि घेंद रही धरम राव सरस रूप ॥ तम छोगह प्रत हजे ॥
अरत पविरो विच भारथ ॥ जेण दीरघ आपना ॥ दिट नरहरू जुम
दिनी ॥ अवह सुकित आवणा ॥ जुगती लीजै निजतनी ॥ पुनि पुरख
पहल कायह प्रकार ॥ जथा परायजगाइयै ॥ सब दाह हरे अधही
अदस ॥ अत ही सुरवन अघाइयै ॥१॥ मान घात जजात ॥ राव हारि
चंद उमी नर ॥ सिमर मोर संतान ॥ बाले अंबरीखह अंतर ॥
सिगर भागीरथ मिसर ॥ सगर दलीप सकरण ॥ इतां आदि इन
रोनह ॥ हुवा नर भाते धरम चरण ॥ साजेम सरग बसि कित
अलुत भव बंधण काटे समल ॥ धरम राव मह्या मन मोद धरि ॥
सुख भुगतह दुख दाही सहेल ॥:~
दोहो:~ सरगह जंग मांस दस ॥ कारे मंजन कुर राज ॥ फेर सग धारियो
रुक वांनक हित काज ॥१॥ पै तहां दीठा जदुपती ॥ अरजन भीम
अगाधि ॥ सहदेवह निकुल सहत ॥ सम किसना आसाध ॥ केन तहां
दीठे हित सहत ॥ धरम सुत चखिन सधीर ॥ आवे मिलिया
अनुक्रमे ॥ सह बंधव नर वीर ॥३॥ :~ छंद बे अखरी :~
हरि इछया भारथ मिड़ि ॥ अनहत अपा धरा सह जोधा प्रलोकता ॥
आणपा अंसाइ रूप कारी ॥ जारा मिलिया जुध जुवारी ॥१॥ दानी
सुरह भीम पवनह दिस अमनी जमु मिले गति वारस ॥ धरम सुत
चरम विदुर जम धू धार ॥ किसना तिधरी मिले भरवे उर ॥२॥
धृष्टह द्वाणीन द्रोण सुर गुर चित ॥ मिलियो भीसम वासुवे
उनमत ॥ अंच कवि सनि भौज अगवान ॥ वेनुवां धाया मिले
विरपाता ॥३॥ चित ब्रहमां मरुतां मिलि सुध चित जाफिनी हित
कापुर हित संजुत ॥ वैराटह द्रोपद उतर वंदि ॥ सरव ~~[illegible]~~
सिखंड सोम भुरे सुर ॥ भा रसिल सल चित्रह केत सम नर
सुर ॥ तिसत अकुर संब भोगह निज ॥ उग्रसेन कुदह विदुरथ
अज ॥४॥ रे सब वसदेवांम मि मलि अती ॥ संसो अंस मिले
तोजि अकृत ॥ विर भा नाम चंद पुत्रह कहि ॥ अबतरियो अरिजन
गह आछह ॥५॥ अभिमन नाम धरि उतली बाल ॥ आदि व मि

मिलिये मनि उजल ।। हरजी धान भा बंध दुरा चर ।। जस चांमह मिलियात जिगत जर ।।६।। कीति वा सिक मिल औघ छांडे वह ।। सोनह सहस थई अछुरी सह ।। के किंनर जिख ग्रंथ केक अह ।। मिलिया अपंस अपंस सम जह ।। :— दुहो :— अाहे जिग करे पुरण अधर्म जनमेजो अाहि जाहि ।। हुवो निपा यह आपथी ।। सुणि भारथ निरधार ।।७।। सुणि सूतन राजन कत सुभ ।। पंडव इतहास प्रीत ।। अमहक करम उधारिनै ।। चित चाहत पात सीत ।। सुर बरते भारथ भयो ।। पुरण प्रथी प्रमांण ।। अठरह परब उपाइनै कथियो व्यासह कांण ।।२।। — वारता :— एक लाख साठ हजार भारथ थाप्या ।। तेह मां तीस हजार तो देव लोक रखाया ।। पनरै तो पितर लोक ही चाल्या ।। चवदै हजार अहि लोक (नाग लोक) मा वसाया ।। बाकी का एक लाख मृत लोक मे रह्या ।। मोटे मोटे रिखे सुरां अनुक्रमे संख्या का प्रमाण कह्या ।। :— कवित :— देव लोक नारद करत भारथ कथ आदर ।। देवल असित दयाल ।। ~~कथ~~ कथत पित लोक निवाहत अाहि थांन कहीत अतही ।। सुक जि सुरवा सुणावत ।। वैसंपाइन विवध ।। सूत मृत लोक कहावत ।। जिहुं तेह तेह रवत रवाड़ची ।। बची कीत नीतह विवध ।। भारह पसाइ भारथ विरख ।। पाइ रची यां सार सिध ।।१।। दुज मुख भारथ दुरस ।। बरण त्रिहु सुणत बिचण ।। हुवे नीपाप निरोरव ।। लहण पंचुत आणंद घण ।। चतुर भी लोकह चवत ।। प्रगट उतिम पद पावत ।। इखर प्रगट इथ ।। जपत सोइ सोइ नर कनआवत ।। इम जुगत रह भारथ सुरथ ।। साती करि सवण ग्रहीजीयै ।। कवि सीह कहत सुकरित मेर । जनम सफल करि लीजीयै ।।२।।

दुहो :— मुख हजार वार मन ।। चाहत लोक सचाल ।। उचारे सिवादन भाइरे ।। प्यानी रुप ही काल ।। :— छंद भुजंगी :— कथ भारथ भारं अछेगो ।। कही व्यास अथा कवि जीह जगी ।। चुर चारि लंबोदर मन नमे भान ।। इह पुज देवी गुणं ज्ञान अपान ।।१।। रिवं लेरव वाणी अहो देव संत ।। निज कीध सामोद अंत ।। भासा सचाही महा मधुमा हंस चारे मनांणी ।। नमे सीह भासा सचाही महा ... आरवा कवि सुभ वांणी ।।३।। अहो देव अनादि तोरवे अपाता ।

रीठ चीत कीधा कवि कुधिर दाता ॥ प्रतुसिंघ साहि कुंभेसं प्रकारं ॥
अजै कीधा राजी महा जोध धारां ॥ जिखां ग्रिंनरां गंध्रवां देव
जांणे ॥ विद्या विद्या साहेत कीधा विवांणे ॥ इतां प्रागि दे राज रीस्वि
प्रमाहं ॥ चवै कीत प्रंत कीयं रहित चाहं ॥ ५॥ सवे वांणि प्रमाण धाजन
संत ॥ कीया परख पाती कथै जीव छित ॥ दूत्यां कांणि वापार काहं
दुग्गांम ॥ कीयौ कवि उद्दिम भारत्त सकामं ॥ ६॥ जदु राय इच्या सवी भ्रम
जांणे ॥ कितै धात प्राख्यात नीरांम विनांणे ॥ कही कीर्त व्यासं प्रमोद
सुध कापा ॥ वलै जेण प्रोते चवै कवि वापा ॥ ७॥ प्रवं आदि प्रबं
वदे वांण प्रद्धे ॥ पतं जोण ने पत प्रथी प्रतद्धे ॥ दूजा दुस्तरो प्रब
वंसां विछोड़ी ॥ चारे स्वित जे राज ॥ दजोण प्रोढी ॥ ८॥ वनं तीसरो
प्रब नंने विख्याता ॥ कहयौ स्वीह कवि फल हेत दाता ॥ जिये माहि
सूतेस जोगंग जुहारी ॥ चवे वांण राजी कियो चतुं धारी ॥ महा नाम
वैराट चौथो प्रमारु ॥ दूजां धारतै तन राखं प्रद्धारू ॥ वदे
नीच जे कीच भीमं खवेचं ॥ खवी वार द्रोपद पुत्री सखेचं ॥ १०॥
बतं पंचमो प्रब उद्दम तारन ॥ किया निधिजोमे दुवो वार कारन ॥
छठो प्रब भीम भीखम सछोड़ी ॥ मिले जोध जे मांहि लोहं
निमोही ॥ ११॥ सती सातमो प्रब द्रोण सचाल ॥ दुवो समिजै घात
जै माहि काल ॥ प्रोते आठमो प्रब करन प्रसाखी ॥ वरा दुरजे
पंथ हूं चाल वाखी ॥ १२॥ निधं नाथ सरण्या महा प्रब नेक ॥
विछी कीधा मंडेस जोने जसेकं ॥ गदा प्रब दिमाद नामी नांमी गहनं ॥
तिये मांहि भीम दुरं रावहनं दवा दस मो प्रब स्त्री सपूरसं ॥ वळो
राज लोकं जेथ सोक वसं ॥ नौमो दसमो प्रब सापंत लेखी ॥
वधे नीत भीखंम भारवी वसेखी ॥ हये मेद विख्यात तो प्रबतेकं ॥
कीया नृप जे मांहि जित अनेकं ॥ १४॥ सीधं जोड़ प्रसवी प्रबप्रसाहे ॥
महा जोध दीठा जिय नीर माहे ॥ स्वितं स्वोस सो प्रब पंछ प्रवेसं
वधे जा दसं जेठ जेथा विसेसं ॥ १५॥ प्रस्थान सतो दसो प्रब
पूरं ॥ गले पड़ जे माहि हेमं गरूर ॥ अगा रोहु प्रठार मो प्रब सतं ॥
निज धांन जे मधि लेखा लिपतं ॥ १६॥ किया व्यास रोता सबै सुध
करी ॥ दुरसा नरवा सीहु पंछा मुरारी ॥ सवी खत मारग जै
जांण खोड़े ॥ तिज वेद विभाग विप्रांक जोड़े ॥ १७॥ गुणं चार धारा

सुणे जेम ग्राही॥ चवे भारथ भारथ जेहंगचाही॥ सवे ग्रव जो अनुक्रमे स सोता॥ निज चित लोए सुणे निजनोता॥२॥ कहे वहेक ह्या उवे सुच्छ कथा॥ उभो भव पामे जिके लोक भाषा॥ जरन प्रविन्ना कल भारथ जांणे॥ कही सीह सु सादुं कियो चक्र पाणे॥२०॥

कवित्त:- सतरमे सामंत॥ वरस ने उवे वसे खग॥ कविसुर करवे करी कथ भारथ सम्पूर्ण॥ वैसाखह वदि विवध॥ तिथ रक्रम अलोकत॥ भोम वार निरधार॥ रत रीत वरस्त चाहत॥ उतरांण भांण वरतत प्रमाण॥ दिसा दिखणाद विचारि उरी॥ कवि सीह परम महिमा कही॥ुर पंच क्रम जुत उकर॥१॥ रामायण उपरा॥ कवि माघ वरा सो कीप फिर नरहर कारहद॥ वाणि प्रवनार॥ चित लोप भगवंत सिर विचारि॥ कीधा नरन रह रसह॥ कवि सीह जिम करी॥ वले भाषा भारथह मति सारि विचार कुल करम॥ तन प्रमाद प्रत जीपो॥ निस दिवस वरखवीप चित नृमल॥ जीह उं गाज सर जीपो॥ महा कथ भारथ सुणे सुज रची समंगह॥ केरे सार वापारा प्रजैन लोहै मारे जगह॥ सुकवि श्रवण रह सुणे॥ भाषखट भेद सजांणे॥ सोतार वक तारत कल॥ चारे चारे निर वांणे॥ चत्र वरण वांणी भाखा चवे॥ जीवन मुक्त रस चित लोहे चत्र वांणी खांणी आश्रम चवह॥ कवि सीह कथ संभरि कहै॥३॥ इदे प्रसंत प्रारंभ॥ कीधा भारथसु कथह॥ केर रज सराहै॥ कव मति चहि समत्थह॥ जोधा थांन सामान॥ मास वंचह वन कथे॥ वैराट्ह ग्रव क्रिपो॥ वाम स्याही पार थे॥ अहि सुधा वाद ग्रव अवतार॥ वसि मधे धार सुजरी॥ कवि सीह करत पुरण क्रिया॥ लेवा प्रमा निरंतरी॥४॥

दुहो:- भारथ प्रारंभियो मति माफक कवि सीह॥ अरथह कुल अति चित विमल॥ सुणिजे श्रवणे निस दीह॥१॥ :- वारता:-

वारता:- कविश्वर कवि सुर भारथ की भाषा को प्रारंभ तो मालाविलावत कै अलेप देली बीच कीधा॥ ता पाछे महीना दोइ नैरां होइं कै राव जोध पुर को राह लीधा॥ जन मास तो मंडोवर कै नाथ डेरा कीहुं सरा सू भी कलस भारथ हीजटारचा॥ भारी

सुद बीज के दीह ऋांच कारा वध सुके थांनक पधारया ॥ चैत सुद दसमी ताइ तो नर समंद रा छात मतलू हीज रहया ॥ ता पाछे ऊवि सरुं कै माग सेर बिलंद की सेना रै आगा गुजर चार रा राह रहया ॥ अग चत्र मासा तो मारग हीज बीता ॥ आसोज सुदी दसमी के दिन सेर बिलंद रा दल रा बल जीता ॥ ता पाछे पोस सुद महाराज राजे सुर राहर दाखल हुवा ॥ उमरावां कुं डेरां रुं तज बीज बताई के जुवा जुवा ॥ तदै कवे सुर हर सींग सुर सींघोत कै मेलप पत ही आरंभ पाया ॥ ग्रंथी रा पंचक हर किपक करवा कुं हुकम हर फ्रमाया ॥ व तद कुछ मापक भाषा कीरे के जथा जोग आछोरे ही परब सम्पूर्ण कीया ॥

कवित्त:- ३ परम देव पुजीपै पुरख निज चाहत पावत ॥ सिव रीत सुध सेवीयां ॥ अहो नर चलत आवत ॥ सुन राठी सेविया दीह दीह आनंद तजावे ॥ तिवतै अमो नर नाथ सातै कविता सब कारिज भयो ॥ पर पुर प्रगट व्यासह किया ॥ भारत भाषा नीर्मियो ॥ १॥ तर मेलप सुरव मिलन जिस्ता मेलपतय नांहिन ॥ जल मेलप मल चारत ॥ नतह पुरखां चित चाहिन ॥ पंडित मेलप प्रगटि महा विद्या पन पावत ॥ सत पुरखां संग कीया प्रीत हरि हुंत लगावत ॥ माहीमा सम जोदव त्रिमल ॥ देखत कवन आंण दीयो ॥ कवि सीह हठी मेलप करे ॥ भाषा ग्रंथ पारह भयो ॥ २॥

दुहो:- सेवा आमा नरेस री ॥ मेलप हठी सुरंद ॥ कवि भाषा भारथ कियो ॥ आग्या प्रसाद ग्रंद ॥ १॥ सुवणे सो हित सुध सुणे ॥ प्रातह पाठ प्रमांण ॥ करे जिके निहचे करे पहुचै पद निरवांण ॥ २॥

—: इति :—

श्री भाषा भारथ सम्पूर्ण ॥ संवत १८८३ रा साके १६८८ राजेठ मासे सुकल पखे तिथौ दसम्यां पां गुर वासे रेजां उदे पुर मध्ये राज श्री ठाकुरां आदर श्री रकिसन जी

पठनार्थ इदं पुस्तकं जाती ब्राह्मण दसोरा भट मोजीरामेण
लीखवंत इदं पुस्तकं शुभ वतु कल्याण मस्तु ॥ श्री राम राम
राम राम ॥

दुहा:— जब लग मेरु इपड गहै ॥ तब लग ससि इपर सूर ॥
जब लग इण पोथी सदा ॥ रहजो गुण भरपूर ॥१॥

॥ ग्रंथ संख्या १२६०० ॥ श्रीरस्तु कल्याणमस्तु ॥

॥ श्री श्री श्री श्री ॥

[illegible]
24.6.47.
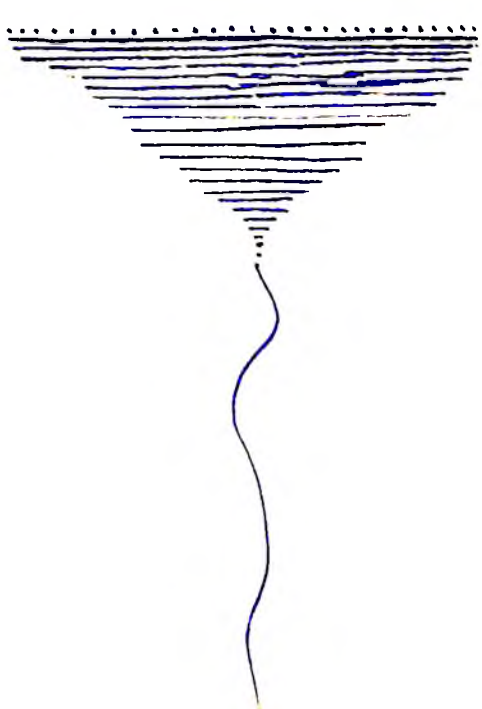
॥ समाप्त ॥